

IN THE LINE OF FIRE  
MIRACLES AMIDST RUINS.



2025

GAZA BIENNALE

GREEK PAVILION

**GAZA BIENNALE 2025**

THE GREEK PAVILION

CONTENTS

CURATORS' ESSAYS

- 4 -

ARTISTS

- 48 -

CURRICULA VITAE

- 170 -

POEMS FROM GAZA  
BY IBRAHIM AL SULTAN

- 208 -

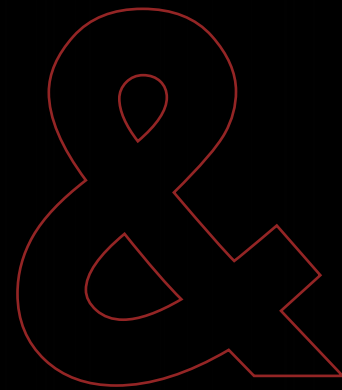
THANKS

- 228 -

# CURATORS' ESSAYS

*BY*

**FAYE TZANETOULAKOU**



**DIMITRIS SARAFIANOS**

## BY DIMITRIS SARAFIANOS

*Director of Lofos Art Project*

### PROLOGUE

If it is barbaric to make art after the Genocide, as Adorno pointed out<sup>1</sup>, what does it mean to make art during the Genocide? How to render the experience of horror in artistic terms? What fragments of civilization can survive in a concentration camp, not bigger than the island of Andros, where even the rudiments of living are systematically destroyed, by state-of-the-art weapons: housing, food, water, health care, the future, all the hopes that are killed with every murdered child?

In these circumstances, survival, let alone artistic creation, looks like an act of supreme resistance. Palestinian artists create a breach through the horror to bring forward not just the trauma, but also the ultimate truth, that creation overcomes all obstacles, breaks all mechanisms of annihilation and rips apart any form of false representation, of mere artistic entertainment, frivolity or commercial transaction. This art, inspired by the most profound, the most elevated vision of humanity, springs from Palestinian artists' guts. It is the product of the insuppressible need for artistic expression, and was performed on fallen walls, painted on awnings, with charcoal made from ashes.

<sup>1</sup> «Kulturkritik und Gesellschaft», (1949) in *Prismen*, Suhrkamp Ver (1955), p.11. For more on the meaning of barbarism of civilization after Auschwitz see T. Adorno, *Negative Dialectics* (1966), ed. Routledge 1990, p. 361 sqq., particularly 367.

Art that is born in death tramples over death and vividly conjures before our eyes the eyes of the children of Gaza, this moral beacon of humanity that our generation is compelled to contend with: shall we respond to their demand for a life of dignity or shall we remain impassive in the name of cynicism, resignation or self-interest?

In honouring the values and vision of Panos Sarafianos and Mary Hatzinikoli, Lofos could not but confront this question. It is our honour to present the Gaza Biennale in Greece and to contribute, as the Greek Pavilion, to spreading the message to the world that Gaza today has the ability to bring

together all those who still believe in humanity wherever they may be. If ideals are to survive, if art worthy of its name can still exist, the conditions that allow such crimes must be undone. For, if History has anything to teach us, is that the same system that generates the banality of Evil, colonialism and technocratic totalitarian logic, can turn the victims of yesterday into aggressors<sup>2</sup>. And Art has a great part to play in this necessary process of resistance and subversion.

<sup>2</sup> Who, moreover, will not merely obey orders thoughtlessly in the context of a bureaucratic mechanism, as interpreted by Arendt ("Eichmann in Jerusalem. A Report on the banality of evil", ed. Nissides 2009) but will enthusiastically apply – and on occasion exceed them – without this conduct ceasing to be routine and matter-of-fact as much as hanging out with friends, automatic gun hanging from the shoulder.

# ΤΟΥ ΔΗΜΗΤΡΗ ΣΑΡΑΦΙΑΝΟΥ

Διευθυντής του Λόφος Art Project

## ΠΡΟΛΟΓΟΣ

Αν, όπως επεσήμανε ο Αντόρνο<sup>1</sup>, είναι βάρβαρο να κάνεις τέχνη μετά τη Γενοκτονία, τι σημαίνει να κάνεις τέχνη μέσα στη Γενοκτονία; Πώς να αποδοθεί καλλιτεχνικά η βιωμένη φρίκη; Ποια θραύσματα πολιτισμού μπορούν να επιζήσουν μέσα σε ένα μεγάλο στρατόπεδο συγκέντρωσης (όχι μεγαλύτερο από την Άνδρο), όπου συστηματικά και με όπλα υψηλής τεχνολογίας καταστρέφονται οι στοιχειώδεις δυνατότητες διαβίωσης: η στέγη, το φαΐ, το νερό, η περίθαλψη, το μέλλον, η ελπίδα που σκοτώνεται μαζί με κάθε δολοφονημένο παιδί;

Σε αυτές τις συνθήκες και μόνο η επιβίωση, πόσο μάλλον η δημιουργία, μοιάζει με πράξη ύψιστης αντίστασης. Και οι Παλαιστίνιοι καλλιτέχνες δημιουργούν μια ρωγμή μέσα στη φρίκη για να μεταφέρουν στα σπίτια μας όχι μόνο το τραύμα, αλλά και την υπέρτατη αλήθεια, ότι η δημιουργία υπερβαίνει κάθε εμπόδιο, σπάει κάθε μηχανισμό εξόντωσης και καταλύει κάθε μορφή ψευδούς αναπαράστασης, καλλιτεχνικής διασκέδασης, ξεγνοιασιάς και εμπορικής συναλλαγής. Γιατί η τέχνη αυτή, διαπνεόμενη από τα πιο βαθιά, από τα πιο υψηλά οράματα της ανθρωπιάς, έχει βγει μέσα από τα σπλάχνα των Παλαιστίνιων καλλιτεχνών, λόγω της ακατάβλητης ανάγκης δημιουργικής έκφρασης κι έχει φτιαχτεί πάνω στους γκρεμισμένους τοίχους, έχει ζωγραφιστεί πάνω σε τέντες, με κάρβουνα από τα αποκαΐδια.

Η τέχνη που γεννιέται μέσα στο θάνατο ποδοπατά τον θάνατο και φέρνει ολόζώντανα μπροστά μας τα μάτια των παιδιών της Γάζας, αυτόν τον ηθικό φάρο της ανθρωπότητας, με τον οποίο έχει να αναμετρηθεί η γενιά μας: θα ανταποκριθούμε στο αίτημά τους να ζήσουν με αξιοπρέπεια ή θα παραμείνουμε απαθείς στο όνομα του κυνισμού, της παραίτησης ή όποιου ατομικού, οικονομικού ή άλλου συμφέροντος; Ο Λόφος, τιμώντας τις αξίες και τα οράματα του Πάνου Σαραφιανού και της Μαίρης Χατζηνικολή, δεν θα μπορούσε να μην αναμετρηθεί με αυτό το ερώτημα. Είναι λοιπόν τιμή μας να παρουσιάσουμε στην Ελλάδα την Μπιενάλε της Γάζας και να συμβάλλουμε, ως το ελληνικό της περίπτερο, στην παγκόσμια διά-

δοση του μηνύματος ότι η Γάζα έχει σήμερα την ικανότητα να γεφυρώνει όλους εκείνους που πιστεύουν ακόμα στην ανθρωπιά, όπου κι αν βρίσκονται. Για να μπορούν να επιζήσουν τα ιδανικά, για να μπορεί ακόμα να υπάρχει τέχνη άξια του ονόματός της, οι συνθήκες που επιτρέπουν την διάπραξη τέτοιων εγκλημάτων πρέπει να καταστραφούν. Γιατί αν κάτι έχει να μας διδάξει η Ιστορία είναι ότι μέσα στα πλαίσια του ίδιου συστήματος που παράγει την κοινοτοπία του Κακού, την αποικιοκρατία και την τεχνοκρατική ολοκληρωτική λογική, μπορεί ακόμα και το χθεσινό θύμα να μετατραπεί σε θύτη<sup>2</sup>. Και η Τέχνη έχει μεγάλο ρόλο να διαδραματίσει σε αυτή την απαραίτητη διαδικασία αντίστασης και ανατροπής.

<sup>1</sup> «Kulturkritik und Gesellschaft», (1949) in *Prismen*, Suhrkamp Ver (1955), σ.11. Βλ. αναλυτικότερα για το νόημα της βαρβαρότητας του πολιτισμού μετά το Άουσβιτς, T.Adorno, *Negative Dialectics* (1966), ed. Routledge 1990 σ. 361 επ., ιδίως 367

<sup>2</sup> που μάλιστα δεν θα ακολουθεί άβουλα διαταγές μέσα στα πλαίσια ενός γραφειοκρατικού μηχανισμού, όπως το ερμήνευε η Άρεντ («Ο Άιχμαν στην Ιερουσαλήμ. Μια έκθεση για την κοινοτοπία του κακού» εκδ. Νησίδες 2009), αλλά θα τις εφαρμόζει -και ενίοτε θα τις υπερβαίνει- με ενθουσιασμό, χωρίς να παύει αυτή η συμπεριφορά να είναι καθημερινή και κοινότοπη, όσο και μια βόλτα με φίλους με το αυτόματο όπλο κρεμασμένο στον ώμο.

## BY DIMITRIS SARAFIANOS

Director of Lofos Art Project

اذامف (١) اون رودا ى عدا امك أي جمه وا أي رب رب ألم ع ربت عي عي عام جلا قدابال دي غب ين فلما جاتن ال انك ول نم بعزلنا شادح او بر اجت روصن فيكو؟ ةيش حولا قدابال هذه قرتف لال خ ين فلما ريب عتلا اذ ين عي؟ فلما لال خ

هيف، سور دن قري زج نم أم جح رغصا، عي عام ج لاقن عا ركس عم ي ف ش عت، ةر دم قراض ح ايا قبل فيك عي جمه لم لكش ب ةيبط ةيان عو ءامو، ما عطو نكسم نم ةيساس ال ةي مو يلا ةاي حل تاين الكم و لبس ر م دت؟ قشاد حل او روطتلا ةغل اب ةحل سا قطس اوب

دابي لفظ لك عم ىش ال تي لبقت سمل اى تحو لحمضي لم ال اى تح اذن ع

اذام؟ أي نف أري بعث ناك اذا فيكف، ةمواقملا تا جرد ىمسا أم تح نو كي فورظلا هذه لثم تحت ش عي عا ةان عمل طوق سيل انل لصوي ل بعزلنا زج اح ين ي طس ل فلما ان فلما قرتخي فورظلا هذه تحت؟ هي م سن

اهن عي ققي ق حل ا أض ي انكلو

لك قزم يو عي وجت او قدابال تا يلا عي م ج ىل ع بل غت ي و زج او حل لك رسكي عي ادبال لم عا اذه لثم

أي راجت أن ف وا أي لام ج أن ف طوق س ك عت ةب ذاك ةروص

ان فلما ل خ اود نم ع بن ي، ين اسن ا روصت ىمس ال أصا خو أيوق أري بعث لثم ي قدابال تا قوا ي ف ن فلما تالظمو ةمدهملا نار دجلا ىل ع ذفن ئي هض عب، ق ي ل ط ر ي ب عت و رح جاتن هنا... ح راو ج و ين ي طس ل فلما... رش ب ل او رجش ل او ين ابملا قارتح ا ن ع جت ان ال محفلا قطس اوب تذفن ا همظ عمو قزمملا ك ي باب ش ل ا ةزغ ل ا فط نوي ع ان ن ي عا مام حوضوب دس ج ئو تومل ا ىل ع سودي، تومل ا نم دلوي ي ذل ا ن فلما عم لم اع تي نا ر ب جم ي ل ا حل ا ن ل ي ج : ةي ق ال خ ا ةي م ت ح و ءوض ةي ن اسن ال ا ىل ع ط ل ص ي ي ق ال خ ال ا د ع ب ل ا اذه ا ع ب ت و ا ك ي ك ش ت ل ا م س اب ن ي ل اب م ال ى ق ب ن له ما ةم ي ر ك ةاي ح ب م ه ب ل ا ط م عم بوا ج ت ن له : ن ي ت ل ا حل ا ى د ح ا ةصا خ ل ا ن حل اص م ل

نكمي ال Mary Hatzinikoli و Panos Sarafianos ىؤرو مي ق مي ر ك ع ت ب ي ف ت ح ن ح ن و

ل ا و س ل ا اذه ه ج ا و ن ن ا ال ل Lofos Art Project

م ل ا ع ل ل ة ل اسر ر ش ن ل ين انوي ح ان ج ك ل كراش ن ن او، ن انوي ل اب Gaza Biennale م دق ن ن ا ن ل فر ش ل ن ا ا و ن ك ا م ن ي ا ةي ن اسن ال اب ن ي ن م و م ل ل ك عم ج ل ق ر د ا ق موي ل ا ةزغ ن اب

ك ل ت ل ث م ب ح م س ت ي ت ل ا ف س و ر ظ ل ا ن ا ف د ج و ي ن ا ق ح ت س ي ن ف ل ا م س ا ن ك اذا و ا ي ح ت ن ا ت ا ي ق ال خ ل ل ن ا ك اذا ف ق و ت ت ن ا ب ج ي م ئ ا ر ج ل ا

ي ل و م ش ل ا ق ط ن م ل ا و ر ا م ع ت س ا ل ا ي ه ن ا ط ي ش ل ا د ل و ت ي ت ل ا ق م و ظ ن م ل ا ن ا و ه ف ا س ر د ا ن م ل ع ي خ ي ر ا ت ل ا ن ا ك و ل ا ر و د ب ع ل ي ن ا ن ا ن ك م ا ب ن ف ل ا ن ا ف ا ذ ل و . ن ي د ت ع م ى ل ا ي ض ا م ل ا ا ي ا ح ض ل ي و ح ت ن م ن ك م ت ي ي ذ ل ا ي ن ق ت ل ا ي ل ا ح ل ا ع ض و ل ا ب ة ح ا ط ل ا ل ي ل ا ت ل ا ب و ة ي م ت ح ل ا ة م و ا ق م ل ا ي ف ا م م

## BY FAYE TZANETOULAKOU

*Curator, Dr. Art History*

### THREADS OF RESILIENCE: ART AS TESTIMONY, MEMORY AS RESISTANCE

In the face of systematic erasure, art becomes living archaeology.

Each brushstroke excavates what bombs seek to bury. Each canvas preserves what siege walls attempt to suffocate. The Gaza Biennale emerges not merely as an exhibition, but as an act of cultural resurrection—a defiant declaration that Palestinian creativity transcends all borders and checkpoints, survives all destructions, and speaks when voices are silenced.

### PART I

### THE HISTORICAL TAPESTRY: FOUNDATIONS OF PALESTINIAN VISUAL EXPRESSION

#### BYZANTINE ROOTS AND SACRED BEGINNINGS (1795-1955)

Palestinian art emerges from sacred soil, its earliest expressions carved in stone and painted on wood in monastery workshops where Byzantine traditions merged with emerging Arab identity. The Jerusalem School of icon painters, established in the 19th century, created the first distinctive Palestinian visual language. Artists like Hanna al-Qudsi—whose very name proclaimed him «the Jerusalemite»—developed naturalistic features that reflected Arab folk traditions within Byzantine frameworks.

Khalil al-Halabi (1889-1964) and Jamal Badran (1909-1999) stood as the first bridge-builders between religious iconography and secular art. These pioneers, largely self-taught due to exclusion from institutions like the Bezalel School which admitted only Jewish students, painted their hometowns with unprecedented intimacy, using photographs as models while maintaining the iconic solidity of ancient traditions.

#### THE PATHFINDERS ERA (1955-1965)

Following the Nakba of 1948, Palestinian art transformed into something unprecedented: refugee art that refused victimhood. Artists who had grown up in exile forged new visual languages to express displacement without surrender. This period established locality as the central thematic component of Palestinian art—not place as nostalgic memory, but place as living connection that transcends physical borders.

## BY FAYE TZANETOULAKOU

*Curator, Dr. Art History*

### THE EXPLORERS PERIOD (1965-1995)

The 1967 occupation catalyzed a renaissance of resistance art. The Palestine Liberation Organization created the Union of Artists for Palestinians in the Diaspora, while artists in occupied territories formed the League of Palestinian Artists. Art assumed urgent political meaning, featuring images of resistance while reaffirming Palestinian cultural identity. The New Visions collective after the first intifada in 1987, revolutionized Palestinian art through the boycott of Israeli supplies. Artists turned to locally found materials: dyes, leather, wood, sand, and clay. This wasn't merely political statement but artistic innovation.

### PART II: NEW DIRECTIONS (1995-2023) GAZA'S CULTURAL GENESIS: THE FLOWERING OF AN ARTISTIC COMMUNITY/ BUILDING AN ART SCENE UNDER SIEGE

Contemporary Palestinian visual arts exploded in number, embracing multimedia conceptual art while maintaining connection to traditional symbols. The olive tree, the traditional scarf keffiyeh, cactus (sabra-perseverance) became recurring motifs carrying deep cultural meaning. Gaza's formal contemporary art education began in the mid-1990s when Al-Aqsa University established the first art courses. In 2002, seven artists established Eltiqa Group for Contemporary Art, Gaza's first contemporary art space, followed by Shababeek for Contemporary Art in 2009. Gallery spaces became more than exhibition venues—they served as community centers, offering arts-focused mental health programming for children growing up amid wars and blockades. Between 2013 and 2016 the GAZA Contemporary Art Program was founded with French People's Aid,

Al-Qattan Foundation and Aafaq. The Swedish government's funding through the Al-Qattan Foundation allowed Shababeek to launch Gaza's first artist residency program in 2018, connecting Gazan creators with international networks despite the siege's constraints.

By 2023, Gaza's art scene had produced hundreds of practicing artists across all mediums. Eltiqa worked with over 500 artists during its existence, while Shababeek housed more than 20,000 works in its collection. These weren't merely storage spaces but living communities where artists gathered, learned, and created together.

### PART III ART IN THE TIME OF GENOCIDE: CREATIVE TESTIMONY FROM THE RUINS

After October 7, 2023, when the Genocide started escalating, the world changed for Gaza's artists. Within days, the cultural infrastructure of decades lay in ruins. Eltiqa was destroyed by Israeli airstrike on December 4, 2023. Shababeek was leveled during the assault on Al-Shifa Hospital in March 2024. By February 2024, according to the Palestinian Ministry of Culture, 32 cultural institutions had been damaged or destroyed. More devastating than infrastructure was the human toll. At least 45 Palestinian artists, writers, and cultural activists were killed between October 2023 and February 2024, with numbers climbing far higher by 2025.

## BY FAYE TZANETOULAKOU

Curator, Dr. Art History

### PART IV THE GAZA BIENNALE AS CULTURAL RESURRECTION

The Gaza Biennale, launched November 2024 with participation of over 50 artists, represents unprecedented cultural defiance. Organized by the Al Risan (meaning Hill as in Lofos) / Forbidden Museum, it affirms five core truths:

1. Through art, we resist all forms of genocide and oppression.
2. We continue to give and create, despite all obstacles.
3. Through art, we transcend barriers, ensuring Palestinian voices reach the world.
4. The Biennale represents the starting point for collective artistic work uniting many parties believing in Palestinian justice.
5. The Biennale emerged despite dispersion, displacement and suffering, and presents a vision for a better future.

The Biennale operates as a decentralized exhibition across 19 venues in 12 cities worldwide, with iterations in New York, London, Berlin, Athens, and beyond. Yet its heart remains in Gaza itself. The Gaza Biennale explicitly positions itself in relation to prestigious international art festivals like Venice Biennale, yet fundamentally challenges the model. Where Venice represents art market celebration and national cultural competition, Gaza Biennale emerges from survival necessity and international solidarity. From the devastation emerged perhaps the most powerful artistic movement in contemporary artistic history.

### ART AS SURVIVAL, CREATION AS RESISTANCE

**Ahmed Adnan** paints the Harvest, a monumental panorama of 12 stark black, white, and gray—colors of a destroyed homeland. It stands as a testament to displacement and ethnic cleansing. **Ahmed Al Adawi** transforms himself to a present-day Van Gogh, fighting with the demons, not inside himself, but of a cruel occupying force that destroys the world around him. **Ahmad Muhanna** paints over humanitarian aid boxes, in an attempt to come to terms with the enforced scarcity of the necessary means to sustain life. By incorporating international assistance into his artistic narrative, UNRWA flour bags are transformed from symbols of survival into canvases of resistance. **Alaa Abu Saif** constantly returns to a specific motif—the matchstick that resembles the hoping human being, burning bright until its flame disappears forever. **Alaa Al Shawa** keeps drawing stitched-up faces amid bombing sounds, as if to strive to retain their memory close to her.

**Ashraf Sahwi** paints dream-like black and white memories of olive groves, the tree of Sumud-resilience, whose roots go deeper than the false claims to the land made by the Occupation. **Aya Yuha** stretches papers over the destroyed walls of her house and paints her beloved broken people and the genocidal chains she herself tries to break. **Bassel Aklouk** lost all of his paintings during the genocide. Yet his inspiration was unabated and began taking the form of resistance plants, a red triangular rose, a cactus of sabra-steadfastness. Palestine is like nature, no matter man's bad treatment to her, she cannot be eliminated. However, the scale of destruction is so immense that **Diana Al Hosary** decided to enhance the impact of the otherworldly war images by creating “non-touristic” postcards of horror, to sensitize the people outside Gaza so as to put pressure to their governments to end the genocide. **Fadel Tafesh** celebrates the heroic nature of the iconic Palestinian Mother, her body as repository of place and faith to her land which is passed on to her children, whom she is trying to nourish and protect with dignity and pride, alas also evident in her unimaginable mourning for them.

## BY FAYE TZANETOULAKOU

Curator, Dr. Art History

### INNOVATIONS IN DOCUMENTATION

**Emad Badwan** after burning his own artworks to produce heat for cooking, he began documenting people under siege that their desperation led them to sacrifice their precious things so as to survive. **Hala Al-Naji's** «Nazeh's Lexicon» creates interactive installations where displaced Palestinians trace their own displacement journeys on wooden maps, transforming personal trauma into collective testimony. **Jehad Jarbou** and **Yara Zuhod's** multi-media art portrays pure emotions and desires: hunger, pain, loss, hope in a series of sketches, videos and photographs. **Ghanem Al Den** has developed revolutionary collaborative practice, conceptualizing artwork from his tent in Gaza while sending notes and instructions to artists in the West Bank who fabricate the work. This forced geographical collaboration creates new artistic language addressing Palestinian fragmentation. **Sohail Salem's** diary is a grave, day by day, testament of the genocide and a powerful lexicon of resistance. It's the holy book of survival. Through art, through memory, through faith. It's the contemporary version of Anne Frank's document of fear and hope against the atrocities of a new form of Nazi totalitarianism and colonization. **Yahya Abdel Salam Al Shouli**, follows the war horrors with his camera, albeit creating poetic images of a surrealist vantage point that manage to beat the monstrosities and enhance the high values of empathy.

### AESTHETIC TESTIMONY/ READING THE VISUAL LANGUAGE OF SURVIVAL

**Ibrahim Al Sultan** takes powerful photos of a choreography of gestures like a visual vocabulary of exaltation in an ancient tragedy concept. At the same time his powerful poems continue the tradition of great Palestinian poetry of creators such as Kanafani and Alareer. **Khaled Hussein** a sculptor from Rafah, fashions his own tools and creates sculptures from everyday mud clay, photographing them in devastated environments before destroying them, filming the entire process as temporal art that mirrors the transience of life under siege. **Liza Madi's** installations are powerful statements of the global silence the centers of state power are trying to enforce to people who strive to resist and affirm their solidarity to Gaza. **Maysa Yusef**, an artist who creates from the line of fire in a destroyed environment, uses any materials possible, in collages where beauty and hope are her most meaningful tools of survival and resistance. On the contrary **Motaz Naim's** haunted cityscapes having turned to rubble, is an image that exudes the deepest, most bleak sentiment of the outmost dystopia humans are capable of bringing to their fellow beings. Similarly the digital human-scapes of **Osama Hussein** tell the story of cultural trauma. Where once artists painted their people in vibrant yellows, oranges, and blues reflecting Mediterranean joy, contemporary Gazan art via the images of Osama, has shifted to a monochrome testimony, where white and gray dominate the human body—colors of ash, rubble, and smoke infuse the drawing lines of the lying flesh. The young **Rasha Al Rais** holds on to one specific painting that she is emotionally attached to it. Possibly a self portrait, of a faceless girl who is being offered by the Occupation with elements of destruction. Her heart though is like the little bird in the picture, ready to break free. **Ruba Hassan** creates a pre-raphaelite image of a lifeless young woman lying on a bed of poppies-hanoun-martyrdrom flowers. Her sacrifice irrigates the seeds of the next generation of blooming wishes for a free Palestine, for a free world. **Ola Al Sharif** is an artist provocateur. Utilizing the idea of the ready-made, she sketches the most recognizable tool of resistance, the hum-

## BY FAYE TZANETOULAKOU

*Curator, Dr. Art History*

ble but mighty slingshot. The effect is enhanced with other iconic dead pan, yet immensely valuable amenities of modern civilization such as the water tap, that are part of the infrastructure that is being destroyed by the Occupation. **Yasmeen Al Daya**'s clay sculptures carry something eternal and precious. The miracle of life, the allegorical burning of its wings in the form of mutilation of the Young, and eventually earthly life's last breath that feels like an exodus of all the ugliness, like catharsis and eternal peace. Trauma as generative force. These works are truly spiritual.

Beyond the official artist selection of the Gaza Biennale, three more Gazan artists are included in the Athens Pavilion: **Maisara Baroud**, whose five-story house was leveled by the third day of war, found fragments of his work in rubble but continues creating: «We are the people of legend, who, like the phoenix, rise from the ashes. His documentation practice becomes archaeological in real time, preserving cultural practices and urban landscapes as they disappear. This creates temporal complexity where art functions simultaneously as contemporary creation and historical archive. **Lamis Dajani Shawwa** creates sculptures and large paintings depicting the stark indifference of a blind folded world who cannot see anymore. The images become visual symbols of Gaza as a demolished city over a river of blood, surrounded by enormous explosions near the Mediterranean shores, which could reach any part of the blindfolded Western globe. **Mary Ann Jaraisy** intricate tiles are a testimony to the weapons of mass destruction. Seeing from afar they look ornate with calligraphic motifs, but when we approach them, then we become aware of the destructive elements, such as fighter jets, drones and cctv cameras.

### CONCLUSION THE UNBREAKABLE THREAD

Palestinian art has always been art of survival, but Gaza, into the 3rd year of the Genocide, represents survival raised to new level of creative and philosophical sophistication. Artists working in tents with salvaged materials produce work of stunning conceptual clarity and aesthetic power. This isn't art therapy but art as intellectual engagement with extremity. Artists approach their experience not as victims seeking healing but as witnesses demanding recognition.

The Gaza Biennale emerges not as curated exhibition but as cultural movement asserting that Palestinian creativity cannot be destroyed, Palestinian voices cannot be silenced, Palestinian identity cannot be erased. In documenting this moment, we witness not just artistic production but cultural transformation—the emergence of new aesthetic language adequate to unprecedented historical experience. These artists have invented forms of expression that didn't exist before October 7, 2023, creating visual vocabulary for experiences previously beyond representation.

The thread connecting Hanna al-Qudsi' s 19th-century icons to Ghanem's treatise on the Rocket and the Carrot runs unbroken through 150 years of Palestinian cultural expression. It is a thread that siege cannot cut, bombing cannot sever, occupation cannot snap. This is the thread of resilience, woven from memory and hope, dyed in blood and painted with ash, stretched between ancient roots and infinite future. It is the thread that connects every Palestinian artist to every other, across time and space and the arbitrary cruelties of borders.

It is the thread that makes art possible even in hell.

It is the thread that makes hell speakable through art.

It is the thread that survives.

## BY **FAYE TZANETOULAKOU**

*Curator, Dr. Art History*

This catalogue is dedicated to the 45+ Palestinian artists, writers, and cultural activists killed since October 7, 2023, and to all artists continuing to create under siege. Their voices carry forward in every brushstroke, every canvas, every act of creative defiance that declares:

We are still here.

We are still creating.

Palestine lives and shall be free.

### Bibliography and Sources:

- Palquest.org/ - Palestinian Art Court - Al Hoash archives/ - Eltiqa Group for Contemporary Art documentation/ - Shababeek for Contemporary Art records/ - Gaza Biennale official statements and press releases/ - Palestine museum.us/ - Palestinian Ministry of Culture reports/ - Rula Dughman gallery archive/ - Contemporary art criticism from e.g. The Art Newspaper, Hyperallergic, specialized Palestinian cultural publications

## ΤΗΣ ΦΑΙΗΣ ΤΖΑΝΕΤΟΥΛΑΚΟΥ

Επιμελήτριας, Δρ. Ιστορίας της Τέχνης

### Η ΤΕΧΝΗ ΩΣ ΜΑΡΤΥΡΙΑ, Η ΜΝΗΜΗ ΩΣ ΑΝΤΙΣΤΑΣΗ

Απέναντι στη συστηματική διαγραφή, η τέχνη γίνεται ζωντανή αρχαιολογία.

Κάθε πινελιά ανασκάπτει αυτό που οι βόμβες επιδιώκουν να θάψουν. Κάθε καμβάς διατηρεί αυτό που τα τείχη της πολιορκίας προσπαθούν να πνίξουν. Η Μπιενάλε της Γάζας αναδύεται όχι απλά ως μια έκθεση, αλλά ως μια πράξη πολιτιστικής ανάστασης—μια προκλητική δήλωση ότι η παλαιστινιακή δημιουργικότητα υπερβαίνει όλα τα σύνορα και τα checkpoints, επιβιώνει από όλες τις καταστροφές, και μιλά όταν οι φωνές σιωπάζουν.

### ΜΕΡΟΣ Ι

### ΤΑ ΘΕΜΕΛΙΑ ΤΗΣ ΠΑΛΑΙΣΤΙΝΙΑΚΗΣ ΟΠΤΙΚΗΣ ΕΚΦΡΑΣΗΣ

#### ΒΥΖΑΝΤΙΝΕΣ ΡΙΖΕΣ ΚΑΙ ΙΕΡΕΣ ΑΠΑΡΧΕΣ (1795-1955)

Η παλαιστινιακή τέχνη αναδύεται από ιερό έδαφος, με τις πρώτες της εκφράσεις να είναι σκαλισμένες σε πέτρα και ζωγραφισμένες σε ξύλο σε εργαστήρια μοναστηριών, όπου οι βυζαντινές παραδόσεις συγχωνεύτηκαν με την αραβική ταυτότητα. Η Σχολή ζωγράφων της Ιερουσαλήμ, που ιδρύθηκε τον 19ο αιώνα, δημιούργησε την πρώτη ξεχωριστή παλαιστινιακή οπτική γλώσσα. Καλλιτέχνες όπως ο Hanna al-Qudsi ανέπτυξαν νατουραλιστικά χαρακτηριστικά που αντανάκλασαν αραβικές λαϊκές παραδόσεις εντός βυζαντινών πλαισίων.

Ο Khalil al-Halabi (1889-1964) και ο Jamal Badran (1909-1999) υπήρξαν οι πρώτες γέφυρες μεταξύ θρησκευτικής εικονογραφίας και κοσμικής τέχνης. Αυτοί οι πρωτοπόροι, ως επί το πλείστον αυτοδίδακτοι λόγω του αποκλεισμού τους από ιδρύματα όπως η Σχολή Bezalel που δέχονταν μόνο Εβραίους φοιτητές, ζωγράφισαν τις πατρίδες τους με μια πρωτοφανή οικειότητα, χρησιμοποιώντας φωτογραφίες ενώ διατήρησαν τη στερεότητα των αρχαίων παραδόσεων.

#### ΧΑΡΑΖΟΝΤΑΣ ΤΟ ΔΡΟΜΟ (1955-1965)

Μετά την Νάκμπα του 1948, η παλαιστινιακή τέχνη μεταμορφώθηκε σε κάτι πρωτοφανές: τέχνη προσφύγων που αρνιόταν την ταυτότητα του θύματος. Καλλιτέχνες που είχαν μεγαλώσει στην εξορία έφτιαξαν νέες οπτικές γλώσσες για να εκφράσουν την εκτόπισή τους χωρίς να συνθηκολογήσουν. Αυτή η περίοδος καθιέρωσε την «τοπικότητα» ως το κεντρικό θεματικό συστατικό της παλαιστινιακής τέχνης—όχι ο τόπος ως νοσταλγική μνήμη, αλλά ο τόπος ως ζωντανή σύνδεση που υπερβαίνει τα φυσικά σύνορα.

## ΤΗΣ ΦΑΙΗΣ ΤΖΑΝΕΤΟΥΛΑΚΟΥ

Επιμελήτριας, Δρ. Ιστορίας της Τέχνης

### Η ΠΕΡΙΟΔΟΣ ΤΩΝ ΕΞΕΡΕΥΝΗΤΩΝ (1965-1995)

Η κατοχή του 1967 ενέτεινε μια αναγέννηση της τέχνης αντίστασης. Ο Οργανισμός Απελευθέρωσης της Παλαιστίνης δημιούργησε την Ένωση Καλλιτεχνών για Παλαιστίνιους της Διασποράς, ενώ καλλιτέχνες στα κατεχόμενα εδάφη σχημάτισαν την Ένωση Παλαιστινίων Καλλιτεχνών. Η τέχνη απέκτησε επείγον πολιτικό νόημα, παρουσιάζοντας εικόνες αντίστασης ενώ επαναβεβαίωνε την παλαιστινιακή πολιτιστική ταυτότητα. Η συλλογικότητα «Νέο Όραμα» (New Visions) μετά την πρώτη ιντιφάντα το 1987, επαναπροσδιόρισε την παλαιστινιακή τέχνη μέσω του μπλοκιάζ ισραηλινών υλικών. Οι καλλιτέχνες στράφηκαν σε τοπικά υλικά: βαφές, δέρμα, ξύλο, άμμο και πηλό. Αυτό δεν ήταν απλά πολιτική δήλωση αλλά καλλιτεχνική καινοτομία.

### ΜΕΡΟΣ II:

#### ΝΕΕΣ ΚΑΤΕΥΘΥΝΣΕΙΣ (1995-2023) Η ΠΟΛΙΤΙΣΤΙΚΗ ΓΕΝΕΣΗ ΤΗΣ ΓΑΖΑΣ: ΧΤΙΖΟΝΤΑΣ ΜΙΑ ΚΑΛΛΙΤΕΧΝΙΚΗ ΣΚΗΝΗ ΚΑΤΩ ΑΠΟ ΠΟΛΙΟΡΚΙΑ

Οι σύγχρονες παλαιστινιακές οπτικές τέχνες αναπτύχθηκαν αριθμητικά, αγκαλιάζοντας την εννοιολογική τέχνη ενώ διατήρησαν τη σύνδεση με παραδοσιακά σύμβολα. Η ελιά, το παραδοσιακό καφγιέ, ο κάκτος (sabra-υπομονή) έγιναν επαναλαμβανόμενα μοτίβα που κουβαλούν βαθιά πολιτιστική σημασία. Η επίσημη σύγχρονη καλλιτεχνική εκπαίδευση στη Γάζα ξεκίνησε στα μέσα της δεκαετίας του 1990, όταν το Πανεπιστήμιο Al-Aqsa καθιέρωσε τα πρώτα μαθήματα τέχνης. Το 2002, επτά καλλιτέχνες ίδρυσαν την Ομάδα Eltiqa για Σύγχρονη Τέχνη, τον πρώτο χώρο σύγχρονης τέχνης στη Γάζα, ακολουθούμενη από την Shababbeek για Σύγχρονη Τέχνη το 2009. Οι χώροι γκαλερί έγιναν κάτι περισσότερο από χώρους έκθεσης—λειτούργησαν ως κέντρα κοινότητας, προσφέροντας προγράμματα ψυχικής υγείας με επίκεντρο τις τέχνες για παιδιά που μεγάλωναν μέσα σε πολέμους και αποκλεισμούς. Μεταξύ

2013 και 2016 το Πρόγραμμα Σύγχρονης Τέχνης ΓΑΖΑ ιδρύθηκε με τη Γαλλική λαϊκή βοήθεια, το Ίδρυμα Al-Qattan και το Aafaq. Η χρηματοδότηση της Σουηδικής κυβέρνησης μέσω του Ίδρυματος Al-Qattan επέτρεψε στη Shababbeek να ξεκινήσει το πρώτο πρόγραμμα καλλιτεχνικής παραμονής στη Γάζα το 2018, συνδέοντας δημιουργούς της Γάζας με διεθνή δίκτυα παρά τους περιορισμούς της πολιορκίας.

Μέχρι το 2023, η καλλιτεχνική σκηνή της Γάζας είχε παράγει εκατοντάδες ενεργούς καλλιτέχνες σε όλα τα μέσα. Η Eltiqa συνεργάστηκε με πάνω από 500 καλλιτέχνες κατά τη διάρκεια της ύπαρξής της, ενώ η Shababbeek φιλοξενούσε πάνω από 20.000 έργα στη συλλογή της. Δημιουργήθηκαν ζωντανές κοινότητες όπου οι καλλιτέχνες μαθαίνουν και δημιουργούσαν μαζί.

### ΜΕΡΟΣ III

#### ΤΕΧΝΗ ΣΤΟΝ ΚΑΙΡΟ ΤΗΣ ΓΕΝΟΚΤΟΝΙΑΣ: ΔΗΜΙΟΥΡΓΙΚΗ ΜΑΡΤΥΡΙΑ ΑΠΟ ΤΑ ΕΡΕΙΠΙΑ

Μετά τις 7 Οκτωβρίου 2023, όταν η Γενοκτονία άρχισε να κλιμακώνεται, ο κόσμος άλλαξε για τους καλλιτέχνες της Γάζας. Μέσα σε λίγες μέρες, η πολιτιστική υποδομή δεκαετιών βρισκόταν σε ερείπια. Η Eltiqa καταστράφηκε από ισραηλινό αεροπορικό πλήγμα στις 4 Δεκεμβρίου 2023. Η Shababbeek ισοπεδώθηκε κατά την επίθεση στο Νοσοκομείο Al-Shifa τον Μάρτιο του 2024. Μέχρι τον Φεβρουάριο του 2024, σύμφωνα με το Παλαιστινιακό Υπουργείο Πολιτισμού, 32 πολιτιστικοί θεσμοί είχαν υποστεί ζημιές ή καταστραφεί. Πιο καταστροφικό από την υποδομή ήταν το ανθρώπινο τίμημα. Τουλάχιστον 45 Παλαιστίνιοι καλλιτέχνες, συγγραφείς και πολιτιστικοί ακτιβιστές σκοτώθηκαν μεταξύ Οκτωβρίου 2023 και Φεβρουαρίου 2024, με τους αριθμούς να ανεβαίνουν πολύ ψηλότερα μέχρι το 2025.

## ΤΗΣ ΦΑΙΗΣ ΤΖΑΝΕΤΟΥΛΑΚΟΥ

Επιμελήτριας, Δρ. Ιστορίας της Τέχνης

### ΜΕΡΟΣ IV

#### Η ΜΠΙΕΝΑΛΕ ΤΗΣ ΓΑΖΑΣ ΩΣ ΠΟΛΙΤΙΣΤΙΚΗ ΑΝΑΣΤΑΣΗ

Η Μπιενάλε της Γάζας, που ξεκίνησε τον Νοέμβριο του 2024 με τη συμμετοχή πάνω από 50 καλλιτεχνών, αντιπροσωπεύει μια πρωτοφανή πολιτιστική πρόκληση. Οργανωμένη από το Al Risan (που σημαίνει Λόφος) / Απαγορευμένο Μουσείο, επιβεβαιώνει πέντε βασικές αλήθειες:

1. Μέσω της τέχνης, αντιστεκόμαστε σε όλες τις μορφές γενοκτονίας και καταπίεσης.
2. Συνεχίζουμε να δημιουργούμε, παρά όλα τα εμπόδια.
3. Μέσω της τέχνης, υπερβαίνουμε τα εμπόδια, διασφαλίζοντας ότι οι παλαιστινιακές φωνές φθάνουν στον κόσμο.
4. Η Μπιενάλε αντιπροσωπεύει το σημείο εκκίνησης για συλλογική καλλιτεχνική δουλειά που ενώνει πολλά μέρη που πιστεύουν στη δικαιοσύνη της Παλαιστίνης.
5. Η Μπιενάλε προέκυψε παρά τη διασπορά, την εκτόπιση και τα βάσανα, και παρουσιάζει ένα όραμα για ένα καλύτερο μέλλον.

Η Μπιενάλε λειτουργεί ως μια αποκεντρωμένη έκθεση σε 19 χώρους σε 12 πόλεις παγκοσμίως, με εκδοχές στη Νέα Υόρκη, το Λονδίνο, το Βερολίνο, την Αθήνα και αλλού. Ωστόσο, η καρδιά της παραμένει στην ίδια τη Γάζα. Η Μπιενάλε της Γάζας τοποθετείται ρητά σε σχέση με διεθνείς καλλιτεχνικούς φεστιβάλ όπως η Μπιενάλε της Βενετίας, αλλά προκαλεί θεμελιωδώς το μοντέλο. Ενώ η Βενετία αντιπροσωπεύει τον εορτασμό της καλλιτεχνικής αγοράς και τον εθνικό πολιτιστικό ανταγωνισμό, η Μπιενάλε της Γάζας προκύπτει από την αναγκαιότητα επιβίωσης και τη διεθνή αλληλεγγύη. Από την καταστροφή προέκυψε ίσως το πιο ισχυρό καλλιτεχνικό κίνημα στη σύγχρονη καλλιτεχνική ιστορία.

#### ΤΕΧΝΗ ΩΣ ΕΠΙΒΙΩΣΗ, ΔΗΜΙΟΥΡΓΙΑ ΩΣ ΑΝΤΙΣΤΑΣΗ

Ο **Ahmed Adnan** ζωγραφίζει το «Θερισμό» (Harvest), μια μνημειώδη πανοραμική όψη 12 μαύρων, λευκών και γκρι—χρωμάτων μιας πολυορκημένης πατρίδας. Αποτελεί απόδειξη της εκτόπισης και της εθνοκάθαρσης. Ο **Ahmed Al Adawi** μεταμορφώνεται σε έναν σημερινό Βαν Γκογκ, παλεύοντας όχι με τους δαίμονες μέσα του, αλλά με μια σκληρή κατοχική δύναμη που καταστρέφει τον κόσμο γύρω του. Ο **Ahmad Muhanna** ζωγραφίζει πάνω σε κούτες ανθρωπιστικής βοήθειας, σε μια προσπάθεια να συμβιβαστεί με την επιβεβλημένη έλλειψη των απαραίτητων μέσων για να διατηρήσει τη ζωή. Ενσωματώνοντας τη διεθνή βοήθεια στην καλλιτεχνική αφήγησή του, οι σακούλες αλεύρου του UNRWA μεταμορφώνονται από σύμβολα επιβίωσης σε καμβάδες αντίστασης. Ο **Alaa Abu Saif** επιστρέφει συνεχώς σε ένα συγκεκριμένο μοτίβο—το σπύρο που μοιάζει με το ελπιδοφόρο ανθρώπινο ον, που καίγεται λαμπρά μέχρι που η φλόγα του εξαφανίζεται για πάντα. Η **Alaa Al Shawa** συνεχίζει να σχεδιάζει ραμμένα πρόσωπα μέσα σε ήχους βομβαρδισμών, σαν να προσπαθεί να κρατήσει τη μνήμη τους κοντά της.

Ο **Ashraf Sahwiel** ζωγραφίζει ονειρικές ασπρόμαυρες μνήμες από ελαιώνες, το δέντρο της Sumud-ανθεκτικότητας, του οποίου οι ρίζες πηγαίνουν πιο βαθιά από τις ψεύτικες αξιώσεις για τη γη που θέτει η Κατοχή. Η **Aya Yuha** τεντώνει χαρτιά πάνω στους κατεστραμμένους τοίχους του σπιτιού της και ζωγραφίζει τους αγαπημένους της σπαραγμένους ανθρώπους και τις αλυσίδες γενοκτονίας που η ίδια προσπαθεί να σπάσει. Ο **Bassel Aklouk** έχασε όλους τους πίνακες κατά τη διάρκεια της γενοκτονίας. Ωστόσο, η έμπνευσή του δεν υποχώρησε και άρχισε να παίρνει τη μορφή ανθεκτικών φυτών, ενός κόκκινου τριγωνικού τριαντάφυλλου, ενός κάκτου sabra-υπομονής. Η Παλαιστίνη είναι σαν τη φύση, ανεξάρτητα από την κακή αντιμετώπιση του ανθρώπου απέναντί της, δεν μπορεί να εξαλειφθεί. Ωστόσο, η κλίμακα της καταστροφής είναι τόσο τεράστια που η **Diana Al Hosary** αποφάσισε να ενισχύσει την επίδραση των απόκοσμων εικόνων του πολέμου δημιουργώντας «μη τουριστικές» καρτ ποστάλ φρίκης, για να ευαισθητοποιήσει τους ανθρώπους

## ΤΗΣ ΦΑΙΗΣ ΤΖΑΝΕΤΟΥΛΑΚΟΥ

Επιμελήτριας, Δρ. Ιστορίας της Τέχνης

έξω από τη Γάζα ώστε να ασκήσουν πίεση στις κυβερνήσεις τους να τερματίσουν τη γενοκτονία. Ο **Fadel Tafesh** γιορτάζει την ηρωική φύση της Παλαιστίνιας Μητέρας, το σώμα της ως αποθηκευτήριο τόπου και πίστης στη γη της που μεταβιβάζεται στα παιδιά της, τα οποία προσπαθεί να θρέψει και να προστατεύσει με αξιοπρέπεια και περηφάνια, δυστυχώς εμφανής και στο ασύλληπτο πένθος της για αυτά.

### ΚΑΙΝΟΤΟΜΙΕΣ ΣΤΗΝ ΤΕΚΜΗΡΙΩΣΗ

Ο **Emad Badwan**, αφού έκαψε τα δικά του έργα τέχνης για να παράγει θερμότητα για μαγείρεμα, άρχισε να καταγράφει ανθρώπους υπό πολιορκία των οποίων η απελπισία τους οδήγησε να θυσιάσουν τα πιο πολύτιμα πράγματά τους για να επιβιώσουν. Το «Λεξικό του Nazeh» της **Hala Eid Alnaji** δημιουργεί διαδραστικές εγκαταστάσεις όπου εκτοπισμένοι Παλαιστίνιοι ιχνηλατούν τα δικά τους ταξίδια εκτόπισης σε ξύλινους χάρτες, μετατρέποντας το προσωπικό τραύμα σε συλλογική μαρτυρία. Η πολυμεσική τέχνη των **Jehad Jarbou** και **Yara Zuhod** απεικονίζει ακατέργαστα συναισθήματα και επιθυμίες: πείνα, πόνος, απώλεια, ελπίδα σε μια σειρά από σκίτσα, βίντεο και φωτογραφίες. Ο **Ghanem Said Al Den** έχει αναπτύξει μια επαναστατική συνεργατική πρακτική, μέσα από εννοιολογικά έργα τέχνης από την σκηνή του στη Γάζα ενώ στέλνει σημειώσεις και οδηγίες σε καλλιτέχνες στη Δυτική Όχθη που τα κατασκευάζουν. Αυτή η εξαναγκασμένη γεωγραφική συνεργασία δημιουργεί μια νέα καλλιτεχνική γλώσσα που απευθύνεται στον παλαιστινιακό κατακερματισμό. Το ημερολόγιο του **Sohail Salem** είναι ένας σπιβαρός απολογισμός με μελάνι, της γενοκτονίας μέρα με τη μέρα, και ένα ισχυρό λεξικό αντίστασης. Είναι το ιερό βιβλίο της επιβίωσης. Μέσα από την τέχνη, μέσα από τη μνήμη, μέσα από την πίστη. Είναι η σύγχρονη εκδοχή του συγγράμματος φόβου και ελπίδας της Anne Frank ενάντια στις φρικαλεότητες μιας νέας μορφής ναζιστικού ολοκληρωτισμού και αποικισμού. Ο **Yahya Abdel Salam Al Shouli**, ακολουθεί τις φρικαλεότητες του πολέμου με την κάμερά του, δημιουργώντας ποιητικές εικόνες από ένα σουρεαλιστικό σημείο θέασης που καταφέρνουν να νικούν τις τερατώδεις πράξεις και να ενισχύουν τις υψηλές αξίες της ενσυναίσθησης.

### ΑΙΣΘΗΤΙΚΗ ΜΑΡΤΥΡΙΑ / ΑΝΑΓΝΩΣΗ ΤΗΣ ΟΠΤΙΚΗΣ ΓΛΩΣΣΑΣ ΤΗΣ ΕΠΙΒΙΩΣΗΣ

Ο **Ibrahim Al Sultan** παίρνει ισχυρές φωτογραφίες μιας χορογραφίας χειρονομιών σαν ένα οπτικό λεξικό εξύμνησης σε μια αρχαία τραγική έννοια. Ταυτόχρονα τα ποιήματα του συνεχίζουν την παράδοση της μεγάλης παλαιστινιακής ποίησης δημιουργών όπως ο Kanafani και ο Alareer. Ο **Khaled Hussein**, ένας γλύπτης από τη Rafah, φτιάχνει τα δικά του εργαλεία και δημιουργεί γλυπτά από καθημερινή λάσπη, φωτογραφίζοντάς τα σε κατεστραμμένα περιβάλλοντα πριν τα καταστρέψει, γυρίζοντας ολόκληρη τη διαδικασία ως εφήμερη τέχνη που αντανάκλα την παροδικότητα της ζωής υπό πολιορκία. Οι εγκαταστάσεις της **Liza Madi** αποτελούν καιρίες δηλώσεις της παγκόσμιας σιωπής που τα κέντρα κρατικής εξουσίας προσπαθούν να επιβάλουν σε ανθρώπους που προσπαθούν να αντισταθούν και να επιβεβαιώσουν την αλληλεγγύη τους στη Γάζα. Η **Maysa Yusef**, μια καλλιτέχνης που δημιουργεί μέσα από τη γραμμή του πυρός σε ένα κατεστραμμένο περιβάλλον, χρησιμοποιεί οποιαδήποτε υλικά είναι δυνατόν, σε κολάζ όπου η ομορφιά και η ελπίδα είναι τα πιο σημαντικά εργαλεία επιβίωσης και αντίστασής της. Αντίθετα, οι στοιχειωμένες αστικές τοπιογραφίες του **Motaz Naim** που έχουν μετατραπεί σε ερείπια, είναι μια εικόνα που αναδίδει το βαθύτερο, πιο ζοφερό συναίσθημα της απόλυτης δυστοπίας που οι άνθρωποι είναι ικανοί να οδηγήσουν τους συνανθρώπους τους. Παρόμοια, τα ψηφιακά ανθρώπινα τοπία του **Osama Hussein** αφηγούνται την ιστορία του πολιτιστικού τραύματος. Εκεί όπου κάποτε οι καλλιτέχνες ζωγράφιζαν τον λαό τους με ζωηρά κίτρινα, πορτοκαλί και μπλε που αντανάκλουν τη μεσογειακή χαρά, η σύγχρονη τέχνη της Γάζας μέσω των εικόνων του Osama, έχει μετατοπιστεί σε μια μονόχρωμη μαρτυρία, όπου το λευκό και το γκρι κυριαρχούν στο ανθρώπινο σώμα—χρώματα στάχτης, ερειπίων και καπνού εμποτίζουν τις γραμμές του σχεδίου της παραδομένης σάρκας. Η νεαρή **Rasha Al Rais** κρατιέται από έναν συγκεκριμένο πίνακα στον οποίο είναι συναισθηματικά δεμένη. Πιθανώς μια αυτοπροσωπογραφία, ενός ανώνυμου κοριτσιού στο οποίο η Κατοχή προσφέρει ως δώρο στοιχεία καταστροφής. Η καρδιά της όμως είναι σαν το μικρό πουλί στην εικόνα, έτοιμο να απελευθερωθεί.

## ΤΗΣ ΦΑΙΗΣ ΤΖΑΝΕΤΟΥΛΑΚΟΥ

Επιμελήτριας, Δρ. Ιστορίας της Τέχνης

Η **Ruba Hassan** δημιουργεί μια προραφαηλίτικη εικόνα μιας άψυχης νεαρής γυναίκας που ξαπλώνει σε ένα κρεβάτι από παπαρούνες-χαπουνη-λουλούδια μαρτυρίου. Η θυσία της ποτίζει τους σπόρους της επόμενης γενιάς ανθισμένων ευχών για μια ελεύθερη Παλαιστίνη, για έναν ελεύθερο κόσμο. Η **Ola Al Sharif** είναι μια καλλιτέχνης προβοκάτορας. Χρησιμοποιώντας την ιδέα του ready-made, σκιαγραφεί το πιο αναγνωρίσιμο εργαλείο αντίστασης, την ταπεινή αλλά πανίσχυρη σφεντόνα. Το αποτέλεσμα ενισχύεται με άλλα χρήσιμα αντικείμενα του σύγχρονου πολιτισμού όπως η βρύση νερού, που είναι μέρος της υποδομής που καταστρέφεται από την Κατοχή. Τα πήλινα γλυπτά της **Yasmeen Al Daya** κουβαλούν κάτι αιώνιο και πολύτιμο. Το θαύμα της ζωής, η αλληγορική καύση των φτερών της με τη μορφή ακρωτηριασμού των νέων ανθρώπων, και τελικά η τελευταία ανάσα της επίγειας ζωής που μοιάζει με έξοδο από όλη την ασχήμια, σαν κάθαρση και αιώνια γαλήνη. Το τραύμα ως παραγωγική δύναμη. Αυτά τα έργα είναι πραγματικά πνευματικά.

Πέρα από την επίσημη επιλογή καλλιτεχνών της Μπιενάλε της Γάζας, τρεις ακόμη καλλιτέχνες της Γάζας συμπεριλαμβάνονται στο Περίπτερο της Αθήνας: Ο **Maisara Baroud**, του οποίου το πεντάωρο σπίτι ισοπεδώθηκε την τρίτη ημέρα του πολέμου, βρήκε θραύσματα του έργου του στα ερείπια, αλλά συνεχίζει να δημιουργεί: «Είμαστε ο λαός του θρύλου, που, σαν το φοίνικα, αναγεννιόμαστε από τις στάχτες». Η πρακτική τεκμηρίωσής του γίνεται αρχαιολογική σε πραγματικό χρόνο, διατηρώντας πολιτιστικές πρακτικές και αστικά τοπία καθώς εξαφανίζονται. Αυτό δημιουργεί μια χρονική πολυπλοκότητα όπου η τέχνη λειτουργεί ταυτόχρονα ως σύγχρονη έκφραση και ιστορικό αρχείο. Η **Lamis Dajani Shawwa** δημιουργεί γλυπτά και μεγάλους πίνακες που απεικονίζουν την απόλυτη αδιαφορία ενός τυφλωμένου κόσμου που δεν μπορεί πλέον να δει. Οι εικόνες γίνονται οπτικά σύμβολα της Γάζας ως μιας κατεδαφισμένης πόλης πάνω από ένα ποτάμι αίματος, περιβαλλόμενη από τεράστιες εκρήξεις κοντά στις μεσογειακές ακτές, που θα μπορούσαν να φθάσουν σε

οποιοδήποτε μέρος του τυφλωμένου δυτικού κόσμου. Τα περίπλοκα πλακάκια της **MaryAnn Jaraisy** είναι μια μαρτυρία των όπλων μαζικής καταστροφής. Βλέποντάς τα από μακριά φαίνονται διακοσμημένα με καλλιγραφικά μοτίβα, αλλά όταν πλησιάζουμε, τότε γινόμαστε ενήμεροι για τα καταστροφικά στοιχεία, όπως μαχητικά αεροσκάφη, drones και κάμερες cctv.

## ΤΗΣ ΦΑΙΗΣ ΤΖΑΝΕΤΟΥΛΑΚΟΥ

Επιμελήτριας, Δρ. Ιστορίας της Τέχνης

### ΕΠΙΛΟΓΟΣ: ΤΟ ΑΔΙΑΣΠΑΣΤΟ ΝΗΜΑ

Η παλαιστινιακή τέχνη ήταν πάντα τέχνη επιβίωσης, αλλά η Γάζα, ήδη πορευόμενη στο τρίτο έτος της Γενοκτονίας, αντιπροσωπεύει την επιβίωση ανυψωμένη σε ένα νέο επίπεδο δημιουργικής και φιλοσοφικής πολυπλοκότητας. Καλλιτέχνες που εργάζονται σε σκηνές με διασωθέντα υλικά παράγουν έργα εντυπωσιακής εννοιολογικής σαφήνειας και αισθητικής δύναμης. Αυτό δεν είναι καλλιτεχνική θεραπεία αλλά τέχνη ως πνευματική ενασχόληση με την ακρότητα. Οι καλλιτέχνες προσεγγίζουν την εμπειρία τους όχι ως θύματα που αναζητούν θεραπεία αλλά ως μάρτυρες που απαιτούν αναγνώριση.

Η Μπιενάλε της Γάζας αναδύεται όχι ως επιμελημένη έκθεση αλλά ως πολιτιστικό κίνημα που ισχυρίζεται ότι η παλαιστινιακή δημιουργικότητα δεν μπορεί να καταστραφεί, οι παλαιστινιακές φωνές δεν μπορούν να σιωπάινονται, η παλαιστινιακή ταυτότητα δεν μπορεί να διαγραφεί. Τεκμηριώνοντας αυτή τη στιγμή, δεν παρακολουθούμε απλά καλλιτεχνική παραγωγή αλλά πολιτιστική μεταμόρφωση—την εμφάνιση μιας νέας αισθητικής γλώσσας επαρκής για μια πρωτοφανή ιστορική εμπειρία.

Το νήμα που συνδέει τις εικόνες του Hanna al-Qudsi του 19ου αιώνα με την πραγματεία του Ghanem για τη Ρουκέτα και το Καρότο, τρέχει αδιάσπαστο μέσα από 150 χρόνια παλαιστινιακής πολιτιστικής έκφρασης. Είναι ένα νήμα που η πολιορκία δεν μπορεί να κόψει, ο βομβαρδισμός δεν μπορεί να διαγράψει, η κατοχή δεν μπορεί να σπάσει. Αυτό είναι το νήμα της ανθεκτικότητας, υφασμένο από μνήμη και ελπίδα, βαμμένο με αίμα και ζωγραφισμένο με στάχτη, τεντωμένο μεταξύ αρχαίων ριζών και άπειρου μέλλοντος. Είναι το νήμα που συνδέει κάθε Παλαιστίνιο καλλιτέχνη με κάθε άλλο, διαχρονικά και διαχωρικά, πέρα από τις αυθαίρετες κτηνωδίες των συνόρων.

Είναι το νήμα που κάνει την τέχνη δυνατή ακόμα και στην κόλαση.

Είναι το νήμα που κάνει την κόλαση να εκφράζεται μέσω της τέχνης.

Είναι το νήμα που επιβιώνει.

Αυτός ο κατάλογος είναι αφιερωμένος στους 45+ Παλαιστίνιους καλλιτέχνες, συγγραφείς και πολιτιστικούς ακτιβιστές που σκοτώθηκαν από τις 7 Οκτωβρίου 2023, και σε όλους τους καλλιτέχνες που συνεχίζουν να δημιουργούν υπό πολιορκία. Οι φωνές τους μεταφέρονται μπροστά σε κάθε πινελιά, κάθε καμβά, κάθε πράξη δημιουργικής πρόκλησης που δηλώνει:

Είμαστε ακόμα εδώ.

Ακόμα δημιουργούμε.

Η Παλαιστίνη ζει και θα ελευθερωθεί.

## BY FAYE TZANETOULAKOU

Curator, Dr. Art History

### همواقمك قركاذل او دهاشك نفلال: همواقملا طويخ

أشرف بمرض لك ..ةيح راثا ىل نفلال لوحتي ،راضحلاو ناسنلله منملا س مطلا مضخ يف  
راضح لالخنم قنخالا تالواحم طبحت هي نف ةحول لك ..هنفدل لبانقلا ىعست ام فشكت  
ناردجلا

درمت ةخرصو هيفاقث ءايح ةيلمك نكلو ،ينف ضرعك طقف سيل قثبني هزغ ىلاي نب  
مغر شيعتل شيفتلا طاقنو زجواحل رسكت ةينيطسلفلا ةقالخا حورلا نا ىلا هي بنتو  
ةونع تاوصلال سرخت ام دنع ملكتتو ..بارخال لك

### لوألا ءزجلا

#### ةينيطسلفلا ىنفلال ريبعتلل ساسألا رجح :خي راتلا جي سننلا

(١٧٩٥-١٩٥٥) :ةسدقملا تاي ادبلال او ةيطنزي بلال روزجلا

مسر وا رخصلاب ارفح ناك ىنرف ريبعت لوأو هسدقم ضرا نم ىنيطسلفلا نفلال قثبني  
ةيطنزي بلال دىلاقتلا تجمدنا ثيح ةيطنزي بلال ةري دالاب لمعلا تاشروب تدجو بشخلى  
يف تسسأت يتلا ةيسدقملا ةسردملا نم تانوقىالا ىماسرل معا يف اذى ىرن .ةيبرعلا ةيولهلاب  
هزيم ةينيطسلف هي نف ةغل لوا لامخال هذه تلاكشور رشع عساتلا نرقلا

لجعو هوجولال مسر روط يذلا ،سدقلا نم هنا ىلع لذي همساو ،يسدقلا انح لثم نىنانف ىرنف  
..ةيطنزي راطل لالخنم ةيبرعلا دىلاقتلا رهظا هبو .ةيبطلل التام ريبعتلا

لوا اناك (١٩٥٩-١٩٥٩) نارذب لامجو (١٨٨٩-١٩٦٤) يبلحلال لىلخك نورخا نونانف كانهو  
ةقدب مهتادلب نومسري اونكو .يناملعلا نفلال ةينيدلا تانوقىالا نىب اروسج ادم نىنانف  
تانوقىالا مسر بولسأ ءبالص ىلع ةظفاحملا عم ةيفارغو توف روص ىلع ءانب ،اهل لىيتم ال  
ةيطنزي بلال دىلاقتلاو

ةسردم لثم ةيمىلعتلا تاسسؤملا لبق نم مهضفر ببسب ايتاذ نوملعتم اوناك داورلا ءالوه  
ايرصح دوهيلا لبق تست تناك يتلا (لىل ازيب)

### (١٩٦٥-١٩٥٥): قيرطلا وفش تاكم ءبقح

ىلا نىي جلال نفل لوحت .ةقوبسم ريغ ءلاح ىلا ىنيطسلفلا نفلال لوحت ١٩٤٨ ءبكن بقق  
هينف ءغل او قلاخ ،ىف نملال يف اوشن نىذلل نونانفلا ءالوه .ةيحض اونوكى ناب ضفر  
ءامتالا ءلاح تسرا ءبقحلا هذه .مالستسالا نود تاتشلا ءلاح نع اوربعيل هديج هيرصب  
نالك نم نع لب ،نىنحو هركاذ نع ربيعى ال ،ىنيطسلفلا نفلال ىساسأ رصنعك ىلحمال  
ةيفارغجلال دودحلا ىطختي اطابترا ...هب اىح اطابترا نوطبترىو هيف نوشى عى

(١٩٦٥-١٩٩٥) نوثحابلا ءبقح

ينانف نىب ءدحو نىطسلف ريرحت ءكرح تقلاخو ،همواقملا نفل ءضه من ١٩٦٧ لالتاح زفح  
نىينيطسلفلا نىنانفلا ءطبار ءلتحملا قطنملا ونانف سسأ امنىب .تاتشلاب نىطسلف  
ةينيطسلفلا ءيفاقثلا ءيولهلا دكؤت همواقملا نم اروص ترهظو ءسالى نفلال صمقتو  
تنبت نىنيطسلفلا نفلال ىف ءروث ،ىلوالا ءضافتنالا دعب ،ىعامجلال روصتلا اذى تدجأو  
هىلحم تاجونم داجى! ىلا نوىنيطسلفلا نونانفلا لوحتف ءيلى ئارسالا تاجتنملا ءعطاقم  
ناىب اذى نكى مل .منونف ءسرامملا نىطلاو لمزلال او باشخال نم لىءادبو دولجال او غابصالال نم  
اينف اعادبا ناك لب ،يساىس

## BY FAYE TZANETOULAKOU

Curator, Dr. Art History

### ين اشل اعزل

(٢٠٢٣-١٩٩٥) هدي دج تاهاجت

ة. فيفاق شل اعزل

ر اصحل تحت هينف دروص اعن بو ينف عم تجم اعشن

هتقال ع لى ع ظافحل عم يميه افمل ا يروص تل ادبم ا ينبتو ادع ين ي طس لفل ا نفل ا رجفت  
هذه لك (ربصلل زمرك) رابصلل تابنو ة يف و لكالو نوت يزل ا ةر جشك ة يدي لقتل ا زومرلاب  
يف رصاعمل ا نفلل يمسرل ا ميل عتل ا ادب هزغ يفو . ة يف ا قتل ا ناعم ة لم ا ح ترركت زومرلاب  
٢٠٠٢ ماع يفو . نونفلل ة يميدال ا تارود ل و ا صق ال ا عم ا ج تسس ا مدن ع ١٩٩٠ ماع فصت نم  
ر صاعل ا نفلل ة حاسم ل و ا تنك ا ذه بو ، رصاعمل ا نفلل (ءاقتل ا) ة عوم جم نونانف ة عبس سس ا  
٢٠٠٢ ماع يف (كيبابش) اهعبتو هزغ يف

هيعامتج ا زكارم ة باثمب اونك لب ، ضرع نكام ا درجم نكت مل ة ينفل ا نكام ال او تاحاسم ا هذه  
بورحل ا طسو اوبرت نيذلا لافطال ة صاخو نفل ا ة سرامم قيرط نع هين هذ ة ي حص ة ياعر مدقت  
ة نوعم) ة دعاسمب رصاعمل ا نفلل هزغ جم ارب سس ا ت ٢٠١٦ و ٢٠١٣ يم ا ع ني ب ام يفو . راصحل او  
تلوم ال ثمف ، هينف جم ارب (قافا) و (ن ا ق ل ا) اتسس وم تدجوا كل ذكو ( يس ن رفل ا ب ع ش ل ا  
هزغ يف نينانفلل ة ما ق ا جم انرب ل و ا (كيبابش) و (ن ا ق ل ا) ة سس وم لال خ نم ة يدي و س ل ا ة موك حل ا  
ر اصحل ا دوي ق م غر م ل ا ع ل ا ب هزغ ينانف طبر ا ذهب و

نم نيسرامم ل ا نينانف نم اتائم جتن ا دق هزغ يف ينفل ا رظنم ل ا نك ٢٠٢٣ ماع لول ح يفو  
لال خ انانف ٥٠٠ نم رثك ا عم تل م ع (ءاقتل ا) ضرع ة حاسمف . ة ينفل ا داومل او تال ا جمل ا فل تخم  
اهت عوم جم يف لم ع ٢٠٠٠٠٠ نم رثك ا (كيبابش) تفاضتسا امنيب ، ة ينفل ا ة حاسل ا لى ع ا دج اوت  
نوعم تجمي نونانفلل ا نك نثي ح هينف تاعمتجم نكلو ، نزاخم نكت مل تاحاسم ل ا هذه . ة ينفل ا  
اعم او ع د ب ي و او مل ع ت ي ل

### ين اشل اعزل

ة ي ع ام جل ا ة ادب ال ا تقو ي ف نفل ا

ض ا ق ن ال ا ني ب نم ه ي ع ادب ا ة داهش

م ل ا ع ري غت ، دي ع ص تل ا ب ة ي ع ام جل ا ة ادب ال ا ت ادب ا مدن ع و ، ٢٠٢٣ ، ربوتك ا نم ع باس ل ا ب ق ع  
اضا ق ن ا م ا و ع ا ترم تس ا ي تل ا ، ة يف ا ق ش ل ا ة ي ت ح تل ا ة ي ن ب ل ا ت ح ب ص ا . م ا ي ل ل ا ل خ هزغ ينانف  
ري اربف لول ح بو . ٢٠٢٣ ربم س ي د نم ع بارل ا يف ة ي ل ي ئ ا رس ا ة ي و ج ه ب ر ض ب ترم د (ءاقتل ا)  
ة ي ن ي ط س ل فل ا ة ف ا ق ش ل ا ة ر ا ز و ري ر ا ق ت ب س ح ه ي ف ا ق ت ه س س وم ٣٢ ترم دت و ا ترم دت ٢٠٢٤  
انانف ٤٥ ل ق ال ا لى ع اهنم ، ة ي ر ش ب ل ا ر ئ ا س خ ل ا تنك ، ة ي ت ح تل ا ة ي ن ب ل ا ري م دت نم رثك ا و لب  
٢٠٢٤ ري اربف و ٢٠٢٣ ربوتك ا ني ب ام اولتق ني ي ف ا ق ت ا ط ش ن و ا با ت ك و ا ي ن ي ط س ل ف  
٢٠٢٥ لال خ رثاكتت م ا ق ر ال او

### ع بارل ا اعزل

ي ف ا ق ت ا ي ا ح ك هزغ ي ل ا ي ن ب

دحت ة ق باس نول ك ش ي انانف ٥٠ نم رثك ا ك ا ر ت ش ا ب ٢٠٢٤ ربم فون يف هزغ ي ل ا ن ي ب ل ا ق ل ط ا  
سفن و هو ، ة ب ض ه ل ا : ة م ي د ق ل ا ن ا ج ه ل ل ا ض ع ب ب ي ن ع ت و ( ن ا س ر ل ا) ل ب ق نم ت م ظ ن ه ي ف ا ق ت  
لى ع د د ش ي ي ل ا ن ي ب ل ا ا ذ ه و . ( ع و ن م م ل ا ف ح ت م ل ا) ل ب ق نم كل ذكو ة ي ن ا ن و ي ل ا ب ( س و ف و ل) ي ن ع م  
ه ي س ا س ا ق ي ا ق ح ة س م خ

١- داه طضال او ة ي ع ام جل ا ة ادب ال ا لكش ل ا ل م ا ق ن نفل ا لال خ نم-

٢- تاقو ع م ل ا لك م غر ع ادب ال او ا ط ع ل ا لى ع رباثن -

٣- م ل ا ع ا ح ن ال ني ي ن ي ط س ل فل ا ت ا و ص ا ل ص ت ن ا د ك و ن و ز ج ا و ح ل ا ي ط خ ت ن فل ا لال خ نم-

٤- ة نم وم ل ا تاه جل ا نم ري ثك ل ا د ح و ت ة ي ن ف ل ا م ع ا ة ع و م ج م ل ة ي ا د ب ل ا ة ط ق ن ل ث م ي ي ل ا ن ي ب ل ا -  
ن ي ن ي ط س ل فل ل ا ة د ع ل ا ب

## BY FAYE TZANETOULAKOU

Curator, Dr. Art History

في سوبأ آءالآ

اىئىضم ،لعتشي يذلا لمآل اناسنالا باقتلا دوع لثمي ثيح ،ةركفل سفن ىلا امئاد دوعت  
دبالا ىلا هناري يفتخت نيح ىلا هقارتحاب

اوشلا آءالآ

لواحت هنالكو فئاذقلا تاوصأ طسو زرغب هطاخم احمالمو هطرشم اهتامسق هوجو مسري يف رمست  
اعم اهتاي ركذ طيخت نا

ل:يوحس فرشأ

دومصلا لثمت يتلا ةرجشلاو نوتيزلا لوقحل ضيبألاو دوسألاب مالحألك اعقاو مسري  
ضرألا هذ نع لتحملا هقلطي يذلا فيزملا اعادالا نم اقمع رشكا ،اقيمع دتمت يتلا اروزجب

احوي هيآ

ةيعامجال ةدابلا ريزانجو نيروسكمل اءئابح مسرتو مطرحم اهلزنم طئوح ىلع اقاروأ قصلت  
اهرسكنت نا لواحت يتلا

لكولق ع لساب

تأدبو .فقوتى مل هءادبا نكلو ،ةيعامجال ةدابلا لال خ اهمسر يتلا هتأحول لك لساب دقف  
رابصلا تابن وا هثلثم ءارمح ةدروك ،تاتابنلاب ريبعتلا ربع امواقم اطخ ذخت هتاموسر  
ىحمت نا نكمي ال يهف اهتلما عم ءرملا ءاسا اهمم ،ةعيبطللك امامت يه نيطللف .مواقملا

يرصحلا انايدي

ريغ تناق اطب ريوصتب برحلل بيجعلا ريثأتل اعمد ررقت اهل ع لءاهلا بارخل مجح  
فقول مهتاموك ىلع طغضلل هزغ جراخ رشبلا نيبي يعول رشنل لاوهالا يدبت اهي ف هياي  
ةدابلا

شفاط لصف

اعدوتسم لثمي اهدسجف .هيديبا ءنوقي لثمت يتلا ءينيطللفلا مالا ءلوطبب لفتحي

ةماركلاب مهتامي محو مهتاذغت لال خ نم اءانبال هلقنت يلاتلاب اذهو اهضراب ناميالو ناكلمل  
مهنادقف نيح هليخت نكمي ال يذلا انزح لال خ نم اضيأ ءنوقيآل هذ رهظت نكلو .رخفلاو

لصفأ عقاول هيلبقتسم ءرظن مدقيو ،ءاناعملو تاتشلاو قرفتلا مغر قلخ يلانيبلا-ه

رركتي وهف .ملاعلا لوح هنيدم ١٢ ب اعقوم ١٩ لال خ نم يزكرم ريغ ضرعك لمعي يلانيبلا  
اهسفن هزغ يف نكمي هبلق نكلو .اهريغو انيئاو نيلرب وندنلو كرويوي يف

يلانيبك ءقومرمل تاناجرمل نم هريغ عم ءبترملا سفن يف ءصاخ هسفن عضوي هزغ يلانيب  
مدقيو اسيني يف ناجرم لفتحي امنيبف .يساسأ لكشب جذومنلا يدحتي هنكلو ،ايسي ني يف  
ءاقبلل ءاجلا لال خ نم هزغ يلانيب رهظي ،يفاقثلا ينطول يدحتلاو يراجتلا نفل  
رصاعملا نفل اخيرات يف هينف هكرح ىوقا رامدلا جرخي امبرلو ،يلودلا نماضتلاو دومصلو

**همواقمك ءادبالو دومصك نفل**

**ناندع دمحا**

نطول الشمم يدامرلاو ضيبألاو دوسألاب ساق عقاو نم ءلءاه امروناب مدقيو ،داصلح مسري  
يقرعلا ريهطتلاو تاتشلا ىلع دهاشك هتأحول فق .مطحملا

**يودعلا دمحا**

لالتحالا لتاقي لب ،هلخادب نيطايشلا مويلا براجي ال يذلا خوغ ناف نانفلل هسفن لوح  
هلوح نم ملاعلا مطرح يذلا يساقلا

**انهم دمحا**

نم ليلقلا لقا رفوت عم شياعتلل هلوامح يف ءينوتركلا تادعاسملا بلع ىلع مسري  
لوح ،ةينفلا هتياورب ءيلودلا تادعاسملا كرشأ ثيح .ءايحل ىلع ءاقبلل تايرورضلا  
همواقم تاحول ىلا ءاقبلل زومر نم نيءجاللا شوغ ءلكو نيحط سايكأ

## BY FAYE TZANETOULAKOU

Curator, Dr. Art History

قويثوتو راكتب:

نواوذب دامع

ىلا أجل ، خبطل او ةئفدتلل اهلماعتسال ةينفلا هلامع اعيمج قرحي نا دامع رطضا نا دعب  
جا نم ةنيمثلا مهئايشاب ةيحضتلل اورطضا فيكو راصحلا تحت سانل اعاضوا قويثوت  
شيخلاب رارمتسال

يخانلا هلاه

نم نوي نيظسل فلانوحزانلا نكمتي شيح هيلعافت تابيكرت قلخت «نكيسكل مجع»  
ةداهش ىلا ةيصخشلا ةانامل او ةمدصلل لوحنت كلذبو .هيبشخ طئارخ ىلع مهحوزن ةلحر بقعت  
هيعامج

دهز ارايو عوبرج داهج

نادقفل او عوجل او عوجل لثم هصلاخ تابغرو رعاشم نالوحي طئاسولا ددعتم نف لالخنم  
ةيفارغوتوفل روصل او تامويديفل او تاموسرلا نم لسلسم ىلا اهنالوحي ولمال او

ندل مناغ

نالك امنيب ةزغب هتمخي نم داوم ةطساوب هينف لامع اعيممصتب هيروث هيعامج ةسرامم روط  
ضرف اذهبو .لمعل او عنصيل ةيبغلا ةفضلاب نينانفل تاميلعتو هيرصق لئاسر لسري  
ىلع بلغتلل هديج هينف ةقيرط قلخو نيني نيظسل فلانينانفل نيب ايفارغج انواعت  
نيني نيظسل فلان ىلع ضورفملا ميسقتلا

ملاس ليهس

يه .ةمواقملم مجعم يهو ةيعامجل ةدابلا ىلع دهشت يه موي دعب موي ف ،ربقلا يه تاركذملا  
ةقيرطلا هانا .ناميال او ةركاذلا ونفلا لالخنم ةيرارمتسال او اعابلل سدقملا باتكلا كلذك  
ديدل لكشلا دضو ةدابلا دض لمال او فوخلان ع «كنارف نا» ةقويثو بسح ةيرصل  
رامعتسال او ةيزانلل

يلوشلا مالس لداع يحي

ةطقنب هيلايروسو هيرعاش اروص قلخي نكلو ،ريوصلتلا ةلأ ةطساوب برحلا لاواه يحي عباتي  
يناسنال فطاعتلل ةيمسال ةميقلا زيزعتلو تاعاشبلا ىلع بلغتلل كلذو هزيمم ةيؤر

ءاقبل او رارمتسال ةيسحل ةغلل ةءارقو ةيلامج ةداهش

ناطلسال مهارب

ءاسام يف هيماس رعاشم يرصب سوماقب هبشا مغانتب تاءاميلل هرتوم اروص طقتلي  
ناسغل ينيظسل فلانرعاشلا ديلاقت بسح ارعاشا رطسي تقولا سفنبو .ةميدق هيقيرغا  
ريرعلاو ينافنك

نيسح دلخ

يف اهروصي ةيمويلا ةايحلا لثمت نيظلا نم ليثامت قلخي هتاودا لكشي هلال مار نم تاحن  
تحت ةايحلا روطت يكاخي يرصع نف لحرم قثوي كلذب وهو .ايلك اهرمدي نا لبق مطحم طيحم  
راصحلا

يدام ازيل

ةطلس لوحو ،مزغ يف ثدحي امل ملال اتمص لوح ةيوق ةلاسركشيت داعبالا ةيثالثل اهلماعا  
مزغ يف ةمامل يمنتو معدت يتل ابوعللا ىلع طغضلا يف ةلودلا

فسوي اسيم

قرولا نم جالوك ئشننتل ةحاتم ةدام ي ا لمعتستو .امدهم اعقاو رانلا طخنم قلخت ةنانف اسيم  
ةمواقملا ةايحلا ةيرارمتسا ززعيم ما امهو ،لمال او لامجل لثمت ةيفارغوتوف روصل او

ميين زتعم

اوسال ةبال رعاشم دش او قمع ريثت ةروصل هذه .مكرو ماوكا ىلا تلوتحت حابشا ةنيدم انيري  
ضعبلا مهضعب دض رشبال اسرام ييتل اعامتجال لالحنال او رامدلا رهاظم

نيسح هاسا

روصي ناك ثيح ،ةيواسا ةصق يوريو ،يضارتفا عقاو و ةيمقر ةئيبي يف ناسنال روصي

## BY FAYE TZANETOULAKOU

Curator, Dr. Art History

طسوتملا رحبلا حرف سركعت قرز الأو يلاق تربل او رفصلألك هجهم ناولأب هلو ح نم سانلا هيف حور ال يدامرلاو ضيبألاب ناسن دسج يفةدهاش ىلا ديدجلا هماسا نف لوح نألا .هناولاو ددمملا مسجلل تاموسرلا طوطخب نيلوبجملا ناخذلاو رامدللاو دامرلا سركعت

سيريغلا اشر

امع اريبع حمالم نودب ةاتفلا هيتاذ ةحول امبرل ،ايفطاع اهب طبترت هنيعم ةحولب كسمتت لكشو ىلع ريغصلل رئاظلك ةحوللا يفةاتفلا هذه بلق نكل .رامدللا رصانع نم لالتحال مدق ارح قلطنيا

ناسح ابر

نم ريرس ىلع هدمم حور الب ةباش لثمت هيلئىافرلا .ةبجحلا لببق ام بولسأب ةحول تعدبا هينامو ديدجلا ليحلل روذب يقست هذه اهتيجضتت. ديهشلا زمر ءارمحلل نامعنا قىاقش روهز .هرح نيظسلفل ةرهذملا

فيريشرلا الع

هفورع ةيئادب همواقم تاودال تاشتكسا مسرتف ةزهاجلا ةركفلا لمعتست هيدحتم ةنانف ربعت ال ةداع ، هينوقيا يرخا رصانع دوجوب ززعتي انه ريثألتا .ةفاذقللك ،ةرابج اهنكلو ةينبلل نم ءزج وهف ءامللا روبنص لثم .ةثيدحلل ءراضحل يفةياغلل ةنيثم اهنكل ،ءيش نع .هزغ نع هيايملل عطقلل لالتحال لببق نم رامدلل تضرعت يفتلا ةيتحتلا

ةيادلل نييمساي

تايالكحو ةايحلا ءزجعم لمحت .ايدباو انييث اهايانت يفةلمحت ةينيطلا اهل يثامت مئ نمو .قيلحتللا نم موعنمل .تقرح متحنجا ناكلو .ادمع نيهوشملاو فارطاللا ءروتبملا لافطاللا .يدباللا مالسللاو حورلا جورخ ىلا ضراللا ىلع ريخاللا سفنلا زمري

نينانف ءتاللكانه ،هزغ يلمانيب يفةنيكرتشملا نينانفلل يمسرلا رايخاللا ادع اميف .انيثا حانج يفةنيكرتشي هزغ نمو نييظسلف

دوراب هرسيم

هرسيم دجوف .هزغ ىلع موجهلل ثلثلا مويلا يفةضراللا يوتسمب راودأ ءسمخ نم هتيب رم بعش نحن « :لوقيو ءادبالا يفةرمتساو هلامعا يفةلمعتساف ماكلرلا نيبةرثبم اعطق ظفحي ،يظحلل تقولل ايرثا اعقوم هبولسا حبصا ءقينيئلا رئاظلك دامرلا نم قلخن يروظسأ نفللا يءوي ثيح اينمزا ديقعت قلخي اذهو اهئاقتخا لاح ءنيئدملا رظانمو ءيفاقثلا تاداعلا ،اجوذزم ارود

تقولاسفن يفةايخيرات افيشراو رصاعم نف وهف

اوش يناعد سيملا

هناك نينيعيلا بولصم ماعل ءحضا فلا ءالابملا دسجت مچحلا ءريبلك تاحولو ليثامت عدبت ،رودملا مدلا نم رهن قوف هدمم يهف .هيريصب زومر ىلا هزغل لصحي ام لوح تاحوللا .يمعا ريغ تاموكحلل لثمم يبرغلا ملاءلاو ،طسوتملا لحواس برك ءلئاه تاراجفنا ب ءطاحم ءنيئدملاو .هظحل ءيا هزم ءزج يلاطت دق تاراجفنا لكت لثم ناب عاو

يسيرج نأ يرام

هنا نظن دعبع نع اهارن نيحو .لماشلا رامدللا ءحلسأ ىلع ءدهاش لثمت ءفرخزم تاطالب مدقت لثمت يهف ،هنم ءيئادعلا بناو جلا فشتكفن قيقدتلا دنعا منيب ،تافرخزو هيطخشوقن .ةبقارملا تاريماكو ءريئاطلا تاريئاطلا ءيموجلا تالتاقملا

ةمخاللا

عطقني ال يذلا طيخلا

اهماع لخدت نيح هزغ نكلو .ءايحلل هيرارمتساو دومص بولسأ لازامو نييظسلفلا نفللا ناكل ءادبالا نم هيماس ءجرد ىلا يقترىو ءاقب ءلئيسو نفللا حبصبي ءيعامجلا هءابلل ثلثلا لءافت اهنكلو ،نفللاب يسفنلا جالعلل تسيل لامعلا لكت .يقرلاو ءفسلفلاو ءطساوب جالعللا ىلا نوؤجلي اياحضك سيل مهبراجت نوؤجلاعي نونانفللا .دودحلا ىصقأل يركف

## BY FAYE TZANETOULAKOU

Curator, Dr. Art History

مهقحو مهودوچوبو مهب فترتعي نا نوبل اطي نيدهاشك لب، يسفنل

يني طسلفل ادب ال م عدت هينف هيفاقث كرك لب، قسنم ضرع مك سيل دلوي يلان ييب هزغ  
هيوهلو، سرخت نا نكمي ال هيني طسلفل تاووالو، مطحي وا رمدي نا نكمي ال يذلا  
جاتنل اطقف سيل دهشن، عقب حل هذه قيثوت لال خ نمو. حسمت نا نكمي ال هيني طسلفل  
هخي رات عقب اس لكشت هبرجت عم هيشامت هيلامج هغل هوشنو هيفاقث لال وحتلا لب، هينفل  
هغل او قل خو. ٢٠٢٣. ربوتك ٧ لبق هودوچوم نكت مل هيري بعت الكشا او عرتخا نين انفل هاله  
لبق نم دسجت نا نكمم ال نم نكت مل بر اجتل هيروص

لوح مناغ هلاسرب، رشع عساتل نرقلا نم هينوقي ال يسدقلا انح لامعا طبري يذلا طيخا  
اذه. هيني طسلفل هيفاقثال ريبعتل نم اماع ١٥٠ لال خ اعطقنا الب رمي «هرزجل او هرخصل»  
نا نكمي ال لال تحالو، هصقي نا نكمي ال هيوجل فصقلاو، راصحل اعطقي نا نكمي ال طيخا  
روذل نم دتم هنا. دامرلو مدلا هتغبصو، لمال او هركاذلا هجيسن، هواقملا طيخ هنا. هفعضي  
ناكمم او نامزلا ربع رخال اب هيني طسلف نانف لك طبري طيخو. هئاهنال لال لبق تسملا يتحو  
هضورفملا دودحلل هيفسعتل اعئاطفل او

..ميجل هيف يتح انكمم نفل لعجي يذلا طيخا هنا

..نفل قيرط نع هنع ربعي ميجل لعجي يذلا طيخا هنا

..هياحل دي قىلع يقبيو دمصي يذلا طيخا هنا

ذم اولتق ني هيفاقث ني طشانو، اباتكو، هيني طسلف انانف ٤٥ ىل سركم جول اتكل اذه  
هبرض لك هيف شيح، راصحل تحت ادبالا هيف نيرمتسملا نين انفال لكلو، ٢٠٢٣ ربوتك ٧١  
:حوضوب خرصي دحت قالاخ لمع لك هيفو هحول لك هيفو هاشرف

..هرح نوكتسو هياحت هيني طسلف. عدبن انلز امو انه انلز امو

# A R T I S T S

AHMED ADNAN / AHMED AL ADAWI / AHMAD MUHANNA /  
ALAA ABU SAIF / ALAÀ AL SHAWA /  
ASHRAF SAHWIEL / AYA JUHA / BASSEL AKLOUK /  
DIANA AL HOSARY / EMAD BADWAN / FADEL TAFESH /  
HALA EID ALNAJI / JEHAD JARBOU / GHANEM AL DEN /  
IBRAHIM AL SULTAN / KHALED HUSSEIN /  
LAMIS DAJANI SHAWWA / LIZA MADI / MAISARA BAROUD /  
MARY ANN JARAISSY / MAYSA YOUSEF /  
MOTAZ NAIM / OSAMA NAQQA HUSSEIN / RASHA AL RAIS /  
RUBA MAHMOUD HASSAN / OLA AL SHARIF /  
SOHAIL SALEM / YASMEEN AL DAYA /  
YAHYA ABDEL SALAM AL SHOULI / YARA ZUHOD

# AHMED ADNAN

## HARVEST

AHMED ADNAN'S SERIES "HARVEST" the largest Panorama of art works made in Palestine describing events of the war in Gaza from cultural, historical, and social perspectives. It traces the impact of these events on the local community. Through a cohesive representational style, Harvest focuses on the stark details and immense suffering endured by the people of Gaza. Adnan believes visual art can shed light on the events that have affected life in Gaza so drastically.

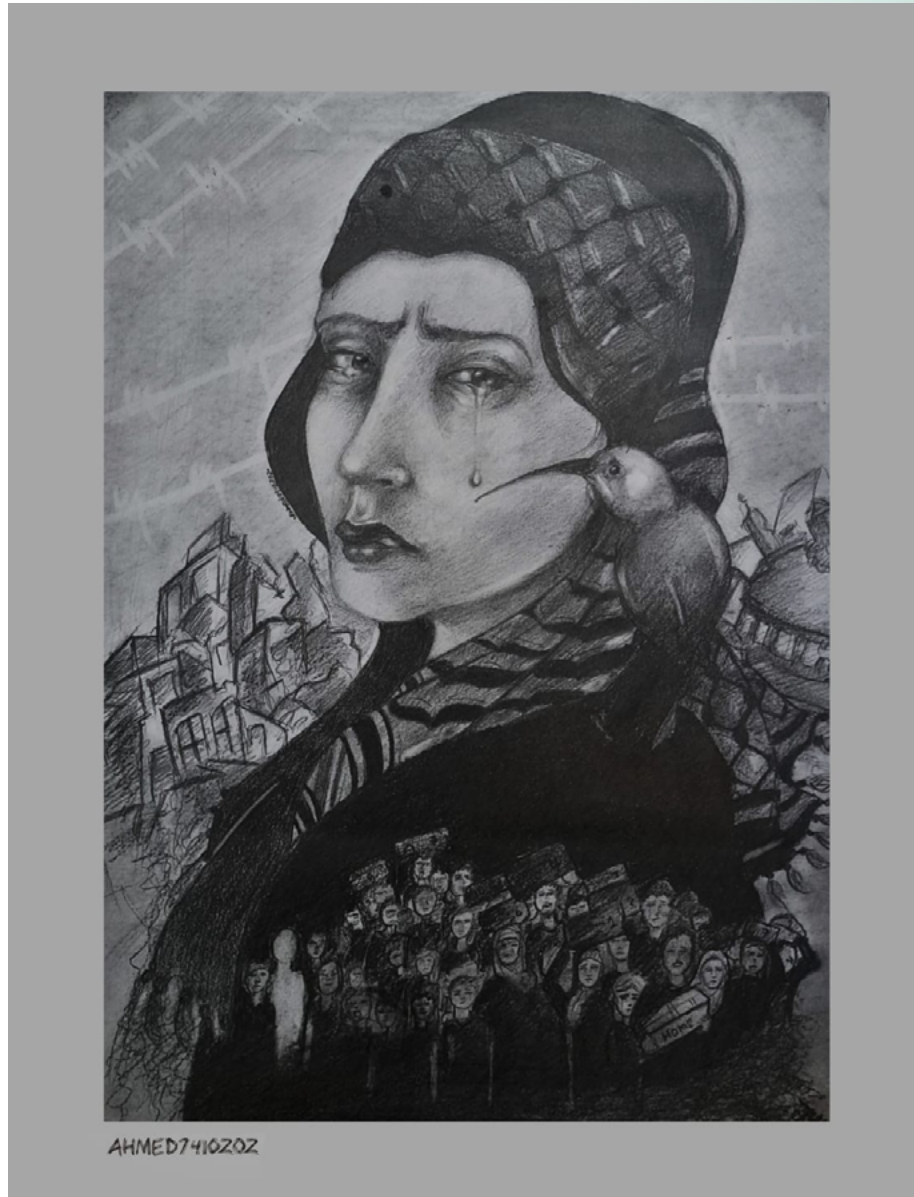
A key work of the series is a 're-telling' of Vermeer's Girl With a Pearl Earring which hangs in the Hague. This work asks the ultimate question of art and beauty:

What beauty can survive the total denial of humanity? The subject of Vermeer's aforementioned work loses all value if humanity is considered disposable. Her portrait stands as a pinnacle of Western art, claiming an aesthetic power at the height of human achievement. In Adnan's "Pearl of Departure", the ghost of Vermeer's girl haunts a young woman subjected to a brutal injustice because she is Palestinian and from Gaza. Whether the "Pearl of Departure" will be presented in or near The Hague is yet to be determined. But it seems Vermeer's Girl is meaningless without her.

## ΣΟΔΕΙΑ

Η ΣΕΙΡΑ ΕΡΓΩΝ ΤΟΥ AHMED ADNAN, "ΣΟΔΕΙΑ", είναι το μεγαλύτερο Πανόραμα καλλιτεχνικών έργων που δημιουργήθηκαν στην Παλαιστίνη, τα οποία περιγράφουν γεγονότα του πολέμου στη Γάζα από πολιτιστικές, ιστορικές και κοινωνικές οπτικές γωνίες. Ανιχνεύει τον αντίκτυπο αυτών των γεγονότων στην τοπική κοινότητα. Μέσα από ένα συνεκτικό αναπαραστατικό στυλ, η ενότητα "Harvest" εστιάζει στις σκληρές λεπτομέρειες και στα τεράστια βάσανα που υπέστη ο λαός της Γάζας. Ο Adnan πιστεύει ότι η εικαστική τέχνη μπορεί να ρίξει φως στα γεγονότα που έχουν επηρεάσει τόσο δραστικά τη ζωή στη Γάζα.

Ένα βασικό έργο της ενότητας αποτελεί μια επανερμηνεία του έργου του Vermeer, "Το Κορίτσι με το Μαργαριταρένιο Σκουλαρίκι", που βρίσκεται στη Χάγη. Αυτό το έργο θέτει το απόλυτο ερώτημα της τέχνης και της ομορφιάς: Ποια ομορφιά μπορεί να επιβιώσει την πλήρη άρνηση της ανθρωπιάς; Το θέμα του έργου του Vermeer χάνει κάθε αξία αν η ανθρωπιά θεωρείται αναλώσιμη. Το πορτρέτο του αποτελεί την κορωνίδα της δυτικής τέχνης, διεκδικώντας μια αισθητική δύναμη στο απόγειο των ανθρώπινων επιτευγμάτων. Στο "Μαργαριτάρι της Αναχώρησης" του Adnan, το φάντασμα του κοριτσιού του Vermeer στοιχειώνει μια νεαρή γυναίκα που έχει υποστεί μια βάνουση αδικία επειδή είναι Παλαιστίνια και από τη Γάζα. Το αν το "Μαργαριτάρι της Αναχώρησης" θα εκτεθεί ποτέ στη Χάγη παραμένει αμφίβολο. Αλλά μοιάζει σαν το Κορίτσι του Vermeer να μην έχει νόημα χωρίς αυτό.



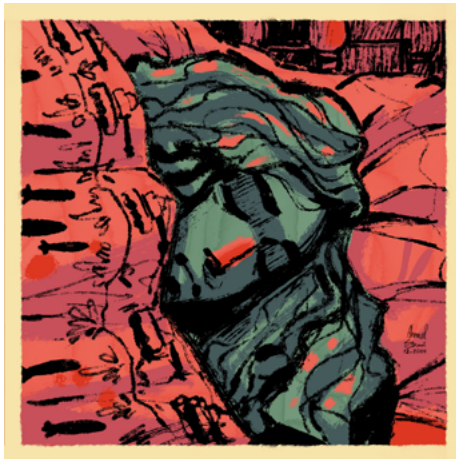
# AHMED AL ADAWI

## BY FIRE AND BLOOD

"FIRE AND BLOOD" SERVES AS A VISUAL SCREAM, documenting the deeply human experience that violence seeks to erase. A visual space to engage with the collective massacre in Gaza, through the lens of art, attempts to capture the profound human tragedy that cannot be conveyed by words or numbers alone. These digital paintings are not just a portrayal of tragedy, but a visual space for engaging with pain, loss, and resilience, where symbols and expressions blend in artistic compositions reflecting the Palestinian experience under bombardment, death, and destruction. In the face of annihilation, art becomes a form of resistant memory.

## ΔΙΑ ΠΥΡΟΣ ΚΑΙ ΑΙΜΑΤΟΣ

ΤΟ "ΔΙΑ ΠΥΡΟΣ ΚΑΙ ΑΙΜΑΤΟΣ" ΛΕΙΤΟΥΡΓΕΙ ΩΣ ΜΙΑ ΟΠΤΙΚΗ ΚΡΑΥΓΗ, καταγράφοντας την βαθιά ανθρώπινη εμπειρία που η βία επιδιώκει να σβήσει. Ένας οπτικός χώρος που εμπλέκει τον θεατή στη συλλογική σφαγή της Γάζας, μέσα από το πρίσμα της τέχνης, επιχειρώντας να αποτυπώσει τη βαθιά ανθρώπινη τραγωδία που δεν μπορεί να αποδοθεί μόνο με λέξεις ή αριθμούς. Αυτά τα ψηφιακά έργα δεν απεικονίζουν απλώς την τραγωδία. Μας εμπλέκουν με τον πόνο, την απώλεια και την ανθεκτικότητα, μέσα από σύμβολα και εκφράσεις, τα οποία αναμειγνύονται σε καλλιτεχνικές συνθέσεις και αντανακλούν την παλαιστινιακή εμπειρία υπό τον βομβαρδισμό, τον θάνατο και την καταστροφή. Αντιμέτωπη με την εξόντωση, η τέχνη γίνεται μια μορφή ανθεκτικής μνήμης.



# AHMAD MUHANNA

## DEVOID OF HOPE

"BEFORE THE WAR, I worked as an artist in local institutions, serving as a psychological therapist through the arts. This came to a halt as life, which had been going well, suddenly flipped, and I became an artist devoid of hope. This is where the title of the series came from, through which I painted many of the visual scenes I witnessed daily: standing in long lines for water and food, the policy of starvation, the genocide, forced displacement, and the many terrifying stories and details that happened during this war.

It is the artist's responsibility, living under such conditions, to document the daily life of the war and express the suffering of the people to send a message to all nations that there is an innocent people enduring everything happening to them. As I began to translate these events and suffering, I started drawing on boxes of international aid. This became a philosophical artistic subject, showing how these boxes, which we had never known before, became familiar through the war. I painted war scenes and daily life on them. Due to the scarcity of art supplies, I also drew on paper from books and magazines, using simple materials like charcoal and leftover coffee."

## ΧΩΡΙΣ ΕΛΠΙΔΑ

«ΠΡΙΝ ΑΠΟ ΤΟΝ ΠΟΛΕΜΟ, εργαζόμουν ως καλλιτέχνης σε τοπικά ιδρύματα, ασχολούμενος με την ψυχοθεραπεία μέσω των τεχνών. Αυτό σταμάτησε καθώς η ζωή ξαφνικά άλλαξε και έγινα ένας καλλιτέχνης χωρίς ελπίδα. Από εκεί προήλθε ο τίτλος των έργων. Ζωγράφισα πολλές από τις οπτικές σκηνές που βίωνα καθημερινά: να στέκομαι σε μεγάλες ουρές για νερό και φαγητό, την πολιτική της λιμοκτονίας, τη γενοκτονία, τον αναγκαστικό εκτοπισμό και τις πολλές τρομακτικές ιστορίες και λεπτομέρειες που συνέβησαν κατά τη διάρκεια αυτού του πολέμου.

Είναι ευθύνη του καλλιτέχνη, που ζει υπό τέτοιες συνθήκες, να καταγράφει την καθημερινή ζωή του πολέμου και να εκφράζει τα βάσανα των ανθρώπων, στέλνοντας ένα μήνυμα σε όλα τα έθνη ότι υπάρχει ένας αθώος λαός που υπομένει όλα όσα του συμβαίνουν. Καθώς άρχισα να καταγράφω αυτά τα γεγονότα, άρχισα να σχεδιάζω σε κουτιά διεθνούς βοήθειας. Αυτό έγινε ένα φιλοσοφικό καλλιτεχνικό θέμα, δείχνοντας πώς αυτά τα κουτιά, που δεν είχαμε γνωρίσει ποτέ πριν, έγιναν οικεία μέσα από τον πόλεμο. Ζωγράφισα σκηνές πολέμου και την καθημερινή ζωή πάνω τους. Λόγω της έλλειψης καλλιτεχνικών υλικών, σχεδιάζα επίσης σε χαρτί από βιβλία και περιοδικά, χρησιμοποιώντας απλά υλικά όπως κάρβουνο και υπολείμματα καφέ.»



# ALAA ABU SAIF

## IF I DO NOT BURN, AND YOU DO NOT BURN, WHO WILL BURN TO LIGHT THE WAY?

"MATCHSTICKS STAND OUT AS A POWERFUL SYMBOL of human existence and its eventual decay. A matchstick, in its moment of ignition, lights up for a brief time, only to end in ashes—much like human life. But, despite the matchstick's decay, it holds the potential to ignite once again. This possibility symbolizes hope and renewal, representing the human capacity to overcome hardships and begin anew. While I live in Gaza, I have survived several wars. After every destruction, colors and spaces lose their uniqueness and warmth, transforming into a gray public space, where attempts to suppress and demolish seize our existence.

We go now through a state of despair after a journey of displacement, one of the hardest in history. After the martyrdom of my father, the bombing of my house, and the destruction of most of my possessions and my private studio, I continued practicing painting on the walls of my tent. Materials for painting were scarce, as most of my tools were destroyed during the bombing. I started producing my works in my tent, which became my studio and refuge, where I lived and painted after being displaced more than three times. During this period, I sought to affirm my existence in this world that had been destroyed by the actions of the Zionist occupation. With my patience, presence, and paintings, I resist this occupying entity.

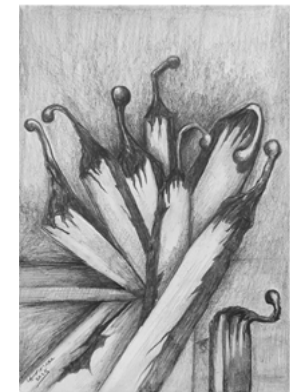
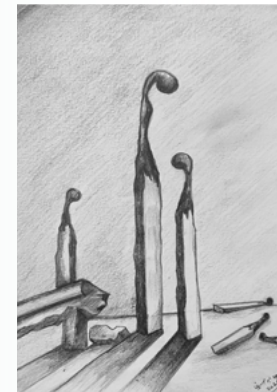
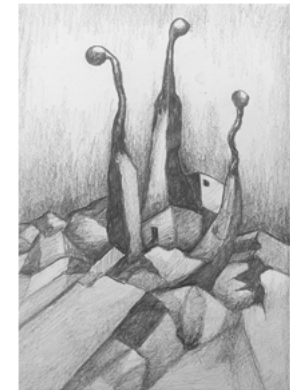
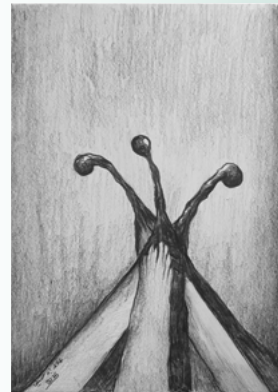
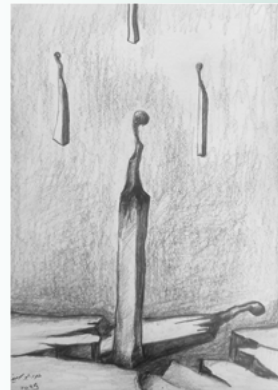
Based on the concept of compositions in the artwork, I was inspired by the scene of human clusters representing matchsticks, scattered as groups or individuals. The shadow of the human being represents the horizon line, which carries memories of the past and future. Additionally, the philosophy of using the color gray is clarified as a symbol of the neutrality of the land and a safe refuge. I chose these elements to highlight the burning experiences of people in Gaza, standing in water queues, in front of distribution centers and dying under the falling aid parachutes from the air."

## ΑΝ ΔΕΝ ΚΑΩ ΕΓΩ, ΑΝ ΔΕΝ ΚΑΕΙΣ ΕΣΥ, ΠΩΣ ΘΑ ΓΕΝΟΥΝΕ ΤΑ ΣΚΟΤΑΔΙΑ ΦΩΣ;

«ΤΑ ΣΠΙΡΤΑ ΞΕΧΩΡΙΖΟΥΝ ΩΣ ΕΝΑ ΙΣΧΥΡΟ ΣΥΜΒΟΛΟ της ανθρώπινης ύπαρξης και της τελικής της παρακμής. Ένα σπύρτο ανάβει για ένα σύντομο χρονικό διάστημα, μόνο και μόνο για να καταλήξει σε στάχτη - όπως ακριβώς και η ανθρώπινη ζωή. Αλλά, παρά τη φθορά του σπύρτου, έχει τη δυνατότητα να αναφλεγεί ξανά. Αυτή η πιθανότητα συμβολίζει την ελπίδα και την ανανέωση. Όσο ζω στη Γάζα, έχω επιβιώσει από αρκετούς πολέμους. Μετά από κάθε καταστροφή, τα χρώματα και οι χώροι χάνουν τη μοναδικότητα και τη ζεστασιά τους και μεταμορφώνονται σε έναν γκριζο δημόσιο χώρο, όπου λαμβάνουν χώρα προσπάθειες καταστολής και κατεδάφισης.

Μετά το μαρτύριο του πατέρα μου, τον βομβαρδισμό του σπιτιού μου και την καταστροφή των περισσότερων από τα υπάρχοντά μου και του ιδιωτικού μου στούντιο, συνέχισα να ζωγραφίζω στους τοίχους της σκηνής μου. Τα υλικά για τη ζωγραφική ήταν λιγοστά, καθώς τα περισσότερα από τα εργαλεία μου καταστράφηκαν κατά τη διάρκεια του βομβαρδισμού. Άρχισα να δημιουργώ τα έργα μου στη σκηνή μου, η οποία έγινε το στούντιο και το καταφύγιό μου, όπου έζησα και ζωγράφισα αφού εκτοπίστηκα περισσότερες από τρεις φορές. Κατά τη διάρκεια αυτής της περιόδου, προσπάθησα να επιβεβαιώσω την ύπαρξή μου σε αυτόν τον κόσμο που είχε καταστραφεί από τις ενέργειες της σιωνιστικής κατοχής. Με την υπομονή, την παρουσία και τους πίνακές μου, αντιστέκομαι σε αυτή την κατοχική οντότητα.

Βασισμένος στην έννοια της καλλιτεχνικής «σύνθεσης», εμπνεύστηκα τις ανθρώπινες συστάδες που αναπαριστούν σπύρτα, διάσπαρτα ως ομάδες ή άτομα. Η σκιά του ανθρώπου αντιπροσωπεύει τη γραμμή του ορίζοντα, η οποία μεταφέρει μνήμες του παρελθόντος και του μέλλοντος. Επιπλέον, η φιλοσοφία της χρήσης του γκρι χρώματος αναδεικνύεται ως σύμβολο της ουδετερότητας της γης και ενός ασφαλούς καταφυγίου. Επέλεξα αυτά τα στοιχεία για να αναδείξω τις καιόμενες εμπειρίες των ανθρώπων στη Γάζα, που στέκονταν σε ουρές για νερό, μπροστά σε κέντρα διανομής και πέθαιναν κάτω από τα κιβώτια βοήθειας που έπεφταν από τον αέρα με αλεξίπτωτα.»



# ALAÀ AL SHAWA

## FADING GESTURES

EVERY NIGHT, AS THE GENOCIDE SURROUNDS HER HOME in North Gaza, Alaà Al Shawa has made a watercolor that comes from deep inside herself. Each work looks into the impact of shock and fear on facial features, for example, eyes that appear wide and in an unfamiliar state. In a dream, or nightmare, Al Shawa was in the car of a high-speed train, moving so fast that she could barely breathe. As she describes it:

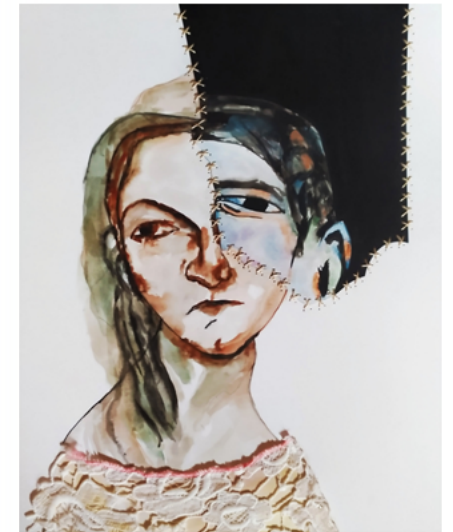
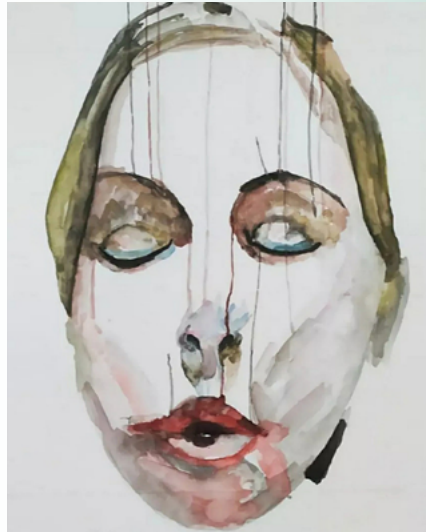
“The atmosphere was foggy and vision was blurred; staying on that train was the only solution for survival! I hear distant voices, very distant, like someone calling from deep within a well. I was terrified to the point of death, but one voice among those was clear, and I screamed with a strength I didn't know was inside me, as if I were screaming for all the frightened souls on earth. To the point that my throat was about to burst, and my vocal cords were on the verge of breaking! But all of it was in vain; I screamed, but without a voice. My voice was trapped inside my head and throat, unable to be heard by others. I screamed loudly, but I was the only one who could hear the sound...

My thoughts scattered over the souls of people, like fragmented letters strewn on old, faded paper. They seek an escape from this world, or perhaps from me! I unleashed my childlike and mature thoughts to take over humanity ... painting smiles on their lips and driving away sadness. Like a cool breeze in spring, spreading joy along the long roads of sorrow and transforming despair into hope. Don't confine your thoughts; let them run free, and you will see their impact reflected on the faces of those around you ... and through that, you will see yourself.”

## ΞΕΘΩΡΙΑΣΜΕΝΕΣ ΧΕΙΡΟΝΟΜΙΕΣ

ΚΑΘΕ ΒΡΑΔΥ, ΚΑΘΩΣ Η ΓΕΝΟΚΤΟΝΙΑ ΠΕΡΙΒΑΛΛΕΙ ΤΟ ΣΠΙΤΙ ΤΗΣ στη Βόρεια Γάζα, η Alaà Al Shawa δημιουργεί μια ακουαρέλα που πηγάζει από τα βάθη της καρδιάς της. Κάθε έργο εξετάζει τον αντίκτυπο του σοκ και του φόβου στα χαρακτηριστικά του προσώπου, για παράδειγμα, τα μάτια που φαίνονται ορθάνοιχτα και ανοίκεια. Σε ένα όνειρο, ή εφιάλτη, η Al Shawa βρισκόταν στο βαγόνι ενός τρένου υψηλής ταχύτητας, κινούμενη τόσο γρήγορα που μόλις που μπορούσε να αναπνεύσει. Όπως το περιγράφει: «Η ατμόσφαιρα ήταν ομιχλώδης και η όραση μου θολή. Η παραμονή σε αυτό το τρένο ήταν η μόνη λύση για την επιβίωση! Ακούω μακρινές φωνές, πολύ μακρινές, σαν κάποιος να φωνάζει από βαθιά μέσα σε ένα πηγάδι. Ήμουν τρομοκρατημένη μέχρι θανάτου, αλλά μια φωνή ανάμεσά τους ήταν καθαρή, και ούρλιαξα με μια δύναμη που δεν ήξερα ότι υπήρχε μέσα μου, σαν να ούρλιαζα για όλες τις φοβισμένες ψυχές στη γη. Σε σημείο που ο λαιμός μου ήταν έτοιμος να σκάσει, και οι φωνητικές μου χορδές ήταν στα πρόθυρα να σπάσουν! Αλλά όλα ήταν μάταια. Ούρλιαξα, αλλά χωρίς φωνή. Η φωνή μου ήταν παγιδευμένη μέσα στο κεφάλι και το λαιμό μου, αδύνατον να την ακούσουν άλλοι. Ούρλιαξα δυνατά, αλλά ήμουν η μόνη που μπορούσε να ακούσει τον ήχο...

Οι σκέψεις μου σκορπίστηκαν στις ψυχές των ανθρώπων, σαν θρυμματισμένα γράμματα σκορπισμένα σε παλιό, ξεθωριασμένο χαρτί. Αναζητούσαν μια απόδραση από αυτόν τον κόσμο, ή ίσως από εμένα! Απελευθέρωσα τις παιδικές και ώριμες σκέψεις μου για να κατακτήσουν την ανθρωπότητα... ζωγραφίζοντας χαμόγελα στα χείλη τους και διώχνοντας τη θλίψη. Σαν ένα δροσερό αεράκι την άνοιξη, σκορπίζοντας χαρά στους μακρινούς δρόμους της θλίψης και μετατρέποντας την απελπισία σε ελπίδα. Μην περιορίζεις τις σκέψεις σου - άφησέ τις να κυλήσουν ελεύθερα, και θα δεις τον αντίκτυπό τους να αντανakλάται στα πρόσωπα των γύρω σου... και μέσα από αυτό, θα δεις τον εαυτό σου.»



# ASHRAF SAHWIEL

## SPACES

"THE EXHIBITION IS CENTERED AROUND THE OLIVE TREE - a partner of the Palestinian body in amputation, ethnic cleansing, and both symbolic and physical colonization. The olive tree has always held an existential connection to life and Palestinian heritage.

Throughout our continuous displacement, the occupation has transformed us into consumable tools, seeking whatever sustains life - water, food, fuel. They have stripped us of our humanity and our cultural and human relationships with everything. In a stark contrast and tragic irony to the former life of the Gazan citizen, many now resort to destroying and uprooting ancient olive trees - at times to cook, and at other times to make a living.

These fruitful, age-old trees are being burned - like time and like our lives. My artistic vision turned toward creating works that address this issue, using various techniques and tools that explore the relationship between our bodies and the body of the olive tree, within an environment now suffering from desertification. This desertification comes amid the crowding and cornering of the Palestinian people into the edges of displacement from the Gaza Strip - just as tree trunks are crammed into stoves. Thousands of fruitful trees have been crammed in and burned. Has our fate become like that of the ancient olive tree - to ash and extinction?"

## ΧΩΡΟΙ

«ΤΟ ΕΡΓΟ ΕΙΝΑΙ ΕΠΙΚΕΝΤΡΩΜΕΝΟ ΣΤΗΝ ΕΛΙΑ - ένα σύντροφο του παλαιστινιακού σώματος στον ακρωτηριασμό, την εθνοκάθαρση και τον συμβολικό και φυσικό αποικισμό. Η ελιά πάντα διατηρούσε μια υπαρξιακή σύνδεση με τη ζωή και την παλαιστινιακή κληρονομιά. Καθ' όλη τη διάρκεια του συνεχούς εκτοπισμού μας, η κατοχή μάς έχει μετατρέψει σε αναλώσιμα εργαλεία, να αναζητούμε ό,τι συντηρεί τη ζωή - νερό, τροφή, καύσιμα. Μας έχουν απογυμνώσει από την ανθρωπιά μας και τις πολιτιστικές και ανθρώπινες σχέσεις μας με τα πάντα. Σε έντονη αντίθεση και τραγική ειρωνεία με την προηγούμενη ζωή του πολίτη της Γάζας, πολλοί τώρα καταφεύγουν στην καταστροφή και το ξερίζωμα αρχαίων ελαιόδεντρων - άλλοτε για να μαγειρέψουν και άλλοτε για να βγάλουν τα προς το ζην.

Αυτά τα καρποφόρα, αιωνόβια δέντρα καίγονται - όπως ο χρόνος και όπως οι ζωές μας. Το καλλιτεχνικό μου όραμα στράφηκε στη δημιουργία έργων που ασχολούνται με αυτό το ζήτημα, χρησιμοποιώντας διάφορες τεχνικές και εργαλεία που εξερευνούν τη σχέση μεταξύ των σωμάτων μας και του σώματος της ελιάς, μέσα σε ένα περιβάλλον που τώρα υποφέρει από ερημοποίηση. Αυτή η ερημοποίηση έρχεται εν μέσω του συνωστισμού και του περιορισμού του παλαιστινιακού λαού στα όρια του εκτοπισμού από τη Λωρίδα της Γάζας - όπως ακριβώς οι κορμοί δέντρων στοιβάζονται σε σόμπες. Χιλιάδες καρποφόρα δέντρα έχουν στοιβαχθεί και καεί. Έχει γίνει η μοίρα μας σαν αυτή της αρχαίας ελιάς - στη στάχτη και την εξαφάνιση;»



Ashraf Sahwiel 2025



Ashraf Sahwiel 2025



Ashraf Sahwiel 2025

# AYA JUHA

## HUMAN, NOT A NUMBER

AYA JUHA SETS OUT TO DOCUMENT A BODY IN FRAGMENTS grounding the political circumstances in the visceral reality of bodily existence. By symbolizing pain and unbelievable hardships, she evokes a collective sense of belonging and purpose. Individual lives, fragmented from each other, become a collective experience. Juha presents two works for the Biennale, Prisoner and Anas, made in her "fragmented" home. Her home serves as both the setting of the stories she tells and the location of the work, becoming an integral part of the works themselves. Located in North Gaza, she is part of a brave few who have refused to leave.

"Anas was martyred one month before his wedding. Nineteen of us were trapped in one room without food or drink, and Anas's body and that of the girl lay on the ground in front of us for two days while we were unable to do anything. The soldiers fired bullets inside the house and threw bombs at us, hitting Anas's body. But my father managed to bury them after two days, in a small hole in our tiny plot of land beside the

house. We remained trapped for a whole week, knowing nothing of what was happening outside the room, except for the attempts to shield ourselves from the bullets and bombs fired by the soldiers inside our home. After a few days, when the tanks moved from our area to another, we managed to escape. My family members were able to retrieve their bodies and take them to the cemetery."

## ΑΝΘΡΩΠΟΣ, ΟΧΙ ΑΡΙΘΜΟΣ

Η ΑYA JUHA ΚΑΤΑΓΡΑΦΕΙ ΕΝΑ ΣΩΜΑ ΣΕ ΘΡΑΥΣΜΑΤΑ, θεμελιώνοντας τις πολιτικές συνθήκες στην σπλαχνική πραγματικότητα της σωματικής ύπαρξης. Συμβολίζοντας τον πόνο και τις απίστευτες δυσκολίες, προκαλεί ένα συλλογικό αίσθημα του ανήκειν και του σκοπού. Οι ατομικές ζωές, κατακερματισμένες η μία από την άλλη, γίνονται μια συλλογική εμπειρία.

Η Juha παρουσιάζει δύο έργα για την Μπιενάλε, τον Φυλακισμένο και τον Anas, τα οποία δημιουργήθηκαν στο κατακερματισμένο σπίτι της. Το σπίτι της χρησιμεύει τόσο ως το σκηνικό των ιστοριών που αφηγείται όσο και ως ο τόπος των έργων, αποτελώντας αναπόσπαστο μέρος των ίδιων των έργων. Βρίσκεται στη Βόρεια Γάζα και αποτελεί μέρος μιας ομάδας από λίγους γενναίους που αρνήθηκαν να φύγουν.

«Ο Άνας μαρτύρησε ένα μήνα πριν από τον γάμο του. Δεκαεννέα από εμάς ήμασταν παγιδευμένοι σε ένα δωμάτιο χωρίς φαγητό και ποτό, και το σώμα του Άνας και του κοριτσιού έμειναν στο έδαφος μπροστά μας για δύο ημέρες, ενώ εμείς δεν μπορούσαμε να κάνουμε τίποτα. Οι στρατιώτες πυροβόλησαν μέσα στο σπίτι και πέταξαν βόμβες εναντίον μας, χτυπώντας το σώμα του Άνας. Αλλά ο πατέρας μου κατάφερε να τους θάψει μετά από δύο ημέρες, σε μια μικρή τρύπα στο μικροσκοπικό μας οικόπεδο δίπλα στο σπίτι. Μείναμε παγιδευμένοι για μια ολόκληρη εβδομάδα, χωρίς να γνωρίζουμε τίποτα για το τι συνέβαινε έξω από το δωμάτιο, εκτός από τις προσπάθειες να προστατευτούμε από τις σφαίρες και τις βόμβες που έριχναν οι στρατιώτες μέσα στο σπίτι μας. Μετά από λίγες μέρες, όταν τα τανκς μετακινήθηκαν από την περιοχή μας σε μια άλλη, καταφέραμε να δραπέτευσουμε. Τα μέλη της οικογένειάς μου κατάφεραν να ανακτήσουν τα σώματά τους και να τα μεταφέρουν στο νεκροταφείο.»



# BASSEL AKLOUK

## THE ROSE OF GAZA

BASSEL AKLOUK HAS LIVED AND WORKED through all of the wars in Gaza. However, during this war, ALL of Aklouk's paintings were destroyed - every single one. After six months of the war, just before they closed the borders, he managed to leave for Cairo. Aklouk was left only with one thought to contemplate: What would it mean to work again after all his life's work had vanished from the Earth? For months, he could not find the will to start working again. Continuing where he left off seemed impossible - it required a creative force strong enough to carry the weight of all the work that was lost. This profound obstacle led Aklouk to turn his attention to research rather than production, which eventually led to something remarkable. He thought about all the aspects of the war, his experiences and displacements, the complicity of most of the world powers, the news media, et cetera. What could his painting do in the face of all this? An overarching concept emerged: Visual art speaks a language that does not require translation, and so can reach the whole world. Aklouk sought to write a letter to the world, just to say "We are a Palestinian community, and we have the right to live."

A series of ten paintings followed. These works possess a healing power. They utilize form for its eternal, mystical and symbolic qualities, all with a kind of self-reflective humility. Art, the creative act, has been said to be, since the beginning of humanity, ultimately an act of resistance - resistance against death, containing within it the struggle of a people to survive and live with dignity. As Aklouk says about Palestinians, "We are alone fighting the occupation. It is healing to know there are people fighting for us." His work is a tribute to visual forms capable of telling this story.

## ΤΟ ΡΟΔΟ ΤΗΣ ΓΑΖΑΣ

Ο BASSEL AKLOUK ΕΖΗΣΕ, ΕΡΓΑΣΤΗΚΕ ΚΑΙ ΕΠΙΒΙΩΣΕ από όλους τους πολέμους στη Γάζα. Ωστόσο, κατά τη διάρκεια αυτού του πολέμου, όλοι οι πίνακές του καταστράφηκαν - όλοι ανεξαιρέτως. Μετά από έξι μήνες πολέμου, λίγο πριν κλείσουν τα σύνορα, κατάφερε να φύγει για το Κάιρο. Ο Ακλουκ είχε μόνο μία σκέψη: Τι θα σήμαινε να εργαστεί ξανά αφού όλο το έργο της ζωής του είχε εξαφανιστεί από τη Γη; Για μήνες, δεν μπορούσε να βρει τη θέληση να αρχίσει να εργάζεται ξανά. Το να συνεχίσει από εκεί που σταμάτησε φαινόταν αδύνατο - απαιτούσε μια δημιουργική δύναμη αρκετά ισχυρή για να σηκώσει το βάρος όλου του έργου που χάθηκε. Αυτό το βαθύ εμπόδιο οδήγησε τον Ακλουκ να στρέψει την προσοχή του στην έρευνα παρά στην παραγωγή, κάτι που τελικά οδήγησε σε κάτι αξιοσημείωτο.

Σκέφτηκε όλες τις πτυχές του πολέμου, τις εμπειρίες και τους εκτοπισμούς του, τη συνενοχή των περισσότερων παγκόσμιων δυνάμεων, των μέσων ενημέρωσης κ.λπ. Τι θα μπορούσε να κάνει η ζωγραφική του μπροστά σε όλα αυτά; Μια γενική ιδέα αναδύθηκε: Η εικαστική τέχνη μιλάει μια γλώσσα που δεν απαιτεί μετάφραση και έτσι μπορεί να φτάσει σε ολόκληρο τον κόσμο. Ο Ακλουκ προσπάθησε να γράψει μια επιστολή στον κόσμο, απλώς για να πει «Είμαστε μια παλαιστινιακή κοινότητα και έχουμε το δικαίωμα να ζήσουμε».

Ακολούθησε μια σειρά από δέκα πίνακες. Αυτά τα έργα διαθέτουν μια θεραπευτική δύναμη. Χρησιμοποιούν τη φόρμα για τις αιώνιες, μυστικιστικές και συμβολικές της ιδιότητες με μια αναστοχαστική ταπεινότητα. Η τέχνη, η δημιουργική πράξη, έχει ειπωθεί ότι είναι, από την αρχή της ανθρωπότητας, τελικά μια πράξη αντίστασης - αντίσταση στον θάνατο, που περιέχει μέσα της τον αγώνα ενός λαού να επιβιώσει και να ζήσει με αξιοπρέπεια. Όπως λέει ο Ακλουκ για τους Παλαιστίνιους, «Είμαστε μόνοι μας να πολεμούμε την κατοχή. Είναι θεραπευτικό να γνωρίζουμε ότι υπάρχουν άνθρωποι που αγωνίζονται για εμάς». Το έργο του είναι ένας φόρος τιμής στις οπτικές μορφές που είναι ικανές να αφηγηθούν αυτή την ιστορία.



# DIANA AL HOSARY

## GAZA 2024

THE ARTWORKS "GAZA 2024" REFLECT THE EXPERIENCE OF THE WAR throughout the entire year of destruction and extermination, with no pause, facing challenges that evolve every day and every second. They express the magnitude of the destruction the artist has experienced in Gaza and how that image appeared from her perspective as an artist. Diana Al Hosary uses digital techniques and artificial intelligence to modify images, but without tampering with the clear details of the destruction's impact.

"Gaza was not just destroyed, but our dreams, hopes, homes, and everything we owned was destroyed. No one escaped from that war. It was a flood that swept everything away".

"I am in the northern part of Gaza, while most artists are located in the south. Here, I am almost alone in the north, separated from everyone I knew, whether friends or family. Therefore, I decided that the exhibition will be digital via social media, so everyone can view the artworks that reflect what I am going through from this unique and horrific personal experience."

## GAZA 2024

ΤΑ ΕΡΓΑ "GAZA 2024" ΑΝΤΙΚΑΤΟΠΤΡΙΖΟΥΝ ΤΗΝ ΕΜΠΕΙΡΙΑ ΤΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ καθ' όλη τη διάρκεια της χωρίς διακοπή καταστροφής και εξόντωσης, αντιμετωπίζοντας προκλήσεις που εξελίσσονται κάθε μέρα και κάθε δευτερόλεπτο. Εκφράζουν το μέγεθος της καταστροφής που βίωσε η καλλιτέχίδα στη Γάζα και πώς αυτή η εικόνα φάνηκε από την εικαστική της ματιά. Η Diana Al Hosary χρησιμοποιεί ψηφιακές τεχνικές και τεχνητή νοημοσύνη για να τροποποιήσει εικόνες, χωρίς όμως να παραποιήσει τις σαφείς λεπτομέρειες των επιπτώσεων της καταστροφής. «Η Γάζα δεν καταστράφηκε απλώς, τα όνειρά μας, οι ελπίδες μας, τα σπίτια μας και όλα όσα είχαμε καταστράφηκαν. Κανείς δεν γλίτωσε από αυτόν τον πόλεμο. Ήταν μια πλημμύρα που σάρωσε τα πάντα». «Είμαι μόνη μου στη Βόρεια Γάζα ενώ οι περισσότεροι καλλιτέχνες είναι στον Νότο. Γιαυτό ήθελα τα έργα μου να είναι ψηφιακά για να μπορούν να τα μοιραστούν όλοι οι άνθρωποι και να καταλάβουν τις φριχτές συνθήκες της ζωής μου».



# EMAD BADWAN

## LIVE BROADCAST

THE PHOTOGRAPHER LEAVES THE FILMING LOCATION just minutes before the live broadcast to go to the restroom. During the long queue of impatient and complaining people, the war is discussed by those waiting in line, with political, military, and social details. Some praise the photographer, while others criticize him for not covering a particular incident or for not being at a certain location during a specific event. The photographer's tension and need to use the restroom continue until he reluctantly returns to the live broadcast to cover an ongoing massacre.

"As an artist, I am driven by the pursuit of capturing the subtle beauty of our constantly evolving world. As a photojournalist, I am driven by the pursuit of following events. My artistic vision is based on the belief that art has the power to evoke emotions, spark thought, and promote empathy and understanding between people.

I remember finding my wife and father setting fire to books and notebooks so my wife could cook, and I used my paintings and burned them with my own hands. It became the first thing for an artist to live and protect his family than to protect his painting. My need as an artist to practice art is like people's need to drink.

The film's location was home to 60,000 people. Our lives became a queue and a wait. Before the war, every house had one or two bathrooms. During the war, there was a bathroom for every 600 families. I'm telling people to stop the massacres and the bloodshed and give us a chance to live. We need to rest. We've been deprived of rest. The solution isn't postponement. We must have a chance to live."

## ΖΩΝΤΑΝΗ ΜΕΤΑΔΟΣΗ

Ο ΦΩΤΟΓΡΑΦΟΣ ΦΕΥΓΕΙ ΑΠΟ ΤΟΝ ΧΩΡΟ ΤΩΝ ΓΥΡΙΣΜΑΤΩΝ λίγα λεπτά πριν από την ζωντανή μετάδοση για να πάει στην τουαλέτα. Κατά τη διάρκεια της μακράς ουράς των ανυπόμονων και παραπονούμενων ανθρώπων, ο πόλεμος συζητείται από όσους περιμένουν στην ουρά, με πολιτικές, στρατιωτικές και κοινωνικές λεπτομέρειες. Κάποιοι επαινούν τον φωτογράφο, ενώ άλλοι τον επικρίνουν επειδή δεν κάλυψε ένα συγκεκριμένο περιστατικό ή επειδή δεν βρέθηκε σε μια συγκεκριμένη τοποθεσία κατά τη διάρκεια ενός συγκεκριμένου γεγονότος. Η ένταση και η ανάγκη του φωτογράφου να χρησιμοποιήσει την τουαλέτα συνεχίζονται μέχρι που επιστρέφει απρόθυμα στην ζωντανή μετάδοση για να καλύψει μια συνεχιζόμενη σφαγή. «Ως καλλιτέχνη, με ωθεί η επιδίωξη να απαθανατίσω την ανεπαισθητη ομορφιά του συνεχώς εξελισσόμενου κόσμου μας. Ως φωτορεπόρτερ, με ωθεί η επιδίωξη να παρακολουθώ τα γεγονότα. Το καλλιτεχνικό μου όραμα βασίζεται στην πεποίθηση ότι η τέχνη έχει τη δύναμη να προκαλεί συναισθήματα, να πυροδοτεί τη σκέψη και να προωθεί την ενσυναίσθηση και την κατανόηση μεταξύ των ανθρώπων.

Θυμάμαι να βρίσκω τη γυναίκα μου και τον πατέρα μου να βάζουν φωτιά σε βιβλία και σημειωματάρια για να μπορεί η γυναίκα μου να μαγειρεύει, και εγώ χρησιμοποίησα τους πίνακές μου και τους έκαψα με τα ίδια μου τα χέρια. Έγινε προτεραιότητα για έναν καλλιτέχνη να ζήσει και να προστατεύσει την οικογένειά του παρά να προστατεύσει τον πίνακά του. Η ανάγκη μου ως καλλιτέχνη να ασκώ την τέχνη είναι σαν την ανάγκη των ανθρώπων για νερό. Η τοποθεσία της ταινίας φιλοξενούσε 60.000 ανθρώπους. Η ζωή μας έγινε μια ατελείωτη ουρά και αναμονή. Πριν από τον πόλεμο, κάθε σπίτι είχε ένα ή δύο μπάνια. Κατά τη διάρκεια του πολέμου, υπήρχε ένα μπάνιο για κάθε 600 οικογένειες. Λέω στον κόσμο να σταματήσει τις σφαγές και την αιματοχυσία και να μας δώσει μια ευκαιρία να ζήσουμε. Πρέπει να ξεκουραστούμε. Μας έχουν στερήσει την ξεκούραση. Η λύση δεν είναι η αναβολή. Πρέπει να έχουμε μια ευκαιρία να ζήσουμε.»



# FADEL TAFESH

## STEADFAST AS AN OLIVE TREE

FADEL TAFESH'S WORK IS CENTERED AROUND A SINGLE THEME: the patience and endurance of the Palestinian mother. Among all the horrors that this genocide has reaped, its assault on mothers and their children is perhaps the most brutal of all.

In Tafesh's words, "Yesterday I saw a child cut in half. I saw the mother there, so calm and so patient - my hair jumped... 'My kids are for Palestine,' she said, 'for the homeland.' I have heard other mothers cry and sing like a celebration. I don't think any other mothers in the world are doing that."

## ΣΤΑΘΕΡΗ ΣΑΝ ΕΛΙΑ

ΤΟ ΕΡΓΟ ΤΟΥ FADEL TAFESH ΕΠΙΚΕΝΤΡΩΝΕΤΑΙ ΣΕ ΕΝΑ ΜΟΝΟ ΘΕΜΑ: την υπομονή και την αντοχή της Παλαιστίνιας μητέρας. Ανάμεσα σε όλες τις φρικαλεότητες που έχει προκαλέσει αυτή η γενοκτονία, η επίθεσή στις μητέρες και τα παιδιά τους είναι ίσως η πιο βάνουση από όλες.

Με τα λόγια του Tafesh, «Χθες είδα ένα παιδί κομμένο στη μέση. Είδα τη μητέρα εκεί, τόσο ήρεμη και τόσο υπομονετική - σηκώθηκαν οι τρίχες μου... «Τα παιδιά μου είναι για την Παλαιστίνη», είπε, «για την πατρίδα». Έχω ακούσει άλλες μητέρες να κλαίνε και να τραγουδούν σαν να γιορτάζουν. Δεν νομίζω ότι άλλες μητέρες στον κόσμο το κάνουν αυτό».



# HALA EID ALNAJI

## NAZEH'S LEXICON: THE LANGUAGE OF DISPLACEMENT

"NAZEH'S LEXICON: THE LANGUAGE OF DISPLACEMENT" is a journey through the linguistic landscape invented in response to displacement of Palestinians in Gaza. It presents a collection of terms, expressions, and colloquial slang that reflect daily life during the displacement journey, deeply rooted in the collective culture. Each phrase, rich in meaning, describes a specific condition or story, securing its place in our shared memory. These expressions are not merely words but also vessels of history, carrying shared pain, resilience, and hope.

The installation narrates the stories behind these terms through the character Nazeh, who engages in a series of expressive acts infused with meaning and everyday culture. Nazeh moves through the city's spaces and landscapes, relying on three symbolic elements to endure the unknown journey of displacement:

a strong rope, an olive branch, and his own hands. At the heart of the exhibition is an interactive map that revisits the concept of displacement. It evokes living narratives etched into a pre-scorched wooden floor, tracing paths of life and death, hope and sorrow. Each thread weaves a narrative, and every story stands as a testament to history.

## ΤΟ ΛΕΞΙΚΟ ΤΟΥ ΝΑΖΕΗ: Η ΓΛΩΣΣΑ ΤΟΥ ΕΚΤΟΠΙΣΜΟΥ

«ΤΟ ΛΕΞΙΚΟ ΤΟΥ ΝΑΖΕΗ: Η ΓΛΩΣΣΑ ΤΟΥ ΕΚΤΟΠΙΣΜΟΥ» είναι ένα ταξίδι στο γλωσσικό τοπίο που επινοήθηκε ως απάντηση στον εκτοπισμό των Παλαιστινίων στη Γάζα. Παρουσιάζει μια συλλογή όρων, εκφράσεων και αργκό της καθομιλουμένης που αντικατοπτρίζουν την καθημερινή ζωή κατά τη διάρκεια του ταξιδιού του εκτοπισμού, βαθιά ριζωμένη στη συλλογική κουλτούρα. Κάθε φράση, πλούσια σε νόημα, περιγράφει μια συγκεκριμένη συνθήκη ή ιστορία, εξασφαλίζοντας τη θέση της στην κοινή μας μνήμη. Αυτές οι εκφράσεις δεν είναι απλώς λέξεις αλλά και δοχεία ιστορίας, που φέρουν κοινό πόνο, ανθεκτικότητα και ελπίδα.

Η εγκατάσταση αφηγείται τις ιστορίες πίσω από αυτούς τους όρους μέσα από τον χαρακτήρα του Nazeh, ο οποίος εμπλέκεται σε μια σειρά εκφραστικών πράξεων εμποτισμένων με νόημα και καθημερινή κουλτούρα. Ο Nazeh κινείται στους χώρους

και τα τοπία της πόλης, βασιζόμενος σε τρία συμβολικά στοιχεία για να αντέξει το άγνωστο ταξίδι της εκτόπισης:

ένα γερό σχοινί, ένα κλαδί ελιάς και τα ίδια του τα χέρια. Στην καρδιά της έκθεσης βρίσκεται ένας διαδραστικός χάρτης που επανεξετάζει την έννοια της εκτόπισης. Ανακαλεί ζωντανές αφηγήσεις χαραγμένες σε ένα καμένο ξύλινο πάτωμα, εντοπίζοντας μονοπάτια ζωής και θανάτου, ελπίδας και θλίψης. Κάθε νήμα υφαίνει μια αφήγηση και κάθε ιστορία αποτελεί μαρτυρία της Ιστορίας.



# JEHAD JARBOU

## AFTER

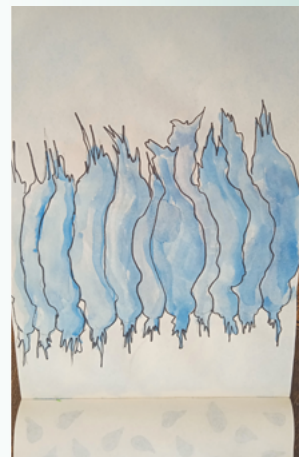
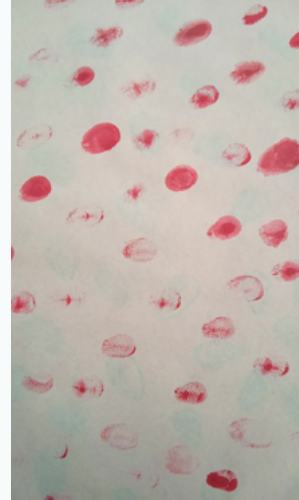
"THE WORKS ADDRESS THE THEME OF LOSS by connecting past and present events, focusing on the relationship between people and their environment through emotions such as sadness, joy, happiness, and loss. The work explores the extent of our understanding of concepts that have sought to transcend the imposed boundaries upon us. The project begins with the question "What Comes after?" to reveal the depth of our connection to the past in the present. Being deprived of something that belongs to us - like home, land, and family - those words form a tree that holds our identity. We look ahead to the "after" of our experiences: Has a home become a mere dream for Palestinians amid ongoing displacement since the beginning of the Israeli occupation? The project delves into these meanings and reinterprets them by creating a city free from the fear of displacement and the planes that steal our dreams."

Jehad Jarbou utilizes art as a tool to address crucial and personal topics, often taking the form of videos, documented performances, and conceptual photography. The artist writes reflections to accompany each work.

## META

«ΑΥΤΗ Η ΕΝΟΤΗΤΑ ΑΣΧΟΛΕΙΤΑΙ ΜΕ ΤΟ ΘΕΜΑ ΤΗΣ ΑΠΩΛΕΙΑΣ, συνδέοντας γεγονότα του παρελθόντος και του παρόντος, εστιάζοντας στη σχέση μεταξύ των ανθρώπων και του περιβάλλοντός τους μέσα από συναισθήματα όπως η θλίψη, η χαρά, η ευτυχία και η απώλεια. Το έργο διερευνά το βαθμό κατανόησής μας για έννοιες που έχουν επιδιώξει να ξεπεράσουν τα όρια που μας έχουν επιβληθεί. Η έκθεση ξεκινά με το ερώτημα «Τι έρχεται μετά;» για να αποκαλύψει το βάθος της σύνδεσής μας με το παρελθόν στο παρόν. Στερούμενοι κάτι που μας ανήκει - όπως το σπίτι, η γη και η οικογένεια - αυτές οι λέξεις σχηματίζουν ένα δέντρο που κρατά την ταυτότητά μας. Κοιτάμε μπροστά προς το «μετά» των εμπειριών μας: Έχει γίνει ένα σπίτι ένα απλό όνειρο για τους Παλαιστίνιους εν μέσω συνεχούς εκτοπισμού από την αρχή της ισραηλινής κατοχής; Το έργο εμβαθύνει σε αυτές τις έννοιες και τις επανερμηνεύει δημιουργώντας μια πόλη απαλλαγμένη από τον φόβο του εκτοπισμού και τα αεροπλάνα που κλέβουν τα όνειρά μας.»

Η Jehad Jarbou χρησιμοποιεί την τέχνη ως εργαλείο για να αντιμετωπίσει κρίσιμα και προσωπικά θέματα, συχνά με τη μορφή βίντεο, τεκμηριωμένων παραστάσεων και εννοιολογικής φωτογραφίας. Η καλλιτέχνης γράφει στοχασμούς που συνοδεύουν κάθε έργο.



# GHANEM DIAB SAID AL DEN

## THE ROCKET AND THE CARROT

“DEAR SIR/MADAM,

Hello, I'm Ghanem from Gaza. Through art and this exhibition, I offer you a carrot - a symbol of "nourishment" - as a gift for you to taste with passion and love. It bears no resemblance to the carrot associated with rockets or sticks. It has no political aim.

It is a rebellion against colonial policies targeting our humanity and dignity.

Remember, dear friend,

If the carrot was once associated with the stick and now with the rocket, it becomes demeaning.

It is a bribe dipped in humiliation that does not benefit us, so reject it.

The rocket and the carrot represent the ideology of colonial domination:

“Ration cards - Tents - Aid - Codes.”

Note:

Whenever you see the carrot in your hands, in the fridge, at the market, or on the table, remember me and remember my artwork. A warning about the vast difference between benefit and harm, between good and evil, between dignity and humiliation. Stay well.”

Through his project “The Rocket and the Carrot”, Ghanem Diab Said Al-Den explores the impact of political perspectives on human experiences through a critical lens. The rocket symbolizes the old stick used by the occupier, which has evolved into a more devastating, advanced, and destructive tool of oppression, symbolizing the technological transformation of colonial powers. The carrot represents the promises and privileges used as tools to entice and subdue people, often with empty promises. The project reflects on how Palestinians, despite attempts to entice or control them through violence, refuse to succumb to the agendas of colonial powers.

## ΤΟ ΚΑΡΟΤΟ ΚΑΙ Η ΡΟΥΚΕΤΑ

«ΑΓΑΠΗΤΕ/Η ΚΥΡΙΑ/ΚΥΡΙΑ,

Γεια σας, είμαι ο Ghanem από τη Γάζα. Μέσα από το καλλιτεχνικό μου έργο και αυτήν την έκθεση, σας προσφέρω ένα καρότο - ένα σύμβολο «προφής» - ως δώρο για να το γευτείτε με πάθος και αγάπη. Δεν έχει καμία ομοιότητα με το καρότο που συνδέεται με ρουκέτες ή μαστίγια. Δεν έχει κανέναν πολιτικό στόχο.

Είναι μια εξέγερση ενάντια στις αποικιακές πολιτικές που στοχεύουν την ανθρωπιά και την αξιοπρέπειά μας.

Θυμηθείτε, αγαπητέ φίλε,

Αν το καρότο κάποτε συνδεόταν με το μαστίγιο και τώρα με τη ρουκέτα, γίνεται υποτιμητικό.

Είναι μια δωροδοκία βουτηγμένη στην ταπείνωση που δεν μας ταιριάζει, γι' αυτό απορρίψτε την.

Η ρουκέτα και το καρότο αντιπροσωπεύουν την ιδεολογία της αποικιακής κυριαρχίας:

«Δελτία τροφίμων - Σκηνές - Βοήθεια - Κώδικες».

Σημείωση:

Όποτε βλέπετε το καρότο στα χέρια σας, στο ψυγείο, στην αγορά ή στο τραπέζι σας, θυμηθείτε εμένα και θυμηθείτε το έργο μου. Μια προειδοποίηση για την τεράστια διαφορά μεταξύ οφέλους και βλάβης, μεταξύ καλού και κακού, μεταξύ αξιοπρέπειας και ταπείνωσης. Να είστε καλά.»

Μέσα από το έργο του «Το Καρότο και η Ρουκέτα», ο Ghanem Diab Said Al Den διερευνά τον αντίκτυπο των πολιτικών προοπτικών στις ανθρώπινες εμπειρίες μέσα από ένα κριτικό πρίσμα. Η ρουκέτα συμβολίζει το παλιό μαστίγιο που χρησιμοποιεί ο κατακτητής, το οποίο έχει εξελιχθεί σε ένα πιο καταστροφικό, προηγμένο και καταστροφικό εργαλείο καταπίεσης, συμβολίζοντας τον τεχνολογικό μετασχηματισμό των αποικιακών δυνάμεων.



# IBRAHIM AL SULTAN

## DANCING WITH NATURE

"BEAUTY, AS AN ABSTRACT IDEA and one of the absolute values, stems from the human relationship with their surroundings and their interaction with other humans, animals, plants, or even ideas and thoughts from others. What a person perceives as beautiful from their environment, embodying an absolute value, must have a purpose or utility for its existence. Its value and form merge together to become one entity. Thus, when we search for the utility of what embodies beauty, we are essentially searching for the utility of beauty itself."

Al Sultan has created a series of artworks and a series of poems that goes to the heart of the question of art in this moment defined by Genocide. His work is direct, esoteric, and contradictory. Al Sultan interrogates the essence and possibility of beauty itself, presenting a series of photographs, a poem in fragments.

*"Here I lie now alone  
After all my attempts to escape myself  
I find myself searching,  
lost and wondering: where am I?!  
A haemorrhage has afflicted my memory  
I want to scream  
Not cry  
I want to dance  
Not flail in my bed  
I want to hug my father  
Not hug our pictures  
I want to sleep,  
to dream that I am still alive"*

## ΧΟΡΕΥΟΝΤΑΣ ΜΕ ΤΗ ΦΥΣΗ

«Η ΟΜΟΡΦΙΑ, ΩΣ ΑΦΗΡΗΜΕΝΗ ΙΔΕΑ και μία από τις απόλυτες αξίες, πηγάζει από την ανθρώπινη σχέση με το περιβάλλον και την αλληλεπίδραση με άλλους ανθρώπους, ζώα, φυτά ή ακόμα και ιδέες και σκέψεις άλλων. Αυτό που ένα άτομο αντιλαμβάνεται ως όμορφο από το περιβάλλον του, ενσαρκώνοντας μια απόλυτη αξία, πρέπει να έχει έναν σκοπό ή χρησιμότητα για την ύπαρξή του. Η αξία και η μορφή του συγχωνεύονται για να γίνουν μία οντότητα. Έτσι, όταν αναζητούμε τη χρησιμότητα αυτού που ενσαρκώνει την ομορφιά, ουσιαστικά αναζητούμε τη χρησιμότητα της ίδιας της ομορφιάς.»

Ο Al Sultan δημιούργησε μια σειρά εικαστικών έργων αλλά και ποιημάτων που αγγίζει την καρδιά του ζητήματος της τέχνης σε αυτή τη στιγμή που ορίζεται από τη Γενοκτονία. Το έργο του είναι άμεσο, απόκρυφο και αντιφατικό. Ο Al Sultan διερευνά την ουσία και τη δυνατότητα της ίδιας της ομορφιάς, παρουσιάζοντας μια σειρά φωτογραφιών, ένα ποίημα σε θραύσματα.

*«Εδώ ξαπλώνω τώρα μόνος  
Μετά από όλες τις προσπάθειές μου να  
ξεφύγω από τον εαυτό μου  
Βρίσκω τον εαυτό μου να ψάχνει,  
να χάνεται και να αναρωτιέται:  
πού βρίσκομαι;!  
Μια αιμορραγία έχει πλήξει τη μνήμη μου  
Θέλω να ουρλιάξω  
Όχι να κλάψω  
Θέλω να χορέψω  
Όχι να κουνιέμαι στο κρεβάτι μου  
Θέλω να αγκαλιάσω τον πατέρα μου  
Όχι να αγκαλιάζω τις φωτογραφίες  
Θέλω να κοιμηθώ, να ονειρευτώ ότι  
είμαι ακόμα ζωντανός»*



# KHALED IBRAHIM HUSSEIN

## I WILL MISS YOU DEEPLY

LIVING IN A STATE OF EXILE, with little access to materials, Khaled Ibrahim Hussein uses clay made from mud, which is easy to shape and is reusable and recyclable. This material carries its own symbolism: this kind of clay is closely associated with refugees and those affected by war, as it is essential for making stoves and fire pits. His resulting project, *I Will Miss You Deeply*, incorporates the ephemerality of the clay material: each precious sculpture, made with so much love and care, delicate to the point of perfection, is destroyed upon its completion and documentation in its surroundings. The process as a whole constitutes the work, including the sculpture's return to the earth, and its eventual reformation into another work. Destruction became part of Hussein's creative acts after much of his artistic work was devastated when his home and studio were bombed.

"I also have an opportunity to diversify my concepts and link them to the places I live, such as the sea, tents, destroyed homes, and other horrors of war. Through these 'sculptures,' I express the fragility of both body and mind, the loss of one's familiar surroundings, the feeling of being forced to leave, carrying the pain of loss, and the constant sense of being under surveillance."

Hussein's investigation began as a response to the Great March of Return (2018 to 2019), demonstrations that resulted in an overwhelming number of amputations. His work delved into the physical and psychological experiences of amputees, and its effects within society and within their families. Sculptures of body parts took on an entirely different significance in this context. Artistic form seemed to hold in it not so much representations of forms of life, but of absence, loss, alienation, and escape.

## ΘΑ ΜΟΥ ΛΕΙΨΕΙΣ ΑΠΙΣΤΕΥΤΑ

ΖΩΝΤΑΣ ΣΕ ΚΑΤΑΣΤΑΣΗ ΕΞΟΡΙΑΣ, με μικρή πρόσβαση σε υλικά, ο Khaled Ibrahim Hussein χρησιμοποιεί πηλό φτιαγμένο από λάσπη, ο οποίος είναι εύκολος να παραχθεί και είναι επαναχρησιμοποιήσιμος και ανακυκλώσιμος. Αυτό το υλικό φέρει τον δικό του συμβολισμό: αυτό το είδος πηλού συνδέεται στενά με τους πρόσφυγες και όσους έχουν πληγεί από τον πόλεμο, καθώς είναι απαραίτητο για την κατασκευή σομπών και τζακιών.

Το έργο του, *I Will Miss You Deeply*, ενσωματώνει την εφήμερη φύση του πηλού: κάθε πολύτιμο γλυπτό, φτιαγμένο με τόση αγάπη και φροντίδα, ευαίσθητο μέχρι τελειότητας, καταστρέφεται κατά την ολοκλήρωσή του και την τεκμηρίωσή του στο περιβάλλον του. Η καταστροφή έγινε μέρος της δημιουργικής πράξης του Hussein αφότου μεγάλο μέρος του καλλιτεχνικού του έργου καταστράφηκε όταν το σπίτι και το στούντιό του βομβαρδίστηκαν.

«Έχω επίσης την ευκαιρία να διαφοροποιήσω τις έννοιές μου και να τις συνδέσω με τα μέρη που ζω, όπως η θάλασσα, οι σκηνές, τα κατεστραμμένα σπίτια και άλλες φρικαλεότητες του πολέμου. Μέσα από αυτά τα «γλυπτά», εκφράζω την ευθραυστότητα τόσο του σώματος όσο και του νου, την απώλεια του οικείου περιβάλλοντος, το συναίσθημα της αναγκαστικής εγκατάλειψης, κουβαλώντας τον πόνο της απώλειας και τη συνεχή αίσθηση ότι βρίσκομαι υπό επιτήρηση.»

Η έρευνα του Hussein ξεκίνησε ως απάντηση στη Μεγάλη Πορεία της Επιστροφής (2018 έως 2019), διαδηλώσεις που οδήγησαν σε έναν συντριπτικό αριθμό ακρωτηριασμών. Το έργο του εμβάθυνε στις σωματικές και ψυχολογικές εμπειρίες των ακρωτηριασμένων και στις επιπτώσεις τους στην κοινωνία και στις οικογένειές τους. Τα γλυπτά μερών του σώματος απέκτησαν μια εντελώς διαφορετική σημασία σε αυτό το πλαίσιο. Η καλλιτεχνική μορφή φαινόταν να περιέχει όχι τόσο αναπαραστάσεις μορφών ζωής, αλλά απουσίας, απώλειας, αποξένωσης και διαφυγής.



# LAMIS DAJANI SHAWWA

*Independent curator's choice*

## BEYOND WATERMELON

"WHEN AN ISRAELI OFFICER BANNED ARTISTS TO PAINT the Palestinian flag, one of them creatively realised that he could paint watermelons since they carry the same colour. In my painting Beyond Watermelon I convey the idea of resistance. Watermelon carries the colour of the Palestinian flag. Its slices symbolise Palestinian figures trapped in barbed wires. Yet, due to their resilient skin, and regardless of the circumstances, the new generation move upwards towards freedom."

"The sculpture Salam displays the word Peace in Arabic. It is made with engraved marine mirrored stainless steel. The word Peace transcends its linguistic function to become a visual expression. The written word and the symbol of Peace intertwined. Art becomes a bridge between consciousness and symbolism. It is a call to reflect on Peace both inner and collective."

## ΠΕΡΑ ΑΠΟ ΤΟ ΚΑΡΠΟΥΖΙ

«ΟΤΑΝ ΕΝΑΣ ΙΣΡΑΗΛΙΝΟΣ ΑΞΙΩΜΑΤΙΚΟΣ ΑΠΑΓΟΡΕΥΣΕ ΣΤΟΥΣ ΚΑΛΛΙΤΕΧΝΕΣ να ζωγραφίσουν την παλαιστινιακή σημαία, ένας από αυτούς συνειδητοποίησε ότι μπορούσε να ζωγραφίσει καρπούζια, αφού έχουν τα ίδια χρώματα. Στον πίνακά μου Πέρα από το Καρπούζι μεταφέρω την ιδέα της αντίστασης. Το καρπούζι έχει το χρώμα της παλαιστινιακής σημαίας. Οι φέτες συμβολίζουν παλαιστινιακές φιγούρες παγιδευμένες σε συρματοπλέγματα. Λόγω του ανθεκτικού δέρματός της, και ανεξάρτητα από τις περιστάσεις, η νέα γενιά κινείται προς την ελευθερία.»

«Το γλυπτό Salam απεικονίζει τη λέξη Ειρήνη στα αραβικά. Είναι κατασκευασμένο από χαραγμένο στιλβωμένο ανοξείδωτο ατσάλι θαλάσσης. Η λέξη ειρήνη υπερβαίνει τη γλωσσική της λειτουργία και γίνεται μια οπτική έκφραση. Ο γραπτός λόγος και το σύμβολο της ειρήνης αλληλοσυνδέονται. Η τέχνη γίνεται μια γέφυρα μεταξύ συνείδησης και συμβολισμού. Είναι ένα κάλεσμα για αναστοχασμό πάνω στην ειρήνη, τόσο την εσωτερική όσο και τη συλλογική.»



# LIZA MADI

## DIGITAL SHARDS. A DISTORTED TRUTH

DIGITAL SHARDS, A DISTORTED TRUTH looks into social media's role in genocide. Madi questions the relationship between the reality on the ground and the "virtual reality" we see on our screens. Has social media become bigger than the war itself? While it breaks barriers by making information accessible to the entire world, is something lost in translation? How does social media during war impact those living through the conflict and those in other parts of the world—whether they are concerned or not?

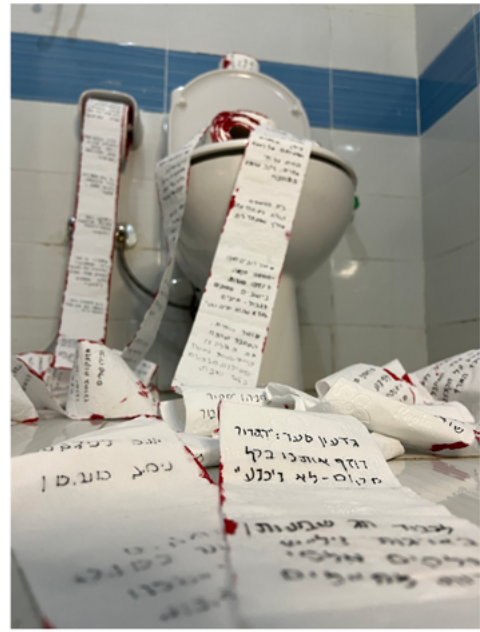
Social media and its images are a world in itself, a matrix of forces and players. What is the effect of this virtual reality on people who create the war itself? In other words, how do these images impact the people and governments and international institutions responsible? Can these images be understood as psychological warfare? Madi juxtaposes reality versus distorted narratives and reflects how technology and the flow of information have shaped perceptions of conflicts, particularly in Palestine.

A final work, reminiscent of Duchamp's Boite-en-Valise and The Green Box, is a suitcase filled with clippings of images, tweets, and posts from people who shared them on social media. Referring to the ease with which information travels to the outside world, in contrast with the hardship of forced displacement, while at the same time making it possible to share the truth with the world - many of whom had never heard of Palestine before - about Gaza, about Palestinian identity, its cause, and the history that the enemy seeks to erase, these shards are now available to all. The installation includes toilet paper rolls with printed or written fake news and misleading information. The chosen material symbolizes the filth and degradation of such false information and its impact on people who are living under the pressures of war.

## ΨΗΦΙΑΚΑ ΘΡΑΥΣΜΑΤΑ. ΜΙΑ ΠΑΡΑΜΟΡΦΩΜΕΝΗ ΑΛΗΘΕΙΑ

ΤΟ «ΨΗΦΙΑΚΑ ΘΡΑΥΣΜΑΤΑ, ΜΙΑ ΠΑΡΑΜΟΡΦΩΜΕΝΗ ΑΛΗΘΕΙΑ» εξετάζει τον ρόλο των μέσων κοινωνικής δικτύωσης στη Γενοκτονία. Η Madi αμφισβητεί τη σχέση μεταξύ της πραγματικότητας και της «εικονικής πραγματικότητας» που βλέπουμε στις οθόνες μας. Έχουν γίνει τα μέσα κοινωνικής δικτύωσης μεγαλύτερα από τον ίδιο τον πόλεμο; Ενώ σπάνε τα εμπόδια καθιστώντας τις πληροφορίες προσβάσιμες σε ολόκληρο τον κόσμο, μήπως κάτι χάνεται στη μετάφραση; Πώς επηρεάζουν τα μέσα κοινωνικής δικτύωσης κατά τη διάρκεια του πολέμου όσους ζουν τη σύγκρουση και όσους βρίσκονται σε άλλα μέρη του κόσμου - είτε τους αφορά είτε όχι; Ποιά είναι η επίδραση αυτής της εικονικής πραγματικότητας στους ανθρώπους που δημιουργούν τον ίδιο τον πόλεμο; Η Madi αντιπαραβάλλει την πραγματικότητα με τις παραμορφωμένες αφηγήσεις και αντικατοπτρίζει τον τρόπο με τον οποίο η τεχνολογία και η ροή των πληροφοριών έχουν διαμορφώσει τις αντιλήψεις για τις συγκρούσεις, ιδιαίτερα στην Παλαιστίνη.

Ένα τελευταίο έργο, που θυμίζει τα έργα Boite-en-Valise και The Green Box του Duchamp, είναι μια βαλίτσα γεμάτη με αποκόμματα εικόνων, tweets και αναρτήσεων από άτομα που τις κοινοποίησαν στα μέσα κοινωνικής δικτύωσης. Αναφέρεται στην ευκολία με την οποία οι πληροφορίες ταξιδεύουν στον έξω κόσμο, σε αντίθεση με τις δυσκολίες του αναγκαστικού εκτοπισμού, ενώ ταυτόχρονα καθιστά δυνατή την κοινοποίηση της αλήθειας στον κόσμο - πολλοί από τους οποίους δεν είχαν ακούσει ποτέ για την Παλαιστίνη - για τη Γάζα, για την παλαιστινιακή ταυτότητα, τον σκοπό της και την ιστορία που ο εχθρός επιδιώκει να σβήσει. Η εγκατάσταση περιλαμβάνει ρολά χαρτιού υγείας με έντυπα ή γραπτά ψεύτικα νέα και παραπλανητικές πληροφορίες. Το επιλεγμένο υλικό συμβολίζει τη βρωμιά και την υποβάθμιση τέτοιων ψευδών πληροφοριών και τον αντίκτυπό τους στους ανθρώπους που ζουν υπό τις πιέσεις του πολέμου.



# MAISARA BAROUD

*Independent curator's choice*

## I'M STILL ALIVE

"SINCE THE BEGINNING of the war on Gaza... I have aimed to document, through my eyes and work, the details of the war. My drawings became a message to friends, telling them that I am still alive... Through my diary, I documented stories of destruction, loss, death, weakness, displacement, hunger, pain, patience, resilience, and breakdown... The occupation has destroyed everything beautiful in my small city, leaving things trapped in a distorted memory beneath the rubble. Like others, I have become displaced from Gaza to the south for the tenth time, navigating the narrow space in an attempt to escape death, seeking lost safety, and fleeing genocide."

Baroud systematically shares his black-and-white diaries on his social media pages, creating a continuous exhibition of documentation and protest.

## ΕΙΜΑΙ ΑΚΟΜΑ ΖΩΝΤΑΝΟΣ

«ΑΠΟ ΤΗΝ ΑΡΧΗ ΤΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ στη Γάζα... στόχος μου ήταν να καταγράψω, μέσα από τα μάτια και τη δουλειά μου, τις λεπτομέρειες του πολέμου. Τα σχέδιά μου έγιναν ένα μήνυμα προς τους φίλους μου, λέγοντάς τους ότι είμαι ακόμα ζωντανός...

Μέσα από το ημερολόγιό μου, κατέγραψα ιστορίες καταστροφής, απώλειας, θανάτου, αδυναμίας, εκτοπισμού, πείνας, πόνου, υπομονής, ανθεκτικότητας και κατάρρευσης... Η κατοχή έχει καταστρέψει όλα τα όμορφα πράγματα στη μικρή μου πόλη, αφήνοντας τα πράγματα παγιδευμένα σε μια παραμορφωμένη μνήμη κάτω από τα ερείπια. Όπως και άλλοι, έχω εκτοπιστεί από τη Γάζα προς τα νότια για δέκατη φορά, πλοηγούμενος στον στενό χώρο σε μια προσπάθεια να ξεφύγω από τον θάνατο, αναζητώντας την χαμένη ασφάλεια και διαφεύγοντας από τη γενοκτονία.»

Ο Μπαρούντ μοιράζεται συστηματικά τα ασπρόμαυρα ημερολόγια του στις σελίδες του στα μέσα κοινωνικής δικτύωσης, δημιουργώντας μια συνεχή έκθεση τεκμηρίωσης και διαμαρτυρίας.



# MARY ANN JARAISSY

*Independent curator's choice*

## TILES OF MASS CONSTRUCTION

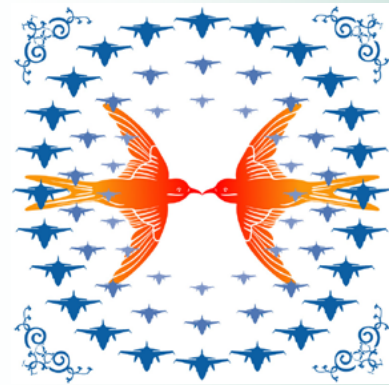
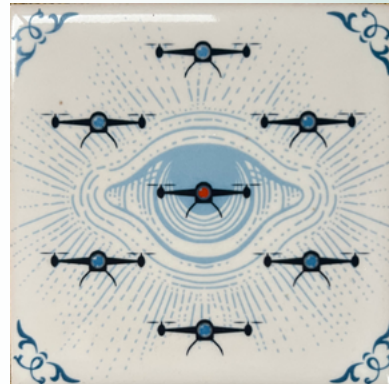
PALESTINIANS PRODUCED AND USED HANDMADE TILES in both private and public spaces. They had utilitarian as well as decorative value in Palestinian cities near the sea, protecting against moisture and salt. It was used in floors, kitchens, bathrooms, and even exterior walls, in restaurants, in faucets, and public baths. They symbolized endurance, protection, beauty.

Today, the Gaza Strip is left with 42 million tons of rubble and the destruction is mounting. Creativity is used by the occupation in Gaza only when it comes to bombard it with new means of mass destruction, to exterminate thousands of people, mostly children, and to control it. Blocks, windows, doors, ceilings and tiles cover thousands of undiscovered bodies. With each shattered tile and collapsed roof, stories and dreams are destroyed, leaving a lingering pain that reverberates through the rubble. But people, animals and nature are all part of life, and life tends to defeat death. Mary Ann's ceramic tiles contain tools of control, torture, violence and war with fragments of resilience, hope and beauty.  
Life above death.

## ΠΛΑΚΑΚΙΑ ΜΑΖΙΚΗΣ ΟΙΚΟΔΟΜΗΣΗΣ

ΟΙ ΠΑΛΑΙΣΤΙΝΙΟΙ ΠΑΡΗΓΑΓΑΝ ΚΑΙ ΧΡΗΣΙΜΟΠΟΙΟΥΣΑΝ ΧΕΙΡΟΠΟΙΗΤΑ ΠΛΑΚΑΚΙΑ τόσο σε ιδιωτικούς, όσο και σε δημόσιους χώρους. Είχαν χρηστική, όσο και διακοσμητική αξία στις παλαιστινιακές πόλεις κοντά στη θάλασσα, προστατεύοντας από την υγρασία και το αλάτι. Χρησιμοποιούνταν σε δάπεδα, κουζίνες, μπάνια, ακόμη και στους εξωτερικούς τοίχους, σε εστιατόρια, σε βρύσες και δημόσια λουτρά. Συμβόλιζαν την αντοχή, την προστασία, την ομορφιά.

Σήμερα, η Λωρίδα της Γάζας έχει μείνει με 42 εκατομμύρια τόνους ερειπίων και η καταστροφή αυξάνεται. Νέες μέθοδοι δημιουργούνται και χρησιμοποιούνται στη Γάζα για τον βομβαρδισμό της με νέα μέσα μαζικής καταστροφής, για την εξόντωση χιλιάδων ανθρώπων, κυρίως παιδιών και για τον έλεγχο της. Οικοδομικά τετράγωνα, παράθυρα, πόρτες, οροφές και πλακάκια καλύπτουν χιλιάδες πτώματα που δεν έχουν ανακαλυφθεί. Με κάθε θρυμματισμένο κεραμίδι και καταρρέουσα στέγη, ιστορίες και όνειρα καταστρέφονται, αφήνοντας έναν παρατεταμένο πόνο που αντηχεί μέσα από τα ερείπια. Αλλά οι άνθρωποι, τα ζώα και η φύση είναι όλα μέρος της ζωής και η ζωή έχει την τάση να νικάει τον θάνατο. Τα κεραμικά πλακάκια της Mary Ann περιέχουν εργαλεία ελέγχου, βασανιστηρίων, βίας και πολέμου με θραύσματα ανθεκτικότητας, ελπίδας και ομορφιάς.  
Η ζωή πάνω από τον θάνατο.



# MAYSA YOUSEF

## AMAN (SAFETY)

MAYSA YOUSEF'S WORK aims to document and preserve her surrounding cultural and national heritage, resisting erasure. It serves as a testament and reminder of the collective experiences and continuous loss endured by her people. Her artworks are created in her studio, a small room and a personal haven equipped for her artistic production that was completely destroyed during their displacement. For the Gaza Biennale, she produced medium- and small-sized artworks due to the scarcity of materials like brushes, paints, and canvases, utilizing paper and cardboard. Collage, or the art of cutting and pasting, is the most suitable medium given the current lack of artistic tools and raw materials. Despite these challenges, the desire for peace and safety remains alive in our hearts. Art becomes a powerful means to express identity, resilience, and the relentless fight for dignity.

"As an artist from Gaza, I believe that art is not only an aesthetic tool but also a method of conveying social messages, documenting suffering, and inspiring others, all while providing psychological relief through emotional expression.

Through my artwork, I aim to reflect on the beauty that can emerge from the rubble, the ongoing struggle for survival, and the Palestinian identity, especially as it relates to the significance of the home, which represents the roots, identity, and belonging."

## AMAN (ΑΣΦΑΛΕΙΑ)

ΤΟ ΕΡΓΟ ΤΗΣ MAYSA YOUSEF στοχεύει στην καταγραφή και διατήρηση της πολιτιστικής και εθνικής κληρονομιάς που την περιβάλλει, αντιστεκόμενη στη διαγραφή. Λειτουργεί ως μαρτυρία και υπενθύμιση των συλλογικών εμπειριών και της συνεχούς απώλειας που υπέστη ο λαός της. Τα έργα τέχνης της δημιουργούνται στο στούντιο της, ένα μικρό δωμάτιο και ένα προσωπικό καταφύγιο εξοπλισμένο για καλλιτεχνική της παραγωγή, το οποίο καταστράφηκε ολοσχερώς κατά τον εκτοπισμό της. Για την Μπιενάλε της Γάζας, δημιούργησε μεσαίου και μικρού μεγέθους έργα τέχνης λόγω της έλλειψης υλικών όπως πινέλα, χρώματα και καμβάδες, χρησιμοποιώντας χαρτί και χαρτόνι. Το κολάζ είναι το καταλληλότερο μέσο δεδομένης της τρέχουσας έλλειψης καλλιτεχνικών εργαλείων και πρώτων υλών. Παρά αυτές τις προκλήσεις, η επιθυμία για ειρήνη και ασφάλεια παραμένει ζωντανή στις καρδιές μας. Η τέχνη γίνεται ένα ισχυρό μέσο έκφρασης της ταυτότητας, της ανθεκτικότητας και του αμείωτου αγώνα για την αξιοπρέπεια.

«Ως καλλιτέχνης από τη Γάζα, πιστεύω ότι η τέχνη δεν είναι απλώς ένα αισθητικό εργαλείο, αλλά και μια μέθοδος μετάδοσης κοινωνικών μηνυμάτων, καταγραφής του πόνου και έμπνευσης για τους άλλους, ενώ παράλληλα προσφέρει ψυχολογική ανακούφιση μέσω της συναισθηματικής έκφρασης.

Μέσα από το έργο μου, επιδιώκω να αντανακλάσω την ομορφιά που μπορεί να ξεπηδήσει από τα ερείπια, τον συνεχιζόμενο αγώνα για την επιβίωση και την παλαιστινιακή ταυτότητα, ειδικά καθώς αυτή σχετίζεται με τη σημασία του σπιτιού, που αντιπροσωπεύει τις ρίζες, την ταυτότητα και την αίσθηση του ανήκειν.»



# MOTAZ NAIM

## WHAT REMAINS FOR US

MOTAZ NAIM'S PRE-WAR PAINTINGS were celebrated for their virtuosic display of color in space, presenting the beauty of Palestine and Gaza. They stood as a testament to the beauty of a people's resilience under siege and war. However, many of his paintings, like the landscapes he depicted, have been destroyed. His experience of Genocide has radically shifted his approach to visual representation and painting.

The paintings Naim is producing for the Biennale reflect the transformation of his original subject matter, marked by a total absence of color. Instead, they envelope the viewer in a landscape where colors lie dormant beneath restless movements, presenting a visualization of inner space and time. A new form of expressionism and abstraction has emerged, characterized by strong brushstrokes and dark colors to represent chaos and sorrow. His technique presents details in a blurred manner, to reflect the disarray caused by the war. Naim's work depicts the vast destruction in Gaza caused by the war, capturing the humanitarian catastrophe and its profound effect on lives and collective memory. It is a message for peace and justice after total destruction. "Following this immense loss of my works, I began a long displacement journey lasting eight months, moving with my family from Beit Hanoun in the north of Gaza to Jabalia, then to Khan Younis, and finally to Rafah in the far south. Each stage brought more challenges and hardship. We lived in a tent, trying to adapt to life in displacement.

This harsh period left a profound mark on me and affected my artistic path. Yet despite everything, hope remains to return to the moments when I could create art and build a new future."

## ΤΙ ΑΠΕΜΕΙΝΕ ΓΙΑ ΜΑΣ

ΟΙ ΠΙΝΑΚΕΣ ΤΟΥ ΜΟΤΑΖ ΝΑΙΜ πριν τον πόλεμο επαινήθηκαν για την δεξιοτεχνική απεικόνιση του χρώματος στο χώρο, παρουσιάζοντας την ομορφιά της Παλαιστίνης και της Γάζας. Αποτελούσαν απόδειξη της ομορφιάς της ανθεκτικότητας ενός λαού υπό πολιορκία και πόλεμο. Ωστόσο, πολλοί από τους πίνακές του, όπως και τα τοπία που απεικόνισε, έχουν καταστραφεί. Η εμπειρία του από τη Γενοκτονία έχει αλλάξει ριζικά την προσέγγισή του στην οπτική αναπαράσταση και τη ζωγραφική.

Οι πίνακες που δημιουργεί ο Ναιμ για την Μπιενάλε αντικατοπτρίζουν τον μετασχηματισμό του αρχικού του θέματος, που χαρακτηρίζεται από την πλήρη απουσία χρώματος. Αντίθετα, περιβάλλουν τον θεατή σε ένα τοπίο όπου τα χρώματα βρίσκονται αδρανή κάτω από ανήσυχες κινήσεις, παρουσιάζοντας μια οπτικοποίηση του εσωτερικού χώρου και χρόνου. Έχει αναδυθεί μια νέα μορφή εξπρεσιονισμού και αφαίρεσης, που χαρακτηρίζεται από έντονες πινελιές και σκούρα χρώματα που αναπαριστούν το χάος και τη θλίψη. Η τεχνική του παρουσιάζει τις λεπτομέρειες με θολό τρόπο, για να αντικατοπτρίσει την αταξία που προκλήθηκε από τον πόλεμο. Το έργο του Ναιμ απεικονίζει την τεράστια κρίση στη Γάζα που προκλήθηκε από τον πόλεμο, αποτυπώνοντας την ανθρωπιστική καταστροφή και τη βαθιά της επίδραση στις ζωές και τη συλλογική μνήμη. Είναι ένα μήνυμα για ειρήνη και δικαιοσύνη μετά την ολοκληρωτική καταστροφή.

«Μετά από αυτή την τεράστια απώλεια των έργων μου, ξεκίνησα ένα μακρύ ταξίδι εκτοπισμού που διήρκεσε οκτώ μήνες, μετακομίζοντας με την οικογένειά μου από το Μπέιτ Χανούν στα βόρεια της Γάζας στην Τζαμπαλία, στη συνέχεια στο Χαν Γιουνίς και τέλος στη Ράφα στο νότιο άκρο. Κάθε στάδιο έφερε περισσότερες προκλήσεις και δυσκολίες. Ζούσαμε σε μια σκηνή, προσπαθώντας να προσαρμοστούμε στη ζωή στον εκτοπισμό. Αυτή η σκληρή περίοδος άφησε ένα βαθύ σημάδι πάνω στην καλλιτεχνική μου πορεία. Ωστόσο, η ελπίδα παραμένει να επιστρέψω στις στιγμές που μπορούσα να δημιουργήσω τέχνη και να χτίσω ένα νέο μέλλον.»



# OSAMA NAQQA HUSSEIN

## SCENES

OSAMA NAQQA HUSSEIN'S DIGITAL drawings reflect internal struggles and the physical and psychological exhaustion caused by war.

"I use the distorted human body as a visual tool to express emotions of isolation, anxiety, and disconnection from reality. Through tense and entangled lines, i try to create a space for dialogue between the artwork and the viewer, allowing them to feel the pain and emotional weight embodied in the depicted figures."

### *Cold Hands*

"Two hands holding a child's head - a symbol of a tragedy too deep for words. One hand gently touches the small body, as if to revive or ease the pain, while the other hand holds silent sorrow. The moment captures helplessness in the face of death, revealing the tension between trying to preserve life and confronting the harsh reality of irreversible loss."

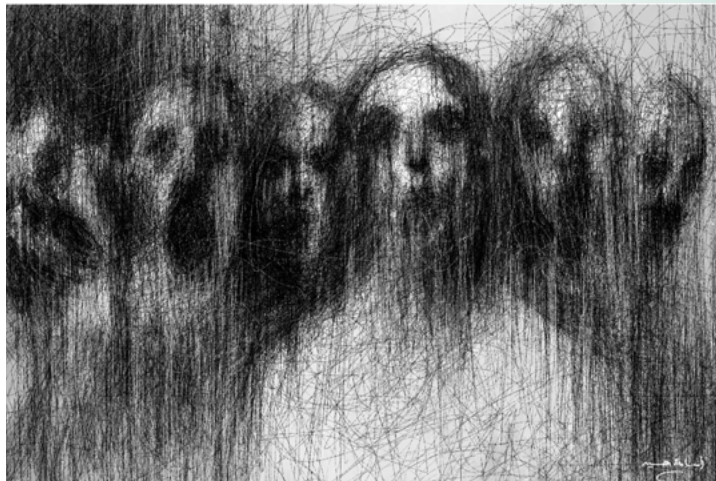
## ΣΚΗΝΕΣ

ΤΑ ΨΗΦΙΑΚΑ ΣΧΕΔΙΑ ΤΟΥ Osama Naqqa Hussein αντανακλούν εσωτερική διαπάλη και τη σωματική και ψυχολογική εξάντληση που προκαλεί ο πόλεμος.

«Χρησιμοποιώ το παραμορφωμένο ανθρώπινο σώμα ως οπτικό εργαλείο για να εκφράσω συναισθήματα απομόνωσης, άγχους και αποσύνδεσης από την πραγματικότητα. Μέσα από τεταμένες και μπερδεμένες γραμμές, προσπαθώ να δημιουργήσω έναν χώρο για διάλογο μεταξύ του έργου τέχνης και του θεατή, επιτρέποντάς του να νιώσει τον πόνο και το συναισθηματικό βάρος που ενσωματώνονται στις απεικονιζόμενες φιγούρες.»

### *Κρύα Χέρια*

«Δύο χέρια κρατούν το κεφάλι ενός παιδιού - ένα σύμβολο μιας τραγωδίας τόσο βαθιάς που δεν περιγράφεται με λόγια. Το ένα χέρι αγγίζει απαλά το μικρό σώμα, σαν να θέλει να αναζωογονήσει ή να απαλύνει τον πόνο, ενώ το άλλο κρατάει τη σιωπηλή θλίψη. Η στιγμή αποτυπώνει την αδυναμία μπροστά στον θάνατο, αποκαλύπτοντας την ένταση μεταξύ της προσπάθειας να διατηρηθεί η ζωή και της αντιμετώπισης της σκληρής πραγματικότητας της μη αναστρέψιμης απώλειας.»



# RASHA AL RAIS

## SIEGE

RASHA AL RAIS IS A YOUNG ARTIST TACKLING a huge subject - support of major countries for Israel's genocidal wars on Palestine. At the beginning of the war, Al Rais created a painting, Siege, to tell this story. The painting emerged as a response to the first massacre that occurred in Gaza during this genocide, and the world did not respond. The cage that traps the bird symbolizes the geographical and political siege on Gaza, while the bird reflects the Palestinian people facing daily struggles to stay alive, with a constant sense of weakness and helplessness. The hands offering weapons represent the international powers that contribute to the continuation of violence and injustice, rather than intervening to end the siege and massacres, highlighting the international complicity in worsening the crisis.

Throughout multiple displacements, she took the painting with her as she kept editing it and working on it. She refused to let it go. Then in July she and her family were displaced again, and she was forced to leave the painting in her family home in North Gaza, which she can no longer reach. Since the moment she left this painting in her home, Al Rais has refused to make another work and instead keeps this work in her mind, resketching it to be exhibited to the world. By telling the multiple stories contained in this lost painting, her statement becomes about an artist who refuses to make art on the terms of a world that conspires against her livelihood. The cage has a door that will not remain closed forever.

## ΠΟΛΙΟΡΚΙΑ

Η RASHA AL RAIS ΕΙΝΑΙ ΜΙΑ ΝΕΑΡΗ ΚΑΛΛΙΤΕΧΝΙΔΑ που ασχολείται με ένα τεράστιο θέμα - την υποστήριξη των μεγάλων χωρών στους γενοκτονικούς πολέμους του Ισραήλ στην Παλαιστίνη. Στην αρχή του πολέμου, η Al Rais δημιούργησε έναν πίνακα, την Πολιορκία, για να αφηγηθεί αυτή την ιστορία. Ο πίνακας προέκυψε ως απάντηση στην πρώτη σφαγή που έλαβε χώρα στη Γάζα κατά τη διάρκεια αυτής της γενοκτονίας, και ο κόσμος δεν αντέδρασε. Το κλουβί που παγιδεύει το πουλί συμβολίζει τη πολιορκία της Γάζας. Το πουλάκι είναι ο παλαιστινιακός λαός που δίνει καθημερινούς αγώνες για να επιβιώσει, με ένα διαρκές αίσθημα αδυναμίας. Τα χέρια που προσφέρουν όπλα αντιπροσωπεύουν τις διεθνείς δυνάμεις που συμβάλλουν στη συνέχιση της βίας και της αδικίας, αντί να παρεμβαίνουν για να τερματίσουν τις σφαγές, υπογραμμίζοντας τη διεθνή συνενοχή στην επιδείνωση της κρίσης.

Κατά τη διάρκεια πολλαπλών εκτοπισμών, πήρε τον πίνακα μαζί της καθώς συνέχιζε να τον επεξεργάζεται και να εργάζεται πάνω σε αυτόν. Αρνήθηκε να τον αφήσει. Στη συνέχεια, τον Ιούλιο, αυτή και η οικογένειά της εκτοπίστηκαν ξανά, και αναγκάστηκε να αφήσει τον πίνακα στο οικογενειακό της σπίτι στη Βόρεια Γάζα, το οποίο δεν μπορεί πλέον να φτάσει. Από τη στιγμή που άφησε αυτόν τον πίνακα στο σπίτι της, η Al Rais αρνήθηκε να δημιουργήσει άλλο έργο και αντ' αυτού το κρατάει συνέχεια στο μυαλό της, ανασχεδιάζοντάς το για να εκτεθεί στον κόσμο. Αφηγούμενη τις πολλαπλές ιστορίες που περιέχονται σε αυτόν τον χαμένο πίνακα, η καλλιτέχνη αρνείται να δημιουργήσει τέχνη με τους όρους ενός κόσμου που συνομωτεί ενάντια στη ζωή της. Το κλουβί έχει μια πόρτα που δεν θα παραμείνει κλειστή για πάντα.



# RUBA MAHMOUD HASSAN

## TRAPPED BREATHS

RUBA MAHMOUD HASSAN'S PAINTINGS approach the representation of emotional pain with heightened sensitivity, allowing imagery to enter the realm of poetry. Each painting is a silent song of loss, attempting to hold the grief of losing a loved one to martyrdom.

"There is a silent pain and sorrow that quietly burns the heart, as well as the shock and loneliness—emotions that cannot be captured by camera and are often overlooked by media, who focus on dismembered bodies as if they were mere dolls, neglecting the real human suffering and the loved ones left behind."

The Palestinian symbol of the poppy flower (hanoun) enters her work, as it has become a ubiquitous symbol of martyrdom in Palestine. The story behind the poppy is that it is said to have grown from the blood of the Persian king Khosrow's victims, and in Palestine, it blooms annually as a symbol of the blood of martyrs who died on this land.

## ΠΑΓΙΔΕΥΜΕΝΕΣ ΑΝΑΠΝΟΕΣ

ΟΙ ΠΙΝΑΚΕΣ ΤΗΣ RUBA MAHMOUD HASSAN προσεγγίζουν την αναπαράσταση του συναισθηματικού πόνου με αυξημένη ευαισθησία, επιτρέποντας στην εικονοποιία να εισέλθει στο βασίλειο της ποίησης. Κάθε πίνακας είναι ένα σιωπηλό τραγούδι, που προσπαθεί να συγκρατήσει τη θλίψη της απώλειας ενός αγαπημένου προσώπου από μαρτυρικό θάνατο.

«Υπάρχει ένας σιωπηλός πόνος και θλίψη που καίει ήσυχα την καρδιά, καθώς και το σοκ και η μοναξιά – συναισθήματα που δεν μπορούν να αποτυπωθούν από την κάμερα και συχνά παραβλέπονται από τα μέσα ενημέρωσης, τα οποία εστιάζουν σε διαμελισμένα σώματα σαν να ήταν απλές κούκλες, παραμελώντας τον πραγματικό ανθρώπινο πόνο και τους αγαπημένους που άφησαν πίσω.»

Το παλαιστινιακό σύμβολο του άνθους της παπαρούνας (hanoun) εισέρχεται στο έργο της, καθώς έχει γίνει ένα πανταχού παρόν σύμβολο μαρτυρίου στην Παλαιστίνη. Η ιστορία πίσω από την παπαρούνα είναι πως λέγεται ότι φύτρωσε από το αίμα των θυμάτων του Πέρση βασιλιά Χοσρόη, και στην Παλαιστίνη ανθίζει ετησίως ως σύμβολο του αίματος των μαρτύρων που πέθαναν σε αυτή τη γη.



# OLA AL SHARIF

## SHADIDAH (SLINGSHOT)

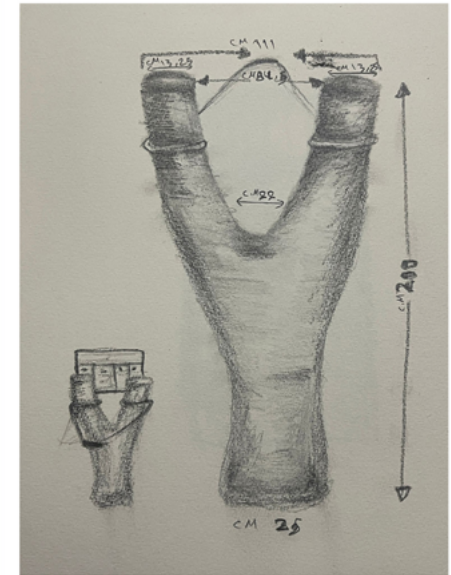
OLA AL SHARIF HAS BEEN CREATING AN INVENTORY of feelings based on her experiences of the war on Gaza. Each feeling is represented by a work, while each work takes surprising material form. When words fail, when international law fails, it seems reality is up for grabs. Al Sharif's work is reminiscent of the radical material and formal interventions of Duchamp's readymades, and Claes Oldenburg's iconic sculpture Arte Povera, but set to the realities of our world today.

What happens to the body within the act of resistance? In other words, how does the body experience and enact resistance? Indeed, throughout this war, the people of Gaza have been forced to rethink so many basic and fundamental aspects of human life. From the body's relationship to water, to the unimaginable sound of F-16s overhead and the never-ceasing sound of drones, when one's relationship to our senses shifts in such a way, the elements of everyday life become monumental moments. Al Sharif's aesthetic interventions allow us to experience the 'invisible' realities hidden in everyday life as if they were as clear as day. There is no such thing as an object outside of the vitality of life. Here, art reaches an essence: what appears to be an everyday object, separate from our body and our life, is transformed into an expression of the vital force of life. Marcel Duchamp is turning in his grave, in awe.

## SHADIDAH (ΣΦΕΝΤΟΝΑ)

Η OLA AL SHARIF ΔΗΜΙΟΥΡΓΕΙ ΜΙΑ ΑΠΟΓΡΑΦΗ ΣΥΝΑΙΣΘΗΜΑΤΩΝ βασισμένη στις εμπειρίες της από τον πόλεμο στη Γάζα. Κάθε συναίσθημα αναπαριστάται από ένα έργο, ενώ κάθε έργο παίρνει μια υλική μορφή που εκπλήσσει. Όταν οι λέξεις αποτυγχάνουν, όταν το διεθνές δίκαιο αποτυγχάνει, φαίνεται ότι η πραγματικότητα ανήκει σε όποιον την αρπάξει. Το έργο της Ola Al Sharif θυμίζει τις ρηξικέλευθες παρεμβάσεις των readymades του Ντυσάν και του εμβληματικού γλυπτού Arte Povera του Κλάες Όλντενμπουργκ, αλλά προσαρμοσμένο στις πραγματικότητες του σημερινού κόσμου μας.

Τι συμβαίνει στο σώμα κατά την πράξη της αντίστασης; Με άλλα λόγια, πώς βιώνει και εφαρμόζει το σώμα την αντίσταση; Πράγματι, σε όλη τη διάρκεια αυτού του πολέμου, ο λαός της Γάζας έχει αναγκαστεί να επανεξετάσει τόσες πολλές βασικές και θεμελιώδεις πτυχές της ανθρώπινης ζωής. Από τη σχέση του σώματος με το νερό, μέχρι τον αδιανόητο ήχο των F-16 από πάνω και τον ασταμάτητο ήχο των drones, όταν η σχέση με τις αισθήσεις μας μεταβάλλεται με τέτοιο τρόπο, τα στοιχεία της καθημερινής ζωής γίνονται μνημειώδεις στιγμές. Οι αισθητικές παρεμβάσεις της Al Sharif μας επιτρέπουν να βιώσουμε τις «αόρατες» πραγματικότητες που κρύβονται στην καθημερινή ζωή σαν να ήταν τόσο καθαρές όσο η μέρα. Δεν υπάρχει ένα αντικείμενο έξω από τη ζωτικότητα της ζωής. Εδώ, η τέχνη φτάνει σε μια ουσία: αυτό που φαίνεται να είναι ένα καθημερινό αντικείμενο, ξεχωριστό από το σώμα και τη ζωή μας, μεταμορφώνεται σε μια έκφραση της ζωτικής δύναμης της ζωής. Ο Marcel Duchamp στριφογυρίζει στον τάφο του, με δέος.



# SOHAIL SALEM

## A CALL FOR HELP

"EVERY DAY, A STORY OR TALE INSPIRES me to create one or more drawings. I never planned for these drawings to be well-received by friends or for them to share their own stories with me. My first drawing was of a violet flower, when I asked the kind fairy to transform into a rose. Courageously, it did something its violet sisters didn't dare to do, inspired by the story of the ambitious violet of Khalil Gibran. It's the violet that didn't pay attention to disappointment or fear.

I did not initially flee to the south at the beginning of the war, despite the intense danger, but the Army arrested me when they stormed my place of residence in Gaza City - the southern Rimal neighborhood. They separated me from my family and forced them to flee to Deir al-Balah on foot. This happened in January 18, 2025, 105 days after the war started. The soldiers interrogated me while my hands were shackled and my eyes blindfolded, and they wrote a letter in Hebrew on my forehead. Those detained with me whispered about the meaning of this and whether the army was going to kill me first. After hours of interrogation, they released me, and I walked for about 7 hours to reach Deir al-Balah. The next day, after searching without any evidence or contact, I managed to find my family."

Salem has been filling school notebooks with sketches throughout the genocide, he has created hundreds and hundreds of works. These diaries themselves are a testament to something that cannot be easily described or denied. "My sketches are quick - there is no place for calm. I believe art is created within its circumstances. It is more than just putting color on blank surfaces. It is a state of accumulated feelings - a miniature image of my reality, my hopes, my pain, and my dreams."

## ΚΡΑΥΓΗ ΒΟΗΘΕΙΑΣ

«ΚΑΘΕ ΜΕΡΑ, ΜΙΑ ΙΣΤΟΡΙΑ Ή ΕΝΑ ΠΑΡΑΜΥΘΙ ΜΕ ΕΜΠΝΕΕΙ να δημιουργήσω ένα ή περισσότερα σχέδια. Ποτέ δεν τα δημιούργησα με σκοπό να γίνουν δεκτά από φίλους ή να μοιραστούν τις δικές τους ιστορίες μαζί μου. Το πρώτο μου σχέδιο ήταν το λουλούδι της βιολέτας, που ζήτησε από την ευγενική νεράιδα να μεταμορφωθεί σε τριαντάφυλλο, εμπνευσμένη από την ιστορία της φιλόδοξης βιολέτας του Χαλίλ Γκιμπράν. Με θάρρος, έκανε κάτι που οι αδελφές της δεν τόλμησαν να κάνουν. Είναι η βιολέτα που δεν έδωσε σημασία στην απογοήτευση ή τον φόβο.

Δεν κατέφυγα αρχικά προς τα νότια στην αρχή του πολέμου, παρά τον έντονο κίνδυνο, αλλά ο Στρατός με συνέλαβε όταν εισέβαλαν στον τόπο κατοικίας μου στην πόλη της Γάζας - τη νότια γειτονιά Ριμάλ. Με χώρισαν από την οικογένειά μου και τους ανάγκασαν να καταφύγουν στο Ντέιρ αλ-Μπαλάχ με τα πόδια. Αυτό συνέβη στις 18 Ιανουαρίου 2025, 105 ημέρες μετά την έναρξη του πολέμου. Οι στρατιώτες με ανέκριναν ενώ τα χέρια μου ήταν αλυσοδεμένα και τα μάτια μου δεμένα, και έγραψαν ένα γράμμα στα εβραϊκά στο μέτωπό μου. Όσοι κρατούνταν μαζί μου αναρωτιούνταν ψιθυριστά για τη σημασία αυτής της πράξης και αν ο στρατός θα με σκότωνε πρώτο. Μετά από ώρες ανάκρισης, με άφησαν ελεύθερο και περπάτησα για περίπου 7 ώρες για να φτάσω στο Ντέιρ αλ-Μπαλάχ. Την επόμενη μέρα, αφού έψαξα χωρίς κανένα στοιχείο ή επαφή, κατάφερα να βρω την οικογένειά μου.»

Ο Salem έχει γεμίσει σχολικά τετράδια με σκίτσα καθ' όλη τη διάρκεια της γενοκτονίας δημιουργώντας εκατοντάδες έργα. Τα ίδια τα τετράδια είναι μια μαρτυρία για κάτι που δεν μπορεί εύκολα κανείς να περιγράψει ή να αρνηθεί. «Τα σκίτσα μου είναι γρήγορα - δεν υπάρχει χώρος για ηρεμία. Πιστεύω ότι η τέχνη δημιουργείται μέσα στις συνθήκες της. Είναι κάτι περισσότερο από το να βάζεις χρώμα σε κενές επιφάνειες. Είναι μια κατάσταση συσσωρευμένων συναισθημάτων - μια μικρογραφία της πραγματικότητάς μου, των ελπίδων μου, του πόνου μου και των ονείρων μου.»



# YASMEEN AL DAYA

## HOPE AND PAIN

YASMEEN AL DAYA has been making work throughout this genocide, and through numerous displacements, she has adapted her art practice to the circumstances. Limitations, such as the scale and materials available, have led to a displacement, on a formal level, within the work itself. Are these sketches for larger works? Are they lost artifacts from another time, whose purpose and context we can never know? Each work can be held in one's hand, yet seems to contain a universe. Between a sketch, a sculpture, and an artifact, we hold in each work a memory of a cosmic past.

*Life, 2024*

"The work represents the opposite of life, which is death. A sculptural piece made with kiln clay, the artwork portrays a mask of a sleeping face with an open mouth. The piece was inspired by an image of a young girl who was martyred, with her soul leaving her body after being injured."

## ΕΛΠΙΔΑ ΚΑΙ ΠΟΝΟΣ

Η YASMEEN AL DAYA δημιουργεί έργα καθ' όλη τη διάρκεια της Γενοκτονίας και, μέσα από πολυάριθμες μετακινήσεις, έχει προσαρμόσει την καλλιτεχνική της πρακτική στις περιστάσεις. Περιορισμοί, όπως η κλίμακα και τα διαθέσιμα υλικά, έχουν οδηγήσει σε μια μετατόπιση, μέσα στο ίδιο το έργο. Πρόκειται για σκίτσα για μεγαλύτερα έργα; Είναι χαμένα αντικείμενα από μια άλλη εποχή, των οποίων τον σκοπό και το πλαίσιο δεν μπορούμε ποτέ να γνωρίζουμε; Κάθε έργο μπορεί να χωρέσει στο χέρι κάποιου, κι όμως φαίνεται να περιέχει ένα σύμπαν. Ανάμεσα σε ένα σκίτσο, ένα γλυπτό και ένα αντικείμενο, κρατάμε σε κάθε έργο μια ανάμνηση ενός κοσμικού παρελθόντος.

*Ζωή, 2024*

«Το έργο αντιπροσωπεύει το αντίθετο της ζωής, που είναι ο θάνατος. Το γλυπτό φτιαγμένο με πηλό, απεικονίζει μια μάσκα ενός κοιμισμένου προσώπου με ανοιχτόστόμα. Το έργο είναι εμπνευσμένο από την εικόνα ενός νεαρού κοριτσιού που μαρτύρησε, με την ψυχή της να εγκαταλείπει το σώμα της αφού τραυματίστηκε.»



# YAHYA ABDEL SALAM AL SHOULI

## THE CURSE OF THE CHILDREN WHO GREW FROM ORANGES

BLENDING VISUAL AND AUDIOVISUAL MEDIA, Yahya explores the deep contradictions that war forces upon Gaza's children, exploring the blurred line between reality and illusion, and the persistent interplay of darkness and hope.

This video "The Curse of the Children Who Grew from Oranges" explores how children living in war zones interpret violent events. It examines their childlike understanding, linking what happens to details that make sense to them. Through a combination of staged scenes and real footage, the video presents how these children read their violent experiences and the meanings and harshness of their thoughts and feelings regarding everything that is happening. It highlights the significance of these interpretations in the face of the overwhelming impact of war.

## Η ΚΑΤΑΡΑ ΤΩΝ ΠΑΙΔΙΩΝ ΠΟΥ ΦΥΤΡΩΣΑΝ ΑΠΟ ΤΑ ΠΟΡΤΟΚΑΛΙΑ

ΣΥΝΔΥΑΖΟΝΤΑΣ ΟΠΤΙΚΑ ΚΑΙ ΟΠΤΙΚΟΑΚΟΥΣΤΙΚΑ ΜΕΣΑ, ο Yahya Abdel Salam Al Shouli εξερευνά τις βαθιές αντιφάσεις που επιβάλλει ο πόλεμος στα παιδιά της Γάζας, εξερευνώντας τη θολή γραμμή μεταξύ πραγματικότητας και ψευδαίσθησης, καθώς και την επίμονη αλληλεπίδραση σκότους και ελπίδας. Το βίντεο με τίτλο «Η Κατάρρα των Παιδιών που Φύτρωσαν από τα Πορτοκάλια», εξερευνά πώς τα παιδιά που ζουν σε εμπόλεμες ζώνες ερμηνεύουν βίαια γεγονότα. Εξετάζει την παιδική τους κατανόηση, συνδέοντας ό,τι συμβαίνει με λεπτομέρειες που έχουν νόημα για

αυτά. Μέσα από έναν συνδυασμό σκηνοθετημένων σκηνών και πραγματικού υλικού, το βίντεο παρουσιάζει πώς αυτά τα παιδιά διαβάζουν τις βίαιες εμπειρίες τους και τις έννοιες και τη σκληρότητα των σκέψεων και των συναισθημάτων τους σχετικά με όλα όσα συμβαίνουν. Υπογραμμίζει τη σημασία αυτών των ερμηνειών ενόψει του συντριπτικού αντίκτυπου του πολέμου.



# YARA ZUHOD

## SLEEPLESS PAIN

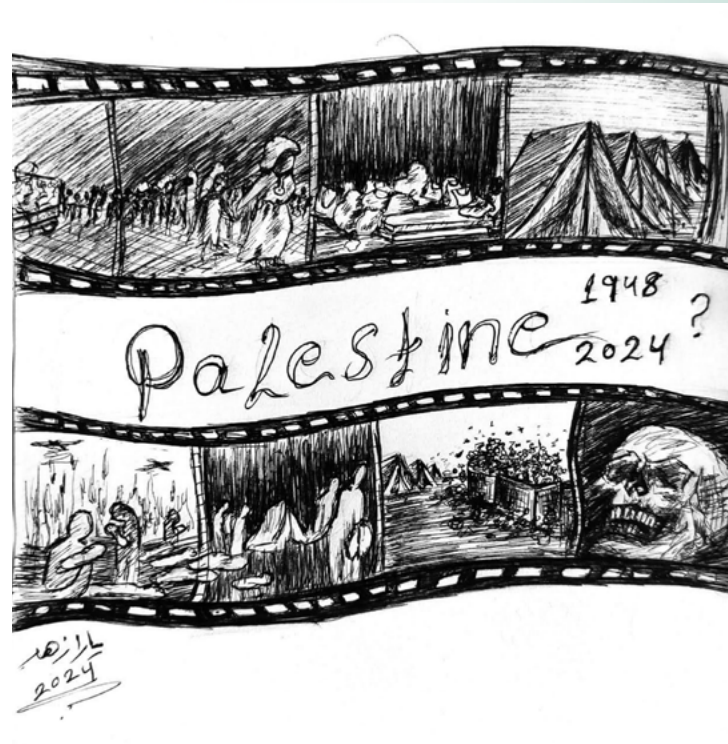
ZUHOD DOES NOT MERELY DOCUMENT the tribulations of life forced to survive; her drawings and conceptual works look pain in the eye, showing us what resilience looks like. Her series Sleepless Pain addresses the ongoing deprivation of basic rights and the lasting suffering of the Palestinian People living under occupation and blockade. The central issue highlighted is forced displacement and the loss of all sense of security, as the occupation continues to strip the people of their fundamental rights. Each artwork represents a chapter of this journey, showcasing the burden that Gazans bear daily through scenes of destruction, despair, and loss.

"With unwavering patience, we clung to the land after they destroyed our homes and forcibly displaced us. We set up tents on the rubble, steadfast until we can return. With the bitterness of patience, we consumed the worst types of food, compelled to eat it as there were no alternatives. We endured months of starvation, even resorting to eating the very cactus (sabra) itself when nothing else was available! With the sabra's harshness, we held it in our hands and in the hands of our children. We made it a pen for our painful stories. With its thorns, we turned it into a mattress, sleeping many long nights on it, indifferent to our plight, as it was our only bedding. It grew deep within us; we breathed in the rubble, and there was nothing to shield us but patience (sabra)."

## ΑΨΠΝΟΣ ΠΟΝΟΣ

Η ZUHOD ΔΕΝ ΚΑΤΑΓΡΑΦΕΙ ΑΠΛΩΣ ΤΙΣ ΔΟΚΙΜΑΣΙΕΣ της ζωής που αναγκάζεται να επιβιώσει. Τα σχέδια και τα εννοιολογικά της έργα κοιτάζουν τον πόνο στα μάτια, δείχνοντάς μας πώς μοιάζει η ανθεκτικότητα. Το έργο της ΑΨπνος Πόνος, ασχολείται με τη συνεχιζόμενη στέρηση βασικών δικαιωμάτων και τα διαρκή βάρσανα του παλαιστινιακού λαού που ζει υπό κατοχή και αποκλεισμό. Το κεντρικό ζήτημα που τονίζεται είναι ο αναγκαστικός εκτοπισμός και η απώλεια κάθε αίσθησης ασφάλειας, καθώς η κατοχή συνεχίζει να στερεί από τον λαό τα θεμελιώδη δικαιώματά του. Κάθε έργο τέχνης αντιπροσωπεύει ένα κεφάλαιο αυτού του ταξιδιού, αναδεικνύοντας το βάρος που επωμίζονται καθημερινά οι κάτοικοι της Γάζας μέσα από σκηνές καταστροφής, απελπισίας και απώλειας.

«Με ακλόνητη υπομονή, κρατηθήκαμε στη γη αφού κατέστρεψαν τα σπίτια μας και μας εκτόπισαν βίαια. Στήσαμε σκηνές στα ερείπια, ακλόνητοι μέχρι να μπορέσουμε να επιστρέψουμε. Με την πικρία της υπομονής, καταναλώσαμε τα χειρότερα είδη φαγητού, αναγκασμένοι να τα φάμε καθώς δεν υπήρχαν εναλλακτικές. Υπομείναμε μήνες πείνας, καταφεύγοντας ακόμη και στο να φάμε τον ίδιο τον κάκτο (sabra) όταν δεν υπήρχε τίποτα άλλο διαθέσιμο! Κρατήσαμε τη σκληρότητα του κάκτου, στα χέρια μας και στα χέρια των παιδιών μας. Τον κάναμε στυλό για τις οδυνηρές μας ιστορίες. Τα αγκάθια του, το μετατρέψαμε σε στρώμα, κοιμούμενοι πολλές μακριές νύχτες πάνω του, αδιάφοροι για την κατάστασή μας, καθώς ήταν το μόνο μας κρεβάτι. Φύτρωσε βαθιά μέσα μας. Αναπνέαμε τα ερείπια, και δεν υπήρχε τίποτα να μας προστατεύσει παρά η υπομονή (sabra).»



C U R R I C U L A

V I T A E

## AHMED ADNAN

**AHMED ADNAN** was born in 1997, in Nuseirat, Gaza. He has worked as a course trainer at the Al-Marsam Al-Hurr Foundation for two years under Prof. Fares Iass. He has three years of extensive experience in digital character design and has participated in numerous local and international exhibitions and art workshops. This includes the TVT international exhibition, the cartoon sculpture workshop at Dar Al-Kalima with Professor Mohammed Al-Hajj in 2022, and a sculpture workshop with Professor Rana Al-Batrawi. He won second place in the best digital character design competition at Ain Shams University in 2018 and achieved first place for designing the university Logo at Palestine Technical University in the same year. In 2018, he also organized a solo exhibition commemorating Land Day at Al-Azhar University and the Islamic University in Gaza.

Ο **AHMED ADNAN** γεννήθηκε το 1997 στο Nuseirat της Γάζας και εργάστηκε ως εκπαιδευτής καλλιτεχνικών μαθημάτων στο Ίδρυμα Al-Marsam Al-Hurr για δύο χρόνια με τον καθηγητή Fares Iass. Έχει τριετή εμπειρία στο ψηφιακό σχέδιο και έχει συμμετάσχει σε πολυάριθμες τοπικές και διεθνείς εκθέσεις και εργαστήρια, μεταξύ άλλων στη διεθνή έκθεση TVT, στο εργαστήριο γλυπτικής κινουμένων σχεδίων στο Dar Al-Kalima με τον καθηγητή Mohammed Al-Hajj και ένα εργαστήριο γλυπτικής με την καθηγήτρια Rana Al-Batrawi. Κέρδισε τη δεύτερη θέση στον διαγωνισμό ψηφιακού σχεδίου στο Πανεπιστήμιο Ain Shams το 2018 και κατέκτησε την πρώτη θέση για τον σχεδιασμό του λογότυπου του Τεχνικού Πανεπιστημίου της Παλαιστίνης την ίδια χρονιά. Το 2018, πραγματοποιήθηκε ατομική του έκθεση για τον εορτασμό της Ημέρας της Γης στο Πανεπιστήμιο Al-Azhar και στο Ισλαμικό Πανεπιστήμιο στη Γάζα.

## AHMED AL ADAWI

**AHMED AL ADAWI**, a Palestinian visual artist and digital artist, was born in 1983 in Gaza. He graduated from the Faculty of Fine Arts, and his artistic personality was formed in the refugee camps, where he witnessed the Palestinian popular struggle since the First Intifada. He was influenced by the revolutionary murals and posters that adorned the walls of the camps, which led him to choose art as a means of expression and resistance.

Al Adawi began his artistic career focusing on cartooning and children's and adolescent stories. He was part of a founding team for a company specializing in the production of cartoon films, but the company was destroyed by the war on Gaza. Despite this, he continued to develop his art, combining expressionism and symbolism, and delving into the fields of contemporary and modern art, trying to combine them in his own unique style. Al Adawi believes that art is not merely an aesthetic tool, but rather a means of expressing the human experience and collective memory. In light of the difficult circumstances his people are experiencing, he believes that the human being is the foundation of the future of Palestine and the Palestinian cause, and that the bloody events he witnessed did not change his principles, but rather increased his determination to document them visually.

Ο **AHMED AL ADAWI**, Παλαιστίνιος εικαστικός καλλιτέχνης και ψηφιακός καλλιτέχνης, γεννήθηκε το 1983 στη Γάζα. Αποφοίτησε από τη Σχολή Καλών Τεχνών και η καλλιτεχνική του προσωπικότητα διαμορφώθηκε στους καταυλισμούς προσφύγων, όπου έγινε μάρτυρας του λαϊκού αγώνα των Παλαιστίνιων από την Πρώτη Ιντιφάντα. Επηρεάστηκε από τις επαναστατικές τοιχογραφίες και αφίσες που κοσμούσαν τους τοίχους των καταυλισμών, γεγονός που τον οδήγησε να επιλέξει την τέχνη ως μέσο έκφρασης και αντίστασης.

Ξεκίνησε την καλλιτεχνική του καριέρα εστιάζοντας στα κινούμενα σχέδια και στις ιστορίες για παιδιά και εφήβους. Ήταν μέλος της ιδρυτικής ομάδας μιας εταιρείας που ειδικευόταν στην παραγωγή ταινιών κινουμένων σχεδίων, αλλά η εταιρεία καταστράφηκε από τον πόλεμο στη Γάζα. Παρά ταύτα, συνέχισε να αναπτύσσει την τέχνη του, συνδυάζοντας τον εξπρεσιονισμό

## AHMED AL ADAWI

και τον συμβολισμό, και εμβαθύνοντας στους τομείς της σύγχρονης και της μοντέρνας τέχνης, προσπαθώντας να τους συνδυάσει με το δικό του μοναδικό στυλ.

Πιστεύει ότι η τέχνη δεν είναι απλώς ένα αισθητικό εργαλείο, αλλά μάλλον ένα μέσο έκφρασης της ανθρώπινης εμπειρίας και της συλλογικής μνήμης. Υπό το πρίσμα των δύσκολων συνθηκών που βιώνει ο λαός του, πιστεύει ότι ο άνθρωπος είναι το θεμέλιο του μέλλοντος της Παλαιστίνης και του παλαιστινιακού αγώνα, και ότι τα αιματηρά γεγονότα που είδε δεν άλλαξαν τις αρχές του, αλλά μάλλον αύξησαν την αποφασιστικότητά του να τα καταγράψει οπτικά.

## AHMAD MUHANNA

**AHMAD MUHANNA** was born in Deir Al-Balah in 1984. He studied Fine Arts in Al-Aqsa University, with a specialization in Art Education. He worked in artistic workshops at the headquarters of the Palestinian Artists Association, in the Deir Al-Balah Cultural and Social Center Society in many projects and activities between 2000 and 2006, in the Deir El-Balah Association for the rehabilitation and the psychological support for children with special needs, in summer Camps of the Mercy Corps in a project for support for children through the arts, in Nawa Association for Culture and Arts - Al-Bayarah Parks - in the city of Deir Al-Balah as part of the Children's Therapeutic Arts Project. He participated in many group exhibitions and mural paintings in cooperation with UNICEF, the Palestinian Museum in Ramallah etc.

Ο **AHMAD MUHANNA** γεννήθηκε στο Deir Al-Balah το 1984. Σπούδασε Καλές Τέχνες στο Πανεπιστήμιο Al-Aqsa, με ειδίκευση στην Καλλιτεχνική Εκπαίδευση. Εργάστηκε σε καλλιτεχνικά εργαστήρια του Παλαιστινιακού Συνδέσμου Εικαστικών Καλλιτεχνών, του Πολιτιστικού και Κοινωνικού Κέντρου Deir Al-Balah στον Σύνδεσμο για την Αποκατάσταση Ατόμων με Αναπηρία του Deir El-Balah στο πλαίσιο του έργου ψυχολογικής υποστήριξης παιδιών με ειδικές ανάγκες, σε καλοκαιρινές κατασκηνώσεις του Mercy Corps (για την ψυχολογική και θεραπευτική υποστήριξη παιδιών μέσω των τεχνών), στον Σύνδεσμο Πολιτισμού και Τεχνών Nawa - Πάρκο Al-Bayarah - στο πλαίσιο του Προγράμματος Θεραπευτικών Τεχνών για Παιδιά. Συμμετείχε σε πολλές ομαδικές εκθέσεις και τοιχογραφίες σε συνεργασία με την UNICEF, το Παλαιστινιακό Μουσείο στη Ραμάλα κ.λπ.

## ALAA ABU SAIF

**ALAA ABU SAIF** was born in Khan Younis and graduated from Al-Aqsa University with a Bachelor's degree in Fine Arts Education. He is an art teacher with 15 years of experience in the field of education, a trainer for various visual arts courses over several years and an active facilitator in several summer camps. He collaborated with several institutions in the field of training and psychological support through visual arts. His work was exhibited at the Al-Aqsa University, the Heritage Revival Exhibition of the Farmers Association, the Visual Arts Festival and Exhibition Roots for Fine Art at the Red Crescent Hall, and has made several murals in public spaces.

Ο **ALAA ABU SAIF** γεννήθηκε στο Khan Younis και αποφοίτησε από το Πανεπιστήμιο Al-Aqsa με πτυχίο στις Καλές Τέχνες. Είναι καθηγητής καλλιτεχνικών μαθημάτων με 15 χρόνια εμπειρίας στον τομέα της εκπαίδευσης, εκπαιδευτής σε διάφορα μαθήματα εικαστικών τεχνών και συντονιστής σε καλοκαιρινές κατασκηνώσεις. Συνεργάστηκε με διάφορα ιδρύματα στον τομέα της εκπαίδευσης και της ψυχολογικής υποστήριξης μέσω των εικαστικών τεχνών. Τα έργα του εκτέθηκαν στο Πανεπιστήμιο Al-Aqsa, στην Έκθεση Αναβίωσης της Κληρονομιάς του Αγροτικού Συνδέσμου, στο Φεστιβάλ Εικαστικών Τεχνών και στην Έκθεση Roots for Fine Art στην Αίθουσα της Ερυθράς Ημισελήνου, ενώ έχει δημιουργήσει και αρκετές τοιχογραφίες σε δημόσιους χώρους.

## ALAA AL SHAWA

**ALAA AL SHAWA** is studying fine arts. She is interested in various fields of painting, textile art, and knitting. Her work highlights real issues that have been marginalized in society, characterized by her use of diverse materials such as fabrics and leathers. She has completed several art projects, the most notable being Waiting for a Response from the Sea, which addresses the concept of escaping from the known to the unknown in the context of illegal migration. Another project, Titled Tangled Gray, deals with the struggles and challenges faced by the youth of Gaza in search of a bright future. She also received a production grant for Blue Vision, which explores the structural dynamics and the overcrowding of refugee camps.

Η **ALAA AL SHAWA** σπουδάζει καλές τέχνες. Ενδιαφέρεται για διάφορους τομείς της ζωγραφικής, της υφαντικής τέχνης και του πλεξίματος. Το έργο της αναδεικνύει υπαρξιακά ζητήματα που έχουν περιθωριοποιηθεί στην κοινωνία, χρησιμοποιώντας ποικίλα υλικά όπως υφάσματα και δέρματα. Έχει ολοκληρώσει πολλά καλλιτεχνικά έργα, με πιο αξιοσημείωτο το "Waiting for a Response from the Sea", το οποίο ασχολείται με την έννοια της διαφυγής από το γνωστό στο άγνωστο στο πλαίσιο της παράνομης μετανάστευσης. Ένα άλλο έργο, με τίτλο "Tangled Gray", ασχολείται με τους αγώνες και τις προκλήσεις που αντιμετωπίζουν οι νέοι της Γάζας αναζητώντας ένα λαμπρό μέλλον. Έλαβε επίσης επιχορήγηση παραγωγής για το Blue Vision, το οποίο διερευνά τις δυναμικές δομές και τον υπερπληθυσμό των καταυλισμών προσφύγων.

# ASHRAF SAHWIEL

A Palestinian refugee from Majdal Ashkelon, **ASHRAF SAHWIEL** was born in Gaza in 1973. He studied media at Al-Aqsa University in 2004. He also studied applied arts and interior design at the Arab College in Jordan in 1994, and architectural drawing at the Arab Cultural Center Academy in Jordan in 1993. He also studied scriptwriting and directing at the Arab School of Cinema and Television in Cairo, Egypt.

He is Chairman of the Board of Directors of the Gaza Center for Culture and Arts Association, a member of the Board of Directors of the General Union of Cultural Centers Network, and a member of the Palestinian Journalists Syndicate, member of the International Federation of Palestinian Journalists (FIP), member of the General Union of Palestinian Expressive Artists, and member of the Higher Committee of the Red Carpet Human Rights Film Festival. He worked as a journalist specializing in cultural coverage. He has directed several short films, including "One Roof" and "To My Friend." He supervised and participated in the implementation of the first, second, and third Gaza Festival for Contemporary Visual Arts and the Palestinian Visual Arts Movement Conference (National Studies). He had several solo exhibitions, including "Athar" in 1997, "Biyad Al-Watan" in 1998, and "Masafat" in 1999. He has also supervised the direction, implementation and production of several plays, including the women's monodrama "Part of the Story", the monodrama "Sahil", the plays "The Youth Maze", "Point of Order", "Where Are We Going?", "Deirat Bal", "I Am the Lucky One", the theatrical artistic operetta "Violet Tales", the Palestinian Prose Poem Conference, the first short story conference, and general supervision of the Narratives Laboratory.

Παλαιστίνιος πρόσφυγας από το Ματζντάλ Ασκέλον, γεννημένος στη Γάζα το 1973, ο **ASHRAF SAHWIEL** σπούδασε ΜΜΕ στο Πανεπιστήμιο Αλ-Άκσα το 2004. Επίσης εφαρμοσμένες τέχνες και εσωτερική διακόσμηση στο Αραβικό Κολλέγιο στην Ιορδανία το 1994 και αρχιτεκτονικό σχέδιο στην Ακαδημία του Αραβικού Πολιτιστικού Κέντρου στην Ιορδανία το 1993. Σπούδασε σεναριογραφία και σκηνοθεσία στην Αραβική Σχολή Κινηματογράφου και Τηλεόρασης στο Κάιρο.

# ASHRAF SAHWIEL

Είναι Πρόεδρος του Διοικητικού Συμβουλίου του Κέντρου της Γάζας για τον Πολιτισμό και τις Τέχνες, μέλος του Διοικητικού Συμβουλίου του Δικτύου Γενικής Ένωσης Πολιτιστικών Κέντρων, μέλος του Συνδικάτου Παλαιστινίων Δημοσιογράφων, μέλος της Διεθνούς Ομοσπονδίας Παλαιστινίων Δημοσιογράφων (FIP), μέλος της Γενικής Ένωσης Παλαιστινίων Εικαστικών Καλλιτεχνών και Μέλος της Επιτροπής του Φεστιβάλ Κινηματογράφου για τα Ανθρώπινα Δικαιώματα. Εργάστηκε ως δημοσιογράφος με εξειδίκευση στα πολιτιστικά θέματα. Έχει σκηνοθετήσει ταινίες μικρού μήκους, όπως "One Roof" και "To My Friend". Επέβλεψε και συμμετείχε στην υλοποίηση του πρώτου, δεύτερου και τρίτου Φεστιβάλ Σύγχρονων Εικαστικών Τεχνών της Γάζας και του Συνεδρίου του Παλαιστινιακού Κινήματος Εικαστικών Τεχνών (Κριτικές Σπουδές και Σύγχρονες Εμπειρίες). Πραγματοποίησε αρκετές ατομικές εκθέσεις, όπως «Athar» 1997, «Biyad Al-Watan» 1998 και «Masafat» 1999. Συμμετείχε επίσης σε καλλιτεχνικές τοιχογραφίες για εθνικές περιστάσεις και τον εορτασμό των Ημερών Παλαιστινιακής Κληρονομιάς, καθώς και σε πολλές ομαδικές εκθέσεις και διεθνή φεστιβάλ. Έχει επίσης επιβλέψει τη σκηνοθεσία, υλοποίηση και παραγωγή θεατρικών έργων, όπως το γυναικείο μονόπρακτο "Part of the Story", το μονόπραγμα «Sahil», τα έργα «Ο Λαβύρινθος των Νέων», «Σημείο Τάξης», «Πού Πάμε;», «Deirat Bal», «Είμαι ο Τυχερός», τη θεατρική καλλιτεχνική οπερέτα «Ώδεις Ιστορίες», το Συνέδριο Παλαιστινιακής Πεζογραφίας, το πρώτο συνέδριο διηγήματος, και τη γενική επιμέλεια του Εργαστηρίου Αφηγήσεων.

## AYA JUHA

**AYA JUHA** was born in 1991 in Gaza. Born 1991 in Gaza, she was displaced in North Gaza. She graduated with a degree in English translation in 2013, and worked at several educational centers focused on English language training for two years. In 2014, she returned to pursue her favorite hobby—painting. She began exploring the art world through social media platforms. She attended training workshops, participated in numerous art exhibitions, and conducted various training courses in still life and figure drawing since mid-2015. She received the Woman of Palestine Award for 2018 from the Ministry of Women's Affairs.

Η **AYA JUHA** γεννήθηκε το 1991 στη Γάζα και εκτοπίστηκε στη Βόρεια Γάζα. Αποφοίτησε με πτυχίο αγγλικής μετάφρασης το 2013 και εργάστηκε σε διάφορα εκπαιδευτικά κέντρα που επικεντρώνονται στην εκμάθηση της αγγλικής γλώσσας για δύο χρόνια. Το 2014, επέστρεψε για να ασχοληθεί με το αγαπημένο της χόμπι - τη ζωγραφική. Άρχισε να εξερευνά τον κόσμο της τέχνης μέσω πλατφορμών κοινωνικής δικτύωσης. Παρακολούθησε εκπαιδευτικά εργαστήρια, συμμετείχε σε πολλές εκθέσεις τέχνης και πραγματοποίησε διάφορα εκπαιδευτικά σεμινάρια πάνω στη νεκρή φύση και την ανθρώπινη φιγούρα από τα μέσα του 2015. Έλαβε το Βραβείο Γυναίκας της Παλαιστίνης για το 2018 από το Υπουργείο Γυναικείων Υποθέσεων.

## FADEL TAFESH

**FADEL TAFESH** was born in Gaza in 1995. He obtained a diploma in multimedia from Al-Aqsa University in Gaza City in 2016. At the age of four, his grandmother saw his talent and encouraged him to join the Al-Qattan Center for the Child, where he took many courses and met various artists. His first solo exhibition, as a child, was at the Al-Qattan Center. In 2018, Tafesh created a sculpture made of 500 sewing needles inscribed with the word 'hope'. In 2016, his exhibition Dream was presented at the Rashad Shawa Center, and he participated in the Light of the Cities Exhibition at the Arts Village. That same year, Tafesh created illustrations for the book How to Deal with Children in collaboration with UNRWA. Tafesh's work in 2015 was included in the exhibition And We Still Are, held at the Arts Village and organized by the Palestinian Youth Ambassadors, Gaza Municipality, and the Turkish Humanitarian Relief Foundation. He also took part in the exhibition Sosna, sponsored by the Abdul Mohsen Qattan Foundation, the Arabic Calligraphy exhibition Arabic Basics at the Arts Village and the Jerusalem Calls You on Palestinian Heritage Day. In addition, Tafesh was awarded third place in the International Women's Day competition at the Rashad Shawa Center, and first place in the Threads of Memory competition.

Ο **FADEL TAFESH** γεννήθηκε στη Γάζα το 1995. Απέκτησε δίπλωμα πολυμέσων από το Πανεπιστήμιο Αλ-Άκσα στην πόλη της Γάζας το 2016. Σε ηλικία τεσσάρων ετών, η γιαγιά του είδε το ταλέντο του και τον ενθάρρυνε να ενταχθεί στο Κέντρο για το Παιδί Αλ-Κατάν, όπου παρακολούθησε πολλά μαθήματα και γνώρισε διάφορους καλλιτέχνες. Η πρώτη του ατομική έκθεση, ως παιδί, πραγματοποιήθηκε στο Κέντρο Αλ-Κατάν. Το 2018, ο Tafesh δημιούργησε ένα γλυπτό από 500 βελόνες ραψίματος με χαραγμένη τη λέξη «ελπίδα». Το 2016, η έκθεσή του «Όνειρο» παρουσιάστηκε στο Κέντρο Ρασάντ Σάουα και συμμετείχε στην έκθεση «Φως των Πόλεων» στο Χωριό των Τεχνών. Την ίδια χρονιά, ο Tafesh δημιούργησε εικονογραφήσεις για το βιβλίο «Πώς να Αντιμετωπίσετε τα Παιδιά» σε συνεργασία με την UNRWA. Το 2015 συμμετείχε στην έκθεση «Και Είμαστε Ακόμα Εδώ», που πραγματοποιήθηκε στο Χωριό των Τεχνών και διοργανώθηκε από τους Παλαιστίνιους Νέους Πρεσβευτές, τον Δήμο της Γάζας και το Τουρκικό Ίδρυμα Ανθρωπιστικής

## FADEL TAFESH

Βοήθειας. Συμμετείχε επίσης στην έκθεση Sosna, η οποία χρηματοδοτήθηκε από το Ίδρυμα Abdul Mohsen Qattan, στην έκθεση αραβικής καλλιγραφίας Arabic Basics στο Χωριό των Τεχνών και στο Jerusalem Calls You την Ημέρα Παλαιστινιακής Κληρονομιάς. Ο Tafesh τιμήθηκε με την τρίτη θέση στον διαγωνισμό για την Παγκόσμια Ημέρα της Γυναίκας στο Κέντρο Rashad Shawa και την πρώτη θέση στον διαγωνισμό Threads of Memory.

## BASSEL AKLOUK

**BASSEL AKLOUK** is a Palestinian from Gaza – Deir al-Balah. He was born in Damascus in 1973. He received his Bachelor's degree in Fine Arts from An-Najah National University, Nablus and a Master's degree in Fine Arts / General Photography Department with honors from Alexandria University, Egypt. He also received a High-level qualification diploma in Art Education from Al-Aqsa University in Gaza in collaboration with Helwan University, Egypt. He was Director of Fine Arts at the Palestinian Ministry of Culture and worked as a lecturer at the Faculty of Fine Arts, Al-Aqsa University. He had 3 solo exhibitions in Palestine and Iran and participated in international group exhibitions and festivals in the USA, Norway, Venezuela, Colombia, Iran, the UAE, Syria, Egypt, Tunisia, Jordan, Russia and Spain, as well as in Jerusalem, the West Bank, and Gaza.

Ο **BASSEL AKLUK** είναι Παλαιστίνιος από το Deir al-Balah της Γάζας. Γεννήθηκε στη Δαμασκό το 1973. Αποφοίτησε με πτυχίο Καλών Τεχνών από το Εθνικό Πανεπιστήμιο An-Najah στη Ναμπλούς και με μεταπτυχιακό δίπλωμα στις Καλές Τέχνες / Τμήμα Γενικής Φωτογραφίας με άριστα από το Πανεπιστήμιο της Αλεξάνδρειας στην Αίγυπτο. Έλαβε επίσης δίπλωμα ανωτέρου επιπέδου στην Καλλιτεχνική Εκπαίδευση από το Πανεπιστήμιο Al-Aqsa στη Γάζα σε συνεργασία με το Πανεπιστήμιο Helwan της Αιγύπτου. Διετέλεσε Διευθυντής Καλών Τεχνών στο Παλαιστινιακό Υπουργείο Πολιτισμού και εργάστηκε ως λέκτορας στη Σχολή Καλών Τεχνών του Πανεπιστημίου Al-Aqsa. Είχε 3 ατομικές εκθέσεις στην Παλαιστίνη και το Ιράν και συμμετείχε σε διεθνείς ομαδικές εκθέσεις και φεστιβάλ σε ΗΠΑ, Νορβηγία, Βενεζουέλα, Κολομβία, Ιράν, Ηνωμένα Αραβικά Εμιράτα, Συρία, Αίγυπτο, Τυνησία, Ιορδανία, Ρωσία, Ισπανία, καθώς και σε Ιερουσαλήμ, Δυτική Όχθη και Γάζα.

## DIANA AL HOSARY

**DIANA AL HOSARY**, born in Gaza in 1988, is a visual artist, trainer, and teacher of fine arts. She also works in the field of psychological support through art with educational and cultural institutions like the Tamer and Al-Qattan Foundations, as well as Save the Children. In addition to her professional work, she practices photography and design. She obtained a Bachelor's degree in Fine Arts from Al-Aqsa University in Gaza in 2010, where she worked as a teaching assistant for one year. She also worked as an art teacher for secondary school students. Diana has received a number of certificates of appreciation for her artistic participation in various venues.

Η **DIANA AL HOSARY**, γεννημένη στη Γάζα το 1988, είναι εικαστικός, εκπαιδύτρια και καθηγήτρια καλών τεχνών. Εργάζεται επίσης στον τομέα της ψυχολογικής υποστήριξης μέσω της τέχνης με εκπαιδευτικά και πολιτιστικά ιδρύματα όπως τα Ιδρύματα Tamer και Al-Qattan, καθώς και το Save the Children. Εκτός από την επαγγελματική της εργασία, ασχολείται με τη φωτογραφία και το design. Απέκτησε πτυχίο Καλών Τεχνών από το Πανεπιστήμιο Al-Aqsa στη Γάζα το 2010, όπου εργάστηκε ως βοηθός για ένα χρόνο. Εργάστηκε επίσης ως καθηγήτρια τέχνης για μαθητές δευτεροβάθμιας εκπαίδευσης. Η Νταϊάνα έχει λάβει πολλά πιστοποιητικά επιβράβευσης για την καλλιτεχνική της συμμετοχή σε διάφορους χώρους.

## EMAD BADWAN

**EMAD BADWAN**, born in Deir Al Balah, is a filmmaker, photojournalist and photographer.

Ο **EMAD BADWAN**, γεννήθηκε στο Deir Al Balah και είναι σκηνοθέτης, δημοσιογράφος και φωτογράφος.

## HALA EID ALNAJI

**HALA EID ALNAJI**, born in 1988 in Gaza, is an architect, an artist, and a PhD researcher at the University of Westminster in London. She holds a master's degree in architecture and two years of advanced research in decolonizing architecture from the Royal Institute of Arts in Stockholm. Hala concluded her curatorial studies at the Curator Lab of Konstfack University-Stockholm. Hala spearheaded the curation of the Decolonizing Arts and Counter-speculations exhibition, which took place in the Gaza Strip. Additionally, she serves as a member of the Jurors Committee for the Palestinian Cultural Fund Grants, organized by the Palestinian Ministry of Culture in Ramallah, Palestine. Hala's professional experience extends across various NGOs and higher education institutions worldwide. She has worked as a researcher with Fargfabriken in Stockholm, as a visiting researcher at the University of Palestine in Gaza, and as a lecturer at the University of Brighton, in the United Kingdom. Hala has presented and published numerous articles and research papers at conferences throughout Europe and the Middle East. Her first book, *Scatterers In the Shadow*, was published in 2022.

Η **HALA EID ALNAJI**, γεννημένη το 1988 στη Γάζα, είναι αρχιτέκτων, εικαστικός και διδακτορική ερευνήτρια στο Πανεπιστήμιο του Westminster στο Λονδίνο. Κατέχει μεταπτυχιακό τίτλο σπουδών στην αρχιτεκτονική και δύο χρόνια προηγμένης έρευνας στην αποαποικιοποίηση της αρχιτεκτονικής από το Βασιλικό Ινστιτούτο Τεχνών στη Στοκχόλμη. Η Hala ολοκλήρωσε τις σπουδές της ως επιμελήτρια στο Εργαστήριο Επιμέλειας του Πανεπιστημίου Konstfack στη Στοκχόλμη. Η Hala ηγήθηκε της επιμέλειας της έκθεσης *Decolonizing Arts and Counter-speculations*, η οποία πραγματοποιήθηκε στη Λωρίδα της Γάζας. Επιπλέον, είναι μέλος της Επιτροπής Κριτών για τις Επιχορηγήσεις του Παλαιστινιακού Πολιτιστικού Ταμείου, που διοργανώνονται από το Παλαιστινιακό Υπουργείο Πολιτισμού στη Ραμάλα. Η Hala έχει αποκτήσει επαγγελματική εμπειρία σε διάφορες ΜΚΟ και ιδρύματα τρίτοβάθμιας εκπαίδευσης παγκοσμίως. Έχει εργαστεί ως ερευνήτρια στο Fargfabriken στη Στοκχόλμη, ως επισκέπτρια ερευνήτρια στο Πανεπιστήμιο της Παλαιστίνης στη Γάζα και ως λέκτορας στο Πανεπιστήμιο του Μπράιτον, στο Ηνωμένο Βασίλειο. Έχει παρουσιάσει και δημοσιεύσει πολλά άρθρα και ερευνητικές εργασίες σε συνέδρια σε όλη την Ευρώπη και τη Μέση Ανατολή. Το πρώτο της βιβλίο, *Scatterers In the Shadow*, εκδόθηκε το 2022.

## GHANEM DIAB SAID AL DEN

**GHANEM AL DEN** was born in 1970 in Al-Bureij Refugee Camp, Gaza. He is a Visual artist and a researcher in the field of contemporary art. He studied at Al-Aqsa University and graduated from the Faculty of Fine Arts, majoring in Art Education. He is a Member of the General Union of Palestinian Fine Artists, Founder and President of the Palita Fine Arts Group, founding member of Juzour Fine Arts Group, Palestine Commissar and founding member of the Basmat Group of Arab Plastic Artists in Cairo. Held and participated in numerous solo and group exhibitions inside and outside the country – Palestine – Cairo – Japan – America – Morocco – Yemen – Turkey, etc. He supervised and curated many art exhibitions and events at several local institutions and associations. He has received numerous national and international awards.

Ο **GHANEM AL DEN**, γεννημένος το 1970 στο στρατόπεδο προσφύγων Al-Bureij στη Γάζα, είναι εικαστικός καλλιτέχνης και ερευνητής στον τομέα των σύγχρονων εικαστικών τεχνών. Σπούδασε στο Πανεπιστήμιο Al-Aqsa και αποφοίτησε από τη Σχολή Καλών Τεχνών με ειδίκευση στην Καλλιτεχνική Εκπαίδευση. Είναι μέλος της Γενικής Ένωσης Παλαιστινίων Καλλιτεχνών, ιδρυτής και πρόεδρος του Ομίλου Palita Fine Arts, ιδρυτικό μέλος του Ομίλου Juzour Fine Arts, Επίτροπος της Παλαιστίνης και ιδρυτικό μέλος του Ομίλου Basmat Αράβων Καλλιτεχνών Πλαστικών στο Κάιρο. Έχει συμμετάσχει σε πολυάριθμες ατομικές και ομαδικές εκθέσεις εντός και εκτός της χώρας - Παλαιστίνη - Κάιρο - Ιαπωνία - Αμερική - Μαρόκο - Υεμένη - Τουρκία, κ.λπ. Έχει επιβλέψει και επιμεληθεί πολλές εκθέσεις τέχνης και εκδηλώσεις σε διάφορα τοπικά ιδρύματα και συλλόγους. Έχει λάβει πολλά εθνικά και διεθνή βραβεία.

# JEHAD JARBOU

**JEHAD JARBOU** is a twenty-four-year-old visual artist from Gaza. She participated in the Gaza Artists Exhibition at the Palestinian Museum in 2024 and won first place in the Imagine Freedom Competition of 2024 at the Wall Hotel in Bethlehem. She also secured third place at the 2021 International Video Art Festival at the French Institute with *The Unknown*, which addresses the issue of immigration. Jihad has received grants and has various local and international contemporary arts participations, including an art residency with Italian artists in Milan, in collaboration with the Tamer Institute for Community Education and the Mediterranean Frequencies Exhibition. She also took part in the *Built for the Isolated* exhibition organized by the International Committee of the Red Cross in the Palestinian territories in 2023 and received an art residency at the Shababik Workshop in 2022. Jihad is working on the *Mirrors* project, which explores the borders related to Gaza as a "prison within a prison." She is interested in exploring and narrating concepts related to identity, borders, memory, and structures through her art. Jihad uses contemporary art as a tool to address these themes, including video art, conceptual photography, and written reflections.

Η **JEHAD JARBOU** είναι μια εικοσιτετράχρονη εικαστική καλλιτέχνης από τη Γάζα. Συμμετείχε στην Έκθεση Καλλιτεχνών της Γάζας στο Παλαιστινιακό Μουσείο το 2024 και κέρδισε την πρώτη θέση στον Διαγωνισμό *Imagine Freedom* του 2024 στο Wall Hotel στη Βηθλεέμ. Εξασφάλισε επίσης την τρίτη θέση στο Διεθνές Φεστιβάλ Βιντεοτέχνης του 2021 στο Γαλλικό Ινστιτούτο με το *The Unknown*, το οποίο ασχολείται με το ζήτημα της μετανάστευσης. Η Jihad έχει πολλαπλές συμμετοχές, επιχορηγήσεις και έχει λάβει διεθνή μετεκπαίδευση στις σύγχρονες τέχνες, συμπεριλαμβανομένης μιας καλλιτεχνικής φιλοξενίας με Ιταλούς καλλιτέχνες στο Μιλάνο, σε συνεργασία με το Ινστιτούτο Tamer για την Κοινωνική Εκπαίδευση και την Έκθεση *Mediterranean Frequencies*. Συμμετείχε επίσης στην έκθεση *Built for the Isolated* που διοργάνωσε η Διεθνής Επιτροπή του Ερυθρού Σταυρού στα παλαιστινιακά εδάφη το 2023 και έλαβε μια καλλιτεχνική φιλοξενία στο Shababik Workshop το 2022. Η Jihad εργάζεται στο project *Mirrors*, το οποίο εξερευνά τα σύνορα που σχετίζονται με τη Γάζα ως «φυλακή μέσα σε φυλακή». Ενδιαφέρεται να

# JEHAD JARBOU

εξερευνήσει και να αφηγηθεί έννοιες που σχετίζονται με την ταυτότητα, τα σύνορα, τη μνήμη και τις δομές μέσω της τέχνης της. Η Jihad χρησιμοποιεί τη σύγχρονη τέχνη ως εργαλείο για να αντιμετωπίσει αυτά τα θέματα, συμπεριλαμβανομένης της βιντεοτέχνης, της εννοιολογικής φωτογραφίας και των γραπτών στοχασμών.

## IBRAHIM AL SULTAN

**IBRAHIM ALI AL SULTAN**, born in 1990 in Gaza is a Palestinian contemporary artist. His ambition in the arts is evident through his active participation in numerous workshops and cultural activities within Gaza. Al Sultan works across various artistic disciplines, including abstract painting, sculpture, writing, acting, dancing, music. In 2023, Ibrahim participated in a sculpting workshop conducted by the Dar-Alkalema University Training Center in Gaza. He has also made significant contributions to literature, recently launching his book *Human Identity*, a collection of his poems, essays, and art, which is set to be published in Europe and the United States. Through his diverse artistic endeavors, Al Sultan aims to convey a message of peace and tranquility, hoping these concepts will resonate with and inspire humanity worldwide.

Ο **IBRAHIM ALI AL SULTAN**, γεννημένος το 1990 στη Γάζα, είναι Παλαιστίνιος καλλιτέχνης. Έχει συμμετάσχει σε πολυάριθμα εργαστήρια και πολιτιστικές δραστηριότητες στη Γάζα. Ο Al Sultan εργάζεται σε διάφορους καλλιτεχνικούς κλάδους, όπως η αφηρημένη ζωγραφική, η γλυπτική, η γραφή, η υποκριτική, ο χορός, η μουσική. Το 2023, ο Ibrahim συμμετείχε στο εργαστήριο γλυπτικής που πραγματοποιήθηκε από το Κέντρο Εκπαίδευσης του Πανεπιστημίου Dar-Alkalema στη Γάζα. Έχει σημαντική συμβολή στη λογοτεχνία, κυκλοφορώντας πρόσφατα το βιβλίο του *Human Identity*, μια συλλογή από ποιήματα, δοκίμια και έργα τέχνης του, το οποίο πρόκειται να εκδοθεί στην Ευρώπη και τις Ηνωμένες Πολιτείες. Μέσα από τις ποικίλες καλλιτεχνικές του προσπάθειες, ο Al Sultan στοχεύει να μεταφέρει ένα μήνυμα ειρήνης και ηρεμίας, ελπίζοντας ότι αυτές οι έννοιες θα βρουν απήχηση και θα εμπνεύσουν την ανθρωπότητα παγκοσμίως.

## LAMIS DAJANI SHAWWA

*Independent curator's choice / Ανεξάρτητη επιμελητική πρόταση*

**LAMIS DAJANI SHAWWA** is a Palestinian visual artist and interior designer residing in Greece. She studied Art at La Verne University (Athens, Greece) and Interior Design at the Inchbald School of Design (London, UK). She went on to teach at Inchbald for a number of years. Lamis worked at interior design projects in Toronto, Jerusalem, London, Damascus, and Athens. Her artworks was exhibited in Washington DC, Athens and Venice. Her sculpture "Peace" ("Salam"), part of the Human Bridge project, was exhibited in the Between Music and Art Festival 2025 Sicily and has been selected to be immersed in the sea of Lampedusa.

Η **LAMIS DAJANI SHAWWA** είναι Παλαιστίνια εικαστικός καλλιτέχνης και διακοσμήτρια εσωτερικών χώρων που ζει στην Ελλάδα. Σπούδασε Καλές Τέχνες στο Πανεπιστήμιο La Verne (Αθήνα, Ελλάδα) και στη συνέχεια Διακόσμηση Εσωτερικών Χώρων στη Σχολή Σχεδίου Inchbald (Λονδίνο, Ηνωμένο Βασίλειο). Συνέχισε να διδάσκει στο Inchbald για αρκετά χρόνια. Η Lamis εργάστηκε σε έργα εσωτερικής διακόσμησης στο Τορόντο, την Ιερουσαλήμ, το Λονδίνο, τη Δαμασκό και την Αθήνα και τα εικαστικά έργα της εκτέθηκαν στην Ουάσινγκτον, στην Αθήνα και στη Βενετία. Το έργο τέχνης της «Ειρήνη» («Salam»), τμήμα του The Human Bridge project εκτέθηκε στα πλαίσια του Φεστιβάλ Between Music & Arts 2025 και επιλέχθηκε να βυθιστεί στη θάλασσα της Λαμπεντούζα.

# MAISARA BAROUD

*Independent curator's choice / Ανεξάρτητη επιμελητική πρόταση*

**MAISARA BAROUD** is a visual artist who was born in Gaza in 1976. He has worked as a university lecturer at the College of Fine Arts at Al-Aqsa University in Gaza. Baroud earned a Bachelor of Fine Arts from Al-Najah National University in Nablus (1998) and a Master of Fine Arts from the College of Fine Arts in Zamalek, Cairo (2011).

Baroud has participated in numerous local and international group exhibitions in Palestine, France, the United States, Japan, Italy, Russia, Canada, Qatar, Cairo, Algeria, the UAE, Lebanon, Jordan, Tunisia, Kuwait, and India. He has also held six solo exhibitions: "Rubble" (2021) at the French Cultural Institute in Gaza, "Existence" (2021) online exhibition at Art Scoops in Lebanon, "Salt Boats" (2019) in Bethlehem, "White Phosphorus for the Birth of Elia" (2009) at the College of Fine Arts in Cairo followed by exhibitions in Algeria and Gaza, "Glimmer Flash" (2009) in Algeria, and "Rita and the Rifle" (2004) in Gaza.

Ο **MAISARA BAROUD** είναι εικαστικός καλλιτέχνης που γεννήθηκε στη Γάζα το 1976. Εργάστηκε ως λέκτορας πανεπιστημίου στη Σχολή Καλών Τεχνών του Πανεπιστημίου Al-Aqsa στη Γάζα. Ο Baroud απέκτησε πτυχίο Καλών Τεχνών από το Εθνικό Πανεπιστήμιο Al-Najah στη Ναμπλούς (1998) και μεταπτυχιακό δίπλωμα Καλών Τεχνών από τη Σχολή Καλών Τεχνών στο Zamalek του Καΐρου (2011). Ο Baroud έχει συμμετάσχει σε πολυάριθμες τοπικές και διεθνείς ομαδικές εκθέσεις στην Παλαιστίνη, τη Γαλλία, τις Ηνωμένες Πολιτείες, την Ιαπωνία, την Ιταλία, τη Ρωσία, τον Καναδά, το Κατάρ, το Κάιρο, την Αλγερία, τα Ηνωμένα Αραβικά Εμιράτα, τον Λίβανο, την Ιορδανία, την Τυνησία, το Κουβέιτ και την Ινδία. Έχει επίσης πραγματοποιήσει έξι ατομικές εκθέσεις: «Rubble» (2021) στο Γαλλικό Πολιτιστικό Ινστιτούτο στη Γάζα, «Existence» (2021) διαδικτυακή έκθεση στο Art Scoops στον Λίβανο, «Salt Boats» (2019) στη Βηθλεέμ, «White Phosphorus for the Birth of Elia» (2009) στο Κολλέγιο Καλών Τεχνών στο Κάιρο, ακολουθούμενες από εκθέσεις στην Αλγερία και τη Γάζα, «Glimmer Flash» (2009) στην Αλγερία και «Rita and the Rifle» (2004) στη Γάζα.

# MARY ANN JARAISSY

*Independent curator's choice / Ανεξάρτητη επιμελητική πρόταση*

**MARY ANN JARAISSY** is a Palestinian designer and potter (ceramist) who grew up in Palestine and moved to Amsterdam in 2016. After studying at Kleiacademie in Amsterdam, she focused on Ceramics and started developing her own signature collections of contemporary pieces that are a fusion of traditions and stories. Arabic typography, cultural motifs and Palestine heritage are her source of inspiration. Currently she is working in a co-shared studio in Haarlem city to create her pieces under her brand "Ballet Teen" which means "Wet clay" in Arabic.

When not working with ceramics, she is busy with social innovation. She is a co-founder of 'The Hummus Academy', a think tank dedicated to decolonizing indigenous cuisines by creating spaces for authentic and ethical narratives that bridge histories and futures through experiences and products.

Η **MARY ANN JARAISSY** είναι Παλαιστίνια σχεδιάστρια και κεραμίστρια. Μεγάλωσε στην Παλαιστίνη και μετακόμισε στο Άμστερνταμ το 2016. Αφού σπούδασε στην Kleiacademie στο Άμστερνταμ, επικεντρώθηκε στην κεραμική. Έτσι άρχισε να αναπτύσσει τα δικά της χαρακτηριστικά κεραμικά, ως σύγχρονα κομμάτια που αποτελούν μια συγχώνευση παραδόσεων και ιστοριών. Η αραβική τυπογραφία, τα πολιτιστικά μοτίβα και η παλαιστινιακή κληρονομιά αποτελούν τις πηγές έμπνευσης της. Αυτή τη στιγμή εργάζεται σε ένα κοινόχρηστο στούντιο στην πόλη Χάαρλεμ όπου δημιουργεί τα έργα της με την επωνυμία "Ballet Teen" που σημαίνει "Υγρός πηλός" στα αραβικά. Η Jaraiisy ασχολείται επίσης με την κοινωνική καινοτομία. Είναι συνιδρύτρια της "The Hummus Academy". Μιας δεξαμενής σκέψης αφιερωμένης στην αποαποικιοποίηση των ιθαγενών κουζινών, δημιουργώντας χώρους για αυθεντικές και ηθικές αφηγήσεις που γεφυρώνουν ιστορίες και μέλλοντα μέσω εμπειριών και προϊόντων.

## MOTAZ NAIM

**MOTAZ NAIM** is a Palestinian artist, born in 1973 in Damascus, Syria. He earned his Bachelor's degree from the Faculty of Fine Arts at Damascus University in 1997. He has held four solo exhibitions in Syria, Palestine and the UAE, and regularly participates in art and cultural exhibitions in galleries and museums both locally and internationally. Naim's paintings reflect his personal and academic experiences, blending expressionism and abstraction inspired by Palestinian nature and memory. He uses a restrained color palette to depict the Palestinian reality, with visual manifestations that merge memory and modernity. Currently, Naim teaches art at Khan Younis College while being displaced in Egypt.

Ο **MOTAZ NAIM** είναι Παλαιστίνιος καλλιτέχνης. Γεννήθηκε το 1973 στη Δαμασκό της Συρίας και απέκτησε πτυχίο από τη Σχολή Καλών Τεχνών του Πανεπιστημίου της Δαμασκού το 1997. Έχει πραγματοποιήσει τέσσερις ατομικές εκθέσεις στη Συρία, την Παλαιστίνη και τα ΗΑΕ και συμμετέχει τακτικά σε καλλιτεχνικές και πολιτιστικές εκθέσεις σε γκαλερί και μουσεία τόσο σε τοπικό όσο και σε διεθνές επίπεδο. Οι πίνακες του Naim αντανakλούν τις προσωπικές και ακαδημαϊκές του εμπειρίες, συνδυάζοντας τον εξπρεσιονισμό και την αφαίρεση εμπνευσμένα από την παλαιστινιακή φύση και μνήμη. Χρησιμοποιεί μια συγκρατημένη χρωματική παλέτα για να απεικονίσει την παλαιστινιακή πραγματικότητα, σε ζωγραφικά έργα που συνδυάζουν τη μνήμη και τη νεωτερικότητα. Επί του παρόντος, ο Naim διδάσκει τέχνη στο Κολλέγιο Khan Younis, ενώ είναι εκτοπισμένος στην Αίγυπτο.

## KHALED IBRAHIM HUSSEIN

A visual artist born in 1975 in Rafah, Gaza, **KHALED IBRAHIM HUSSEIN** graduated with a bachelor's degree in art education from Al-Aqsa University in 1999. Since then, he has become an active figure in the Palestinian art scene, both as an artist and as a founding member of the Kayan Contemporary Arts Group. Khaled has participated in several group exhibitions, including Colors from Gaza at the Walled-Off Hotel in Bethlehem in 2022, Gift Gallery at the Al-Mamal Foundation in 2021, Qalandia International at Shababeek Gallery in Gaza in 2018, Song of Stone at the YMCA in 2017, and On Jerusalem Road at Roots Gallery in Gaza in 2016. Khaled has also participated in numerous workshops and events both locally and internationally.

Εικαστικός καλλιτέχνης, γεννημένος το 1975 στη Ράφα της Γάζας, ο **KHALED IBRAHIM HUSSEIN** αποφοίτησε με πτυχίο στην καλλιτεχνική εκπαίδευση από το Πανεπιστήμιο Αλ-Άκσα το 1999. Έκτοτε, έχει γίνει ενεργό μέλος της παλαιστινιακής καλλιτεχνικής σκηνής, τόσο ως καλλιτέχνης όσο και ως ιδρυτικό μέλος της Kayan Contemporary Arts Group. Ο Khaled Hussein έχει συμμετάσχει σε αρκετές ομαδικές εκθέσεις, όπως οι Colors from Gaza στο Walled-Off Hotel στη Βηθλεέμ το 2022, Gift Gallery στο Ίδρυμα Αλ-Μαμάλ το 2021, Qalandia International στην Shababeek Gallery στη Γάζα το 2018, Song of Stone στο YMCA το 2017 και On Jerusalem Road στην Roots Gallery στη Γάζα το 2016. Ο Khaled Hussein έχει επίσης συμμετάσχει σε πολλά εργαστήρια και εκδηλώσεις τόσο σε τοπικό όσο και σε διεθνές επίπεδο.

## LIZA MADI

**LIZA MADI**, born in 1993 in Gaza, is a visual artist and interior designer. She earned a diploma in arts and handicrafts from the University College of Applied Sciences in Gaza, and completed her bachelor's degree in interior design from Al-Aqsa University in Gaza. She has worked with the Tamer Institute for Community Education as a facilitator and arts instructor for children. She has participated in numerous art courses and workshops and volunteered in various artistic initiatives. Madi has shown her work in local and international group exhibitions. Some recent exhibitions include the Gaza International Airport with the Tamer Institute for Community Education at the French Institute in Gaza, Love and War in Washington D.C., and Our Heritage Is Our Identity in Beit Lahiya, Gaza.

Η **LIZA MADI** γεννήθηκε το 1993 στη Γάζα. Είναι εικαστική καλλιτέχνης και διακοσμήτρια εσωτερικών χώρων. Απέκτησε δίπλωμα στις τέχνες και τη χειροτεχνία από το Πανεπιστημιακό Κολλέγιο Εφαρμοσμένων Επιστημών στη Γάζα και ολοκλήρωσε τις σπουδές της στον εσωτερικό σχεδιασμό από το Πανεπιστήμιο Al-Aqsa στη Γάζα. Έχει συνεργαστεί με το Ινστιτούτο Κοινωνικής Εκπαίδευσης Tamer ως συντονίστρια και εκπαιδύτρια τέχνης για παιδιά. Έχει συμμετάσχει σε πολλά μαθήματα και εργαστήρια τέχνης και έχει προσφέρει εθελοντικά τις υπηρεσίες της σε διάφορες καλλιτεχνικές πρωτοβουλίες. Η Madi έχει παρουσιάσει το έργο της σε τοπικές και διεθνείς ομαδικές εκθέσεις. Μερικές πρόσφατες εκθέσεις περιλαμβάνουν το Διεθνές Αεροδρόμιο της Γάζας με το Ινστιτούτο Κοινωνικής Εκπαίδευσης Tamer στο Γαλλικό Ινστιτούτο στη Γάζα, Αγάπη και Πόλεμος στην Ουάσινγκτον και Κληρονομιά μας Είναι η Ταυτότητά μας στη Μπέιτ Λαχιά της Γάζας.

## MAYSA YOUSEF

**MAYSA YOUSEF** was born in 1984, Al-Shati Refugee Camp, Gaza. She holds a Higher Diploma in Nursing from the Military Medical Services (2002-2005) and worked at Balsam Hospital for Military Medical Services. She earned a Bachelor's degree in Fine Arts – Photography from Al-Aqsa University (2006-2010). Her artworks belong to the Magical Realism school and are executed through collage art, a style she has continuously developed since the beginning of her artistic career, experimenting with unique materials to give her works a distinctive touch and signature. She has participated in various contemporary art workshops such as Talent Development for Youth, Art Spring, Artists for Palestine, Al-Ilmi Vault and contributed to several murals including Traces of War, Fighting Corruption, Human Rights Day, Women's International Day, National Unity, Prisoners' Day, and Nakba Day. Her work has been shown in local and international exhibitions, including the Milad International Festival, in collaboration with Eltiqa Group, the French Cultural Center, the Culture and Free Thought Association in Gaza, and the Khalil Sakakini Cultural Center in Ramallah. She is a member of the Palestinian Fine Artists' Association in Europe and the Fine Artists' Association in Morocco.

Η **MAYSA YOUSEF**, γεννήθηκε το 1984, στο στρατόπεδο προσφύγων Al-Shati στη Γάζα, κατέχει Ανώτερο Δίπλωμα Νοσηλευτικής από τις Στρατιωτικές Ιατρικές Υπηρεσίες (2002-2005) και εργάστηκε στο Νοσοκομείο Balsam για τις Στρατιωτικές Ιατρικές Υπηρεσίες. Απέκτησε πτυχίο Καλών Τεχνών - Φωτογραφίας από το Πανεπιστήμιο Al-Aqsa (2006-2010). Τα έργα τέχνης της ανήκουν στη σχολή του Μαγικού Ρεαλισμού και εκτελούνται μέσω της τέχνης κολάζ, ενός στυλ που έχει αναπτύξει συνεχώς από την αρχή της καλλιτεχνικής της καριέρας, πειραματιζόμενη με μοναδικά υλικά για να δώσει στα έργα της μια ξεχωριστή πινελιά και υπογραφή. Έχει συμμετάσχει σε διάφορα εργαστήρια σύγχρονης τέχνης όπως το Talent Development for Youth, το Art Spring, το Artists for Palestine, το Al-Ilmi Vault και έχει συνεισφέρει σε αρκετές τοιχογραφίες, όπως τα Traces of War, Fighting Corruption, Human Rights Day, Women's International Day, National Unity, Prisoners' Day και Nakba

## MAYSA YOUSEF

Day. Το έργο της έχει παρουσιαστεί σε τοπικές και διεθνείς εκθέσεις, συμπεριλαμβανομένου του Διεθνούς Φεστιβάλ Milad, σε συνεργασία με τον Όμιλο Ελίφα, το Γαλλικό Πολιτιστικό Κέντρο, τον Σύνδεσμο Πολιτισμού και Ελεύθερης Σκέψης στη Γάζα και το Πολιτιστικό Κέντρο Khalil Sakakini στη Ραμάλα. Είναι μέλος του Συνδέσμου Παλαιστινίων Καλλιτεχνών στην Ευρώπη και του Συνδέσμου Καλλιτεχνών στο Μαρόκο.

## OLA AL SHERIF

**OLA AL SHERIF**, born in 1996 in Gaza, is of Saudi origin and currently resides in Abu Dhabi. She developed a passion for art from a young age, being the talented child in her class. Despite her family's wish for her to become a doctor or lawyer, Ola insisted on studying art and enrolled in the Faculty of Fine Arts at the University of Damascus in 2014. She has showcased her art since an early age and participated in local and international exhibitions, including the Hands of Peace in 2015. After graduating in 2018, she worked as an art teacher in Gaza and later transitioned to the beauty industry, opening her own salon in 2021. Her work has been profoundly impacted by the war in Gaza, during which she lost many of her artworks. She is currently painting in Qatar.

Η **OLA AL SHERIF**, γεννήθηκε το 1996 στη Γάζα, είναι σαουδαραβικής καταγωγής και κατοικεί σήμερα στο Άμπου Ντάμπι. Ανέπτυξε πάθος για την τέχνη από μικρή ηλικία, όντας το ταλαντούχο παιδί της τάξης της. Παρά την επιθυμία της οικογένειάς της να γίνει γιατρός ή δικηγόρος, η Όλα επέμεινε να σπουδάσει τέχνη και εγγράφηκε στη Σχολή Καλών Τεχνών του Πανεπιστημίου της Δαμασκού το 2014. Έχει παρουσιάσει την τέχνη της από μικρή ηλικία και συμμετείχε σε τοπικές και διεθνείς εκθέσεις, συμπεριλαμβανομένης της έκθεσης Hands of Peace το 2015. Μετά την αποφοίτησή της το 2018, εργάστηκε ως καθηγήτρια τέχνης στη Γάζα και αργότερα μεταπήδησε στον κλάδο της ομορφιάς, ανοίγοντας το δικό της οίκο ομορφιάς το 2021. Το έργο της έχει επηρεαστεί βαθιά από τον πόλεμο στη Γάζα, κατά τη διάρκεια του οποίου έχασε πολλά από τα έργα τέχνης της. Αυτή τη στιγμή ζωγραφίζει στο Κατάρ.

## OSAMA NAQQA HUSSEIN

**OSAMA NAQQA HUSSEIN**, born in 1996, is a visual artist from Khan Younis, Gaza. His work explores body language and internal conflicts, aiming for a transformative shift through art. He invites viewers to feel every line and detail rather than just seeing a framed image on a wall. Osama has participated in numerous international exhibitions, including a solo show, *Stories from Gaza*, in Bahrain, and exhibitions in museums and galleries in Mexico, Italy, Canada, and France.

Ο **OSAMA NAQQA HUSSEIN** γεννήθηκε το 1996 και είναι εικαστικός καλλιτέχνης από το Χαν Γιουνίς της Γάζας. Το έργο του εξερευνά τη γλώσσα του σώματος και τις εσωτερικές συγκρούσεις, στοχεύοντας σε μια μεταμορφωτική αλλαγή μέσω της τέχνης. Προσκαλεί τους θεατές να νιώσουν κάθε γραμμή και λεπτομέρεια αντί να βλέπουν απλώς μια καθραρισμένη εικόνα σε έναν τοίχο. Ο Οσάμα έχει συμμετάσχει σε πολυάριθμες διεθνείς εκθέσεις, συμπεριλαμβανομένης μιας ατομικής έκθεσης, με τίτλο «Ιστορίες από τη Γάζα», στο Μπαχρέιν, και σε εκθέσεις σε μουσεία και γκαλερί στο Μεξικό, την Ιταλία, τον Καναδά και τη Γαλλία.

## RASHA AL RAIS

**RASHA AL RAIS** is a student of fine arts, who was only a few hours away from her graduation, when her university was blown to pieces! During her university studies, supported by the Qattan Foundation for university students, she initiated many projects to create life on campus. These activities focus on art. She conducted art activities for children during the summer before the war, and during the war, she opened a foundational educational kindergarten for children and launched many artistic initiatives for them. She is now involved in initiatives that promote art therapy.

Η **RASHA AL RAIS** είναι φοιτήτρια καλών τεχνών, η οποία απείχε μόνο λίγες ώρες από την αποφοίτησή της, όταν η σχολή της βομβαρδίστηκε! Κατά τη διάρκεια των πανεπιστημιακών σπουδών της, με την υποστήριξη του Ιδρύματος Qattan για φοιτητές, ξεκίνησε πολλές πρωτοβουλίες για να δώσει ζωή στην πανεπιστημιούπολη. Αυτές οι δραστηριότητες επικεντρώνονται στην τέχνη. Διεξήγαγε καλλιτεχνικές δραστηριότητες για παιδιά κατά τη διάρκεια του καλοκαιριού πριν από τον πόλεμο, και κατά τη διάρκεια του πολέμου άνοιξε ένα ίδρυμα εκπαίδευσης για παιδιά και ξεκίνησε πολλές καλλιτεχνικές πρωτοβουλίες για αυτά. Τώρα συμμετέχει σε πρωτοβουλίες που προωθούν την ψυχοθεραπεία μέσω της τέχνης.

# RUBA MAHMOUD HASSAN

**RUBA MAHMOUD HASSAN**, born in 1996 in Beit Hanoun, Gaza is an artist and a dentist. She has participated in two exhibitions. Originally from Beit Hanoun, on the northern border of Gaza Strip, she has been displaced six times during the war, eventually ending up in Cairo. She left everything behind, and all her artwork was lost in Gaza.

Η **RUBA MAHMOUD HASSAN** γεννήθηκε το 1996 και είναι καλλιτέχνιδα και οδοντίατρος. Έχει συμμετάσχει σε δύο εκθέσεις. Κατάγεται από το Μπέιτ Χα-νούν στα βόρεια σύνορα της Λωρίδας της Γάζας, και έχει εκτοπιστεί έξι φορές κατά τη διάρκεια του πολέμου, καταλήγοντας τελικά στο Κάιρο. Άφησε τα πάντα πίσω της και όλα τα έργα τέχνης της χάθηκαν στη Γάζα.

# SOHAIL SALEM

**SOHAIL SALEM** was born in Palestine, Gaza, in December 1974. He received B.A. of Fine Arts from Al-Aqsa University in 1999. He teaches art at Al-Aqsa University, Faculty of Fine Arts. He is a co-founder of Eltiqa Group of Contemporary Arts. He obtained a residency in Amman "September Summer Academy for arts" Darat Al Funun, Khalid Shoman Foundation, supervised by the artist Marwan Kassab Bashi in 2001 and 2003, a residency in Switzerland – Geneva "Arts place de l'île", 2005, and a Residency in City International des Arts – France, Paris in 2010. He participated in many local and international exhibitions. Sohail produced four personal exhibitions, and worked as a teacher of Fine Arts for one year at the University of the Al-Aqsa University. He was a supervisor in a program of contemporary arts „GCAP“ in gallery Eltiqa 2014. Sohail lives in Gaza and works in Graphic design and fine arts. He has been filling school notebooks with sketches throughout the genocide. The notebooks themselves are a testament to something that cannot be easily described or denied.

Ο **SOHAIL SALEM** γεννήθηκε στη Γάζα τον Δεκέμβριο του 1974 και έλαβε πτυχίο Καλών Τεχνών από το Πανεπιστήμιο Al-Aqsa το 1999. Διδάσκει τέχνη στο Πανεπιστήμιο Al-Aqsa, στη Σχολή Καλών Τεχνών. Είναι συνιδρυτής του Ομίλου Σύγχρονων Τεχνών Eltiqa. Συμμετείχε σε προγράμματα φιλοξενίας καλλιτεχνών στο Αμμάν, στο «September Summer Academy for arts» Darat Al Funun, Ίδρυμα Khalid Shoman, υπό την επίβλεψη του καλλιτέχνη Marwan Kassab Bashi το 2001 και το 2003, στην Ελβετία – Γενεύη «Arts place de l'île» το 2005 και στο City International des Arts – Γαλλία, Παρίσι το 2010. Συμμετείχε σε πολλές εθνικές και διεθνείς εκθέσεις, μεταξύ των οποίων τέσσερις ατομικές εκθέσεις. Ήταν επιβλέπων στο πρόγραμμα σύγχρονης τέχνης «GCAP» στην γκαλερί Eltiqa το 2014. Ο Sohail ζει στη Γάζα και εργάζεται στον γραφιστικό σχεδιασμό και τις καλές τέχνες. Salem έχει γεμίσει σχολικά τετράδια με σκίτσα καθ' όλη τη διάρκεια της γενοκτονίας δημιουργώντας εκατοντάδες έργα. Τα ίδια τα τετράδια είναι μια μαρτυρία για κάτι που δεν μπορεί εύκολα κανείς να περιγράψει ή να αρνηθεί.

## YASMEEN AL DAYA

**YASMEEN AL DAYA** was born in Gaza in 2001. She has studied for a bachelor's degree in art education and has completed several self-initiated projects that reflect women's issues and freedom. She is interested in multiple fields of art, including photography, sculpture, and mosaic. Al Daya has participated in several exhibitions and workshops, including a sculpture course, from which she produced ten completed works, each addressing a different topic. Her style is characterized by realism, and she strives to highlight light, color, and shadows in her paintings. She is influenced by the styles of Rembrandt and Vermeer, and is also interested in experimenting with different mediums and techniques.

Η **YASMEEN AL DAYA** γεννήθηκε στη Γάζα το 2001. Σπούδασε καλλιτεχνική εκπαίδευση και έχει ολοκληρώσει πολλά αυτοσχέδια πρότζεκτ που αντικατοπτρίζουν τα ζητήματα και την ελευθερία των γυναικών. Ενδιαφέρεται για πολλαπλούς τομείς τέχνης, όπως η φωτογραφία, η γλυπτική και το ψηφιδωτό. Η Al Daya έχει συμμετάσχει σε διάφορες εκθέσεις και εργαστήρια, συμπεριλαμβανομένου ένα σεμινάριο γλυπτικής, από το οποίο παρήγαγε δέκα ολοκληρωμένα έργα, το καθένα με διαφορετικό θέμα. Το στυλ της χαρακτηρίζεται από ρεαλισμό όπου προσπαθεί να αναδείξει το φως, το χρώμα και τις σκιές στους πίνακές της. Επηρεάζεται από τα στυλ των Ρέμπραντ και Βερμέερ και ενδιαφέρεται επίσης να πειραματιστεί με διαφορετικά μέσα και τεχνικές.

## YAHYA ABDEL SALAM AL SHOULI

**YAHYA ABDEL SALAM AL SHOULI**, born in Gaza. He studied Arabic language and literature. He began his career in 2017 with a short fiction film that won a local award, followed by a short documentary, *Dreams and Barriers*. He received intensive training in directing and video art with Asmaa Bseiso and Mohammad Harb, which led him to produce a video art piece titled *10 Seconds*, exhibited in numerous galleries, and later *Reflection*, after a workshop with Raed Ibrahim. He has won several awards and participated in the Time of Covid Art exhibition. His home in northern Gaza was destroyed during the war, and he lost all the film materials he was working on. He currently lives in a tent in Deir al-Balah and works in producing photojournalistic reports, aspiring to return to video art despite the challenges he faces.

Ο **YAHYA ABDEL SALAM AL SHOULI**, γεννημένος στη Γάζα, σπούδασε αραβική γλώσσα και λογοτεχνία. Ξεκίνησε την καριέρα του το 2017 με μια ταινία μικρού μήκους μυθοπλασίας που κέρδισε ένα τοπικό βραβείο, και ακολούθησε ένα μικρού μήκους ντοκιμαντέρ, το *Dreams and Barriers*. Παρακολούθησε εντατική εκπαίδευση στη σκηνοθεσία και τη βιντεοτέχνη με τους Asmaa Bseiso και Mohammad Harb, η οποία τον οδήγησε στη δημιουργία ενός έργου βιντεοτέχνης με τίτλο *10 Seconds*, το οποίο εκτέθηκε σε πολλές γκαλερί, και αργότερα του *Reflection*, μετά από ένα εργαστήριο με τον Raed Ibrahim. Έχει κερδίσει πολλά βραβεία και έχει συμμετάσχει στην έκθεση τέχνης Covid. Το σπίτι του στη βόρεια Γάζα καταστράφηκε κατά τη διάρκεια του πολέμου και έχασε όλα τα υλικά για τα φιλμ στα οποία δούλευε. Αυτή τη στιγμή ζει σε μια σκηνή στο Deir al-Balah και εργάζεται στην παραγωγή φωτορεπορτάζ, φιλοδοξώντας να επιστρέψει στη βιντεοτέχνη παρά τις προκλήσεις που αντιμετωπίζει.

# YARA ZUHOD

Born in 2003, North Gaza, **YARA ZUHOD** has participated in several international group exhibitions, including the For Palestine exhibition in Turkey, as well as local exhibitions such as Art Refuge at the Ittifa Gallery using a variety of media including photography, sculpture, and ceramics. Her works predominantly feature chalk pastels. With experience in printmaking, she focuses on continuous research and development in the visual arts, highlighting scenes from daily life while attempting to reveal what is left unspoken by realistic imagery, and transforming them into provocative artworks.

Γεννημένη το 2003 στη Βόρεια Γάζα, η **YARA ZUHOD** έχει συμμετάσχει σε αρκετές διεθνείς ομαδικές εκθέσεις, συμπεριλαμβανομένης της έκθεσης For Palestine στην Τουρκία, καθώς και σε τοπικές εκθέσεις όπως η Art Refuge στην Ittifa Gallery χρησιμοποιώντας μια ποικιλία μέσων, όπως φωτογραφία, γλυπτική και κεραμικά. Τα έργα της περιλαμβάνουν κυρίως παστέλ κιμωλίας. Με εμπειρία στη χαρακτική, επικεντρώνεται στη συνεχή έρευνα και ανάπτυξη στις εικαστικές τέχνες, αναδεικνύοντας σκηνές από την καθημερινή ζωή, ενώ παράλληλα προσπαθεί να αποκαλύψει ό,τι μένει ανείπωτο από τις ρεαλιστικές εικόνες και να τα μετατρέψει σε προκλητικά έργα τέχνης.

P O E M S

F R O M

BY

IBRAHIM AL SULTAN

G A Z A

POEMS FROM GAZA  
BY IBRAHIM AL SULTAN

THE  
CIRCULAR  
WAR

The war is circular,  
Hope is thrown into the dungeons of disgrace,  
Blood flows on its streets,  
To cultivate all that is in the soul of hope and the paper of hope.

It is a sad story,  
It dreams and does not wake up except to tragedies!  
Small children are orphaned in their dreams,  
Schools lose their faces,  
Mothers search for their children  
In the presence of rubble and debris.

It is a bitter tale,  
Where war, love, and fear meet,  
It slides with difficulty in the cradle of rhymes,  
And sighs are knocked  
With four doors from right and left.

It is a distant war,  
And a tragedy awaits in the depths of time.

It is an expression of contradictions,  
Where beauty crosses the borders between art and carnage,  
And joy is compatible with all the colours of sighs,  
And hope grows between the ashes of war.

Does hope exist!



POEMS FROM GAZA  
BY IBRAHIM AL SULTAN

LOVE  
IS  
THE  
ONLY  
ONE

love is the only one that remains,  
so don't ask me about war, peace, and clouds,  
love is a simple word like light, water, and air,  
even if the times and places change,  
and dreams and sorrows turn,  
love remains,  
like the sun's decoration on the wall of clouds,  
and like the growth of the tree on the back of the sea.  
love is the thing that remains,  
so let's retire from the world together,  
and let's run,  
until the days do not erase our features,  
and we pass-by without a name or a homeland,  
until the river dries up,  
and the sky turns green,  
and the winds calm down,  
and the flower opens,  
and the sun sets,  
and the other rises,  
and we live ten years in an hour.  
let your eyes be the last city,  
that sees the horizon,  
and the sun travels with it.  
let us excuse those who come after us,  
and do not find anything but mirages.



POEMS FROM GAZA  
BY IBRAHIM AL SULTAN

# QUESTIONS

Does pain diminish the strength of the soul,  
Or is it woven in, a part of its whole?

Is being lost in midnight's deepest shade,  
A search's beginning, or a story betrayed?

Can laughter ignite stars across the sky,  
Or is it a fleeting escape from a teardrop in the eye?

In life's labyrinth, is love the guiding thread,  
Or a phantom we chase in darkness, misled?

Will tomorrow be brighter than the day we hold dear,  
Or just a fragile hope whispered in the ear?

Are we simply poems rhyming with mirage's sway,  
Or real existences breathing with time's decay?

Does mirage paint its canvases on life's sands,  
Or vanish like whispers in sun-scorched lands?

Does light carry dawn's promise in its embrace,  
Or just sunbeams falling on night's gentle face?

Are raindrops a lullaby for parched earth's plea,  
Or tears hidden in heaven's vast sympathy?

Is laughter a breeze brushing sorrow's door,  
Or an echo fading on time's endless floor?

In this puzzle of life, is the question itself,  
The answer we seek on a dusty bookshelf?  
Or what?

Does existence deserve this relentless quest,  
A dream lost in sunrise, put to the test?

POEMS FROM GAZA  
BY IBRAHIM AL SULTAN

## QUESTIONS

Does the child's laughter whisper the secret key,  
Or does nature's silence hold the melody?

Does love bloom in joy's radiant sun,  
Or echo in loss's hollow drum?

Do those silent moments deserve to exist,  
When hearts find solace and spirits resist?

In our questions, we find our replies,  
And life weaves its tapestry from inquisitive sighs.

Does dawn hold the universe's secret in its fold,  
Or just a daydream in time's grasp, growing old?

Does fog cloak mysteries as it kisses the dawn,  
Or reflect beauty, possibilities unborn?

Do those waves whisper ocean's epic poems,  
Or tell tales of resilience amidst shifting storms?

In the hush of whispers, do answers appear,  
To questions that linger in moments of fear?

Or are they mere thoughts brushing reason's ceiling,  
Falling like autumn leaves, a quest never revealing?

In this journey, do we meet meanings anew?  
Or does pain sculpt a fresco of stories brand new?

Can joy be the answer we yearn to embrace,  
Or does sorrow etch beauty on hearts in its space?

Can the touch of the beautiful be the answer we crave,  
Or is everything stripped of meaning, a desolate grave?

Is a genuine laugh a compass to joy's shore,  
Or just fleeting moments escaping life's roar?

Is suffering a gateway to understand the deep,  
Or just pages in a book we must traverse and keep?

Is the question itself an answer, or mere noise?  
In the weaving of dreams, do we find solace or choice?

Does existence deserve this agonizing chase,  
Or does the answer slip through fingers like a desert's embrace?

Does pain blossom in silence's embrace,  
Or a threshold we climb to reach heaven's grace?

Do dreams in night's hush paint themselves with dawn's hue,  
Or does darkness conceal our wishes like stars, ever few?

Can aches become music, a symphony grand,  
Composing life's poem of loss and hopeful sand?  
Or as Arthur Miller declared, is hope the greatest lie?

Does strength conquer weakness in existence's dance,  
Or is vulnerability humanity's beautiful chance?

On the path of inquiry, we gaze towards the horizon,  
Is the answer in trials, or joy's constant ignition?

POEMS FROM GAZA  
BY IBRAHIM AL SULTAN

## QUESTIONS

Is life just dreams we seek to attain,  
Or a journey of learning, evolving from pain?

Is failure the story's end, a curtain lowered,  
Or a new chapter in our own epic empowered?

Does willpower reside in enduring the blows,  
Or accepting what cannot be changed, where the river flows?

Does happiness lie in moments simple and true,  
Or achieving big goals, ambitions pursued?  
Is there happiness ever?

In this universe intricate, does the search for reply,  
Give life meaning, or does the answer lie  
In the present moment, a fleeting kiss?

Does existence deserve all these questions we raise,  
Or is it in finding the beauty of the question's daze?

But does existence deserve all this suffering's weight?



POEMS FROM GAZA  
BY **IBRAHIM AL SULTAN**

SEEING  
BUT  
UNSEEN

The earth closed its lips over what was on it  
So it no longer cares about what happens on it now  
Those who are on it call out for water, water, water  
Without listening ears  
The echo groans, alone, alone, alone



POEMS FROM GAZA  
BY IBRAHIM AL SULTAN

THE  
EARTH  
WAS  
A  
HOMELAND

The land we lived and loved,  
Today reveals a state of pain,  
A land that was once a homeland,  
Now its joy has been stolen, and its spirit has been betrayed.

The beauty that once adorned its skies,  
Is now covered by clouds of endless sorrow,  
Our dreams, like stars, have faded away,  
In this land that is drenched in blood and pain.

O my homeland, cursed and treacherous,  
Our hopes drowned in you in tears of goodbye and loss,  
Our hearts are bound by chains of pain,  
Freedom and hope have left our gates.

Spirits that once flew free,  
Have become tainted with despair and pain,  
Laughter that once filled the air with joy,  
Now, where has it gone?

Our voices are being silenced,  
And our rights are being stolen,  
In the darkness,  
Truth hides,  
Our souls are broken,  
Our dreams are stolen,  
A broken nation that cannot heal its wounds.

But in the darkest of the darkest night,  
A spark of hope still burns inside us,  
A flame that yearns for revolution to seize freedom,  
To rise above, to rise again.  
To be reborn

POEMS FROM GAZA  
BY **IBRAHIM AL SULTAN**

THE EARTH WAS A  
HOMELAND

We curse the land that causes us pain,  
But deep within us, we carry the fire,  
To rebuild, to rise above, to heal the wounds, to lift us higher.

Even in the darkness of this bitter moment,  
Our love for you will not fade,  
In every heart, hope hangs,  
That we will find a better and brighter day.

So let us curse the land that brings us sorrow,  
But let us embrace the love that keeps us strong,  
In unity, we will heal the wounds, and we will regain  
the anthem of our homeland.



GAZZA

BIENNALE  
THE GREEK PAVILION

*Curated by*

FAYE TZANETOULAKOU

DIMITRIS SARAFIANOS

## THANKS

Akis Batzianas. *For the design of the catalogue*

Anna Routsis. *For the communication*

Dimitris Sdralis. *For the printing of the works*

Babis Venetopoulos. *For the provision of electronic equipment*

Lamis Shawwa. *For the translations of the editorial texts into Arabic*

The UK Jinnah. *For the delivery of Sohail Salem Diary*

The Danish Pavilion. *For their contribution of artistic materials*

Rula Dughman. *For contacts with artists*

Dounias. *For the film screenings courtesy of the Athens Palestine Film Festival*

The Gaza Biennale Team. *For everything!*



We thank the speakers of the conferences and round tables:

MaryAnn Jaraisy

Lamis Shawwa

Kostas Manolidis

Nasim Alatras

Christina Phoebe from the Cultural Network for Palestine in Greece

Forensic Architecture

The contributors of the Turkish Pavilion

The Greek Journalists' Network for Palestine

Abubaker Abed

Angela Dimitrakaki

Eleni Trova

Zeina Jallad

The contributors of the documentary 48/ Resisting the Big Settlement

Artists of the Gaza Biennale



A special thanks to all the artists of Gaza  
who create despite the Occupation, for Freedom

Free Palestine!

## ΕΥΧΑΡΙΣΤΗΡΙΑ

Τον Άκι Μπατζιάνα. *Για τη σχεδίαση του καταλόγου*

Την Άννα Ρούτση. *Για την επικοινωνία*

Τον Δημήτρη Σδράλη. *Για τις εκτυπώσεις των έργων*

Τον Μπάμπη Βενετόπουλο. *Για την παροχή ηλεκτρονικού εξοπλισμού*

Τη Lamis Shawwa. *Για τις μεταφράσεις των επιμελητικών κειμένων στα αραβικά*

The UK Jinnah. *Για την παράδοση του Ημερολογίου του Sohail Salem*

The Danish Pavilion. *Για την προσφορά τους σε καλλιτεχνικά υλικά*

Τη Rula Dughman. *Για επαφές με καλλιτέχνες*

Τον Dounias. *Για τις προβολές του Athens Palestine Film Festival*

The Gaza Biennale Team. *Για όλα!*



Ευχαριστούμε τους ομιλητές των ημερίδων:

Τη MaryAnn Jaraisy

Τη Lamis Shawwa

Τον Κώστα Μανωλίδη

Τον Nasim Alatras

Τη Χριστίνα Φοίβη από το Cultural Network for Palestine in Greece

Τους Forensic Architecture

Τους συντελεστές του Turkish Pavilion

Το Ελληνικό Δίκτυο Δημοσιογράφων για την Παλαιστίνη

Τον Abubaker Abed

Την Άντζελα Δημητρακάκη

Την Ελένη Τροβά

Τη Zeina Jallad

Τους συντελεστές του ντοκιμαντέρ 48/ Resisting the Big Settlement

Τους καλλιτέχνες της Μπιενάλε της Γάζας



Ένα τεράστιο ευχαριστώ στους καλλιτέχνες της Γάζας  
που δημιουργούν κόντρα στην Κατοχή, για την Ελευθερία

Ελευθερη Παλαιστίνη!

IN THE LINE OF FIRE    Duration  
MIRACLES AMIDST RUINS.    18/09/2025 - 04/11/2025  
Velvendou 39, Kypseli  
Tue – Sun, 18:00-21:00

T H E   G R E E K   P A V I L I O N





**IN THE LINE OF FIRE  
MIRACLES AMIDST RUINS**

ISBN 978-618-86974-3